सितम्बर 2008 ■ Rs.15/-

चन्दामामा

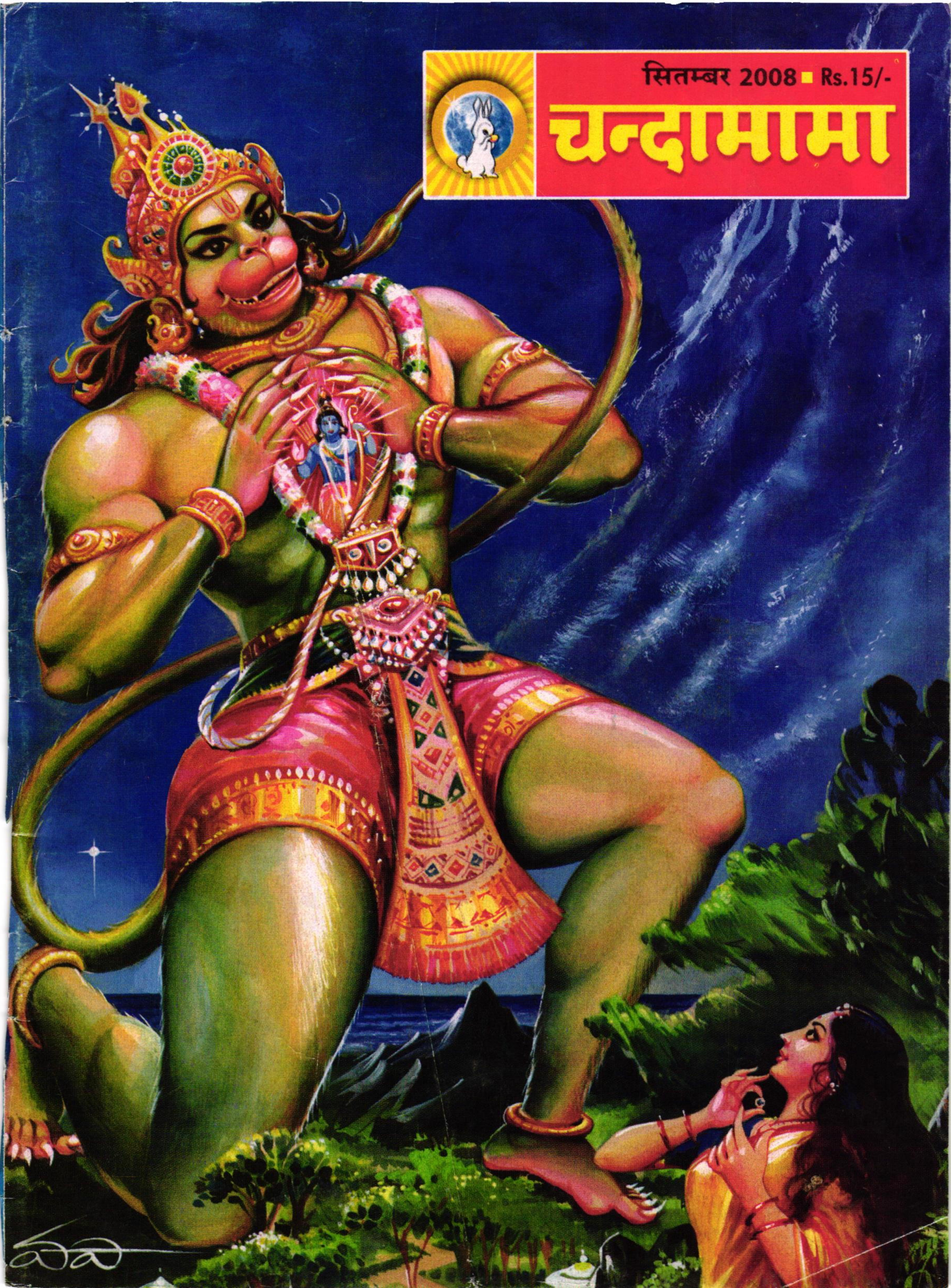

तरल सोना

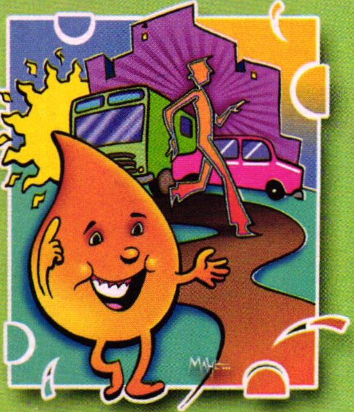

मेरा नाम पेट्रोल है और डिज़ल मेरा भाई है। हम दोनों की जोड़ी सर्वाधिक वांछनीय है। एल.पी.जी हमलोगों का सबसे छोटा भाई है, वह भी कुछ दिनों से बहुत प्रगति पर है। कच्चा तेल हम लोगों की माँ है और आज प्राकृतिक रूप से उपलब्ध होनेवाली सर्वाधिक महँगी तरल वस्तु है। इसलिए उसे ''तरल सोने'' का उपनाम दिया गया है। चीन और भारत के द्रुत विकास के साथ-साथ तथा अन्य देशों से निरन्तर माँग के कारण मेरी माँ की माँग बहुत बढ़ गई है। सीमित स्रोतों के कारण उसका मूल्य आसमान छू रहा है और प्रति बैरल ११८ डॉलर के आस-पास मँडरा रहा है।

जो भी हो, मैं इस परिस्थिति से प्रसन्न नहीं हूँ। विकासशील देशों पर, खास तौर पर भारत पर ऊँची कीमतों के प्रभाव से मैं अत्यन्त चिन्तित हूँ। क्योंकि भारत को अपनी ऊर्जा की अधिकांश आवश्यकताओं के लिए विदेशी कच्चे तेल पर निर्भर करना पड़ता है। फिर भी, मैं देखता हूँ कि भारत सरकार द्वारा लिये गये कदम काफी उत्साहवर्धक हैं। सबसे पहले, पेट्रोलियम उत्पादनों की सहायता प्राप्त कीमतों द्वारा आर्थिक सहायता देकर, इसने आम जनता की, जिनकी औसत आय बहुत कम है, रक्षा की है। दूसरे, सरकार ने समझ लिया है कि ऊँची कीमतों के प्रभाव तथा अनुवर्ती संरक्षण-उपाय का सन्देश आम जनता तक पहुँचना चाहिये। इसलिए उसने पेट्रोलियम कनजर्वेशन रिसर्च एसोसियेशन (पी.सी.आर.ए.) का संगठन किया है, जो पेट्रोलियम उत्पादनों के संरक्षण तथा इन्धन दक्षता में सुधार के विषय में आम जनता में बड़े प्रभावशाली ढंग से जागरुकता पैदा कर रहा है।

प्रत्येक व्यक्ति से मेरा विनम्र निवेदन है कि वह पी. सी. आर. ए. द्वारा प्रस्तुत सरल उपायों का पालन करे। गृहिणियाँ प्रेशर कूकर तथा चौड़े-उथले बर्तनों का प्रयोग कर गैस बचा सकती हैं। कारों के मालिक ४५-५० कि.मी. प्रति घंटे की गति से वाहन चला सकते हैं और कार-पूल्स विधि अपना सकते हैं। साइकिल चलाना और पैदल चलना जैसी भूली-बिसरी कला को हम पुनर्जीवित कर सकते हैं। सरल दीखनेवाली ये चीजें सामूहिक रूप से करने पर बड़े परिणाम ला सकते हैं।

यदि लोग आने-जाने के लिए निजी वाहनों के बदले पब्लिक ट्रांसपोर्ट का उपयोग करें तो हमारी खपत बहुत कम हो जायेगी। यदि नगरों में तेज चलनेवाले परिवहनों की काफी मात्रा में व्यवस्था की जाये, जिसका प्रबन्ध सरकार ने आरम्भ कर दिया है, तो इसे प्रभावशाली ढंग से पूरा किया जा सकता है। सरकार वैकल्पिक ऊर्जा स्रोतों को सक्रिय रूप से बढ़ावा दे रही है, जैसे पवन और सौर ऊर्जा; जिससे पेट्रोलियम उत्पादनों की खपत में कमी आयेगी। हमें ऐसा करने में कोई आपत्ति नहीं है, क्योंकि अन्ततः, जो राष्ट्र के हित में अच्छा है, वह हमारे हित में अच्छा है। आशा है, उन भावनाओं में आप हमारे साथ हैं।

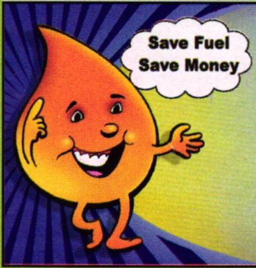

Dear Children,
Would you like to know more about conservation of Petroleum Products? Please write for free literature to PCRA at the address, given alongside.

Name..

Age..............................Class..........

Address.......................................

....

e-mail...

MINISTRY OF PETROLEUM AND NATURAL GAS
Shastri Bhawan, New Delhi

PCRA PETROLEUM CONSERVATION RESEARCH ASSOCIATION
Sanrakshan Bhawan, 10, Bhikaiji Cama Place, New Delhi 110066.
E-mail : pcra@pcra.org

Get India's Most Loved Magazine for Children at your doorstep

Subscribe to *Chandamama*

चन्दामामा

చందమామ

ಚಂದಮಾಮ

चांदोबा

चन्दमामा

அம்புலிமாமா

ଜହ୍ନ ମାମୁ

চান্দমামা

ચાંદામામા

CHANDAMAMA

Junior Chandamama

Chandamama stories explore our traditions, folk tales, mythology, history and science in an unforgettable narrative style which captures your child's imagination. Generations of children have grown up reading *Chandamama* in their native language. Subscribe today and let your child's quest for knowledge stay alive forever.

I want to subscribe to the following editions of Chandamama: (Tick whatever applies)

☐ **English** ☐ **Language**.. ☐ **Junior Chandamama**

My Name .... Date of Birth ....

Send my issues to: Mr/Ms...

Address ....

....

....

City.................................... State .... Pin ....

Telephone.............................. Mobile .... Email ....

Enclosed Cheque/DD* for Rupees...

Cheque/DD no...Favouring **Chandamama India Ltd**

on .... bank. (Send At-par cheques or add Rs. 60 for non-Chennai cheques) Your subscription will start in 4 weeks.

Please mail the subscribtion form to :

Chandamama India Limited, JVL Plaza, 6th Floor, 626 (Old 501) Anna Salai Teynampet, Chennai – 600 018.

Tel: (044) 24334455 Telefax: 24322103 Email: chandamama@chandamama.com Web: www.chandamama.com

*Language/edition for one year is Rs. 180. Only English: Rs. 180 for 1 year. English + any language: Rs. 360 for 1 year. English Chandamama + Junior: Rs. 360 for 1 year. English Chandamama + Junior + any language: Rs. 540 for 1 year.

*Conditions apply.

चन्दामामा सम्पुट-५९ सितम्बर २००८ सञ्चिका-९

विशेष आकर्षण

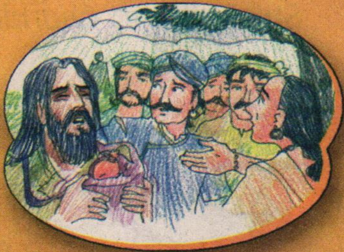

चिरुनाथ का दान (वेताल कथाएँ) ...१९

कर्नाटक की एक लोक कथा ...४१

चिरस्मरणीय ऐतिहासिक घटनाएँ-१२ ...४६

रामायण (सुन्दर काण्ड-४) ...५७

अंतरंग

* पाठकों का पन्ना ...०६
* आधा सच ...०७
* हाथी-सा एक भारी सवाल ...१०
* पाताल दुर्ग-२ ...१३
* भारत दर्शक ...२५
* पौराणिक युवा नायक-४ ...२६
* समाचार झलक ...३०
* कहानी, जो मुझे सबसे अधिक पसन्द थी-१५ ...३०
* भारत दर्शक ...३३
* महान पुरुषों के जीवन की झाँकियाँ-३३ ...३४
* बीरबल की कहानियाँ-१३ ...३६
* ओलम्पिक्स में भारत ...४६
* अपने संस्थापक का स्मरण ...४८
* जातक कथा ...५३
* दीवार ...६३
* भारत के धरोहर स्थल ...६६
* प्रमोद-सरला ...६७
* चन्दामामा प्रश्नोत्तरी-८ ...७१
* बच्चे अखबार की सुर्खियों में ...७२
* चित्र कैप्शन प्रतियोगिता ...७४

संस्थापक
बी. नागि रेड्डी
और चक्रपाणि

अमर वाणी

प्रिय वचन सुनानेवाले अनेक होते हैं, परंतु अप्रिय वचन सुनने-सुनानेवालों का मिलना कठिन है।

दुख के बाद प्राप्त होनेवाला सुख आनन्ददायक होता है। जो धूप में तप्त होता है, उसे ही पेड़ की छाया के सुख के आनन्द का अनुभव होता है।

चिन्तन के लिए ''आहार''

सामान्य दिनों में, बच्चों को स्कूल में कम से कम छः घण्टों तक रुकना पड़ता है। यह आम तौर पर देखा जाता है कि मध्य वर्गीय परिवारों के बच्चे अपने भारी बस्तों के साथ-साथ लंच बॉक्स और पानी की बोतलें भी ढो कर लाते हैं। किन्तु, जहाँ तक निम्न मध्य वर्गीय तथा गरीबी रेखा के नीचे के परिवारों का सम्बन्ध है, उनके बच्चे आधे-भूखे पेट स्कूल चले जाते हैं अथवा बिलकुल नहीं जाते।

भारत में इस समस्या के समाधान के प्रयास के रूप में सरकारी तथा नगर पालिका संचालित स्कूलों में अधिकारियों ने मध्याह्न भोजन परियोजना आरम्भ की थी। सरकारी मध्याह्न भोजन-केन्द्रों में प्रायः प्रश्न उठाये जाते थे कि क्या बच्चों को पर्याप्त मात्रा में भोजन दिया जाता है, क्या भोजन पौष्टिक होता है तथा भोजन पकाने के पूर्व व पकाते समय क्या समुचित सफाई का ध्यान रखा जाता है।

मध्याह्न भोजन परियोजना चलती रही और इससे भारत में १३ करोड़ बच्चे लाभान्वित हुए। इसका सबसे अधिक प्रभाव यह पड़ा कि अधिक संख्या में बच्चे स्कूल जाने लगे और स्कूल छोड़कर जानेवाले बच्चों की संख्या बहुत कम हो गई।

यह शुभ संकेत है कि गैर सरकारी संस्थाएँ वैसी ही योजनाएँ आरम्भ करने के लिए सामने आ रहे हैं। अक्षय पात्र फाउण्डेशन ने बंगलोर में पौष्टिक भोजन तैयार कर स्कूलों में पहुँचाने के लिए आधुनिक सुविधाओं से लैस एक रसोई घर की स्थापना की है। बंगलोर, हुबली, बरन तथा वृन्दावन से प्राप्त रिपोर्ट के अनुसार, स्वच्छ और पौष्टिक भोजन बनाने में सर्वोत्तम सावधानी के कारण, बच्चे स्वस्थ हो गये हैं और कक्षाओं में उनकी उपस्थिति तथा उनके प्रदर्शन में बहुत सुधार हुआ है।

यह समय है जब सरकार इस क्षेत्र में गैरसरकारी संस्थाओं की सफलता को ध्यान में रखे तथा ऐसी गैर सरकरी संस्थाओं को निधि मुहैया करने पर विचार करे जिससे वे स्कूलों के लिए पौष्टिक तथा स्वास्थ्यवर्धक भोजन तैयार करने के वास्ते केन्द्रित भोजनालय चलाने की चुनौती ले सकें, चाहे उसे मध्याह्न भोजन योजना कोष का एक अंश इसके लिए अपवर्तित क्यों न करना पड़े।

सम्पादक : विश्वम

Visit us at : http://www.chandamama.com

चन्दामामा

Editor, Publisher : B. Viswanatha Reddi (Viswam)
Chief Executive Officer : L. Subramanyan
Editorial Advisors : Ruskin Bond, Manoj Das
Consultant Editor : K. Ramakrishnan
Senior Artists: K.C. Sivasankaran (Sankar), Gandhi Ayya, P. Mahesh
Artist : Jayapandian
Assistant Editor : R. Sudha
Creative Writer : R. Vaasugi
Layout Designer : B.A. Hemalata Malini
CIRCULATION TEAM :
Chennai : T N Ravi Shankar, National Sales Manager
Mobile +91 99620 70014
email : ravishankar.tn@chandamama.com
Fazal Khan, Manager-Circulation & Institutional Sales
Mobile +91 99625 67860
email : fazal.khan@chandamama.com
Mumbai : Rajendra K Jadhav, Asst. Manager - Circulation
Mobile +91 9271720669
CHANDAMAMA INDIA LTD., B-3, Lunic Industry
Opp. State Bank of India, Near Police Station Cross Road
No.6, MIDC Andheri (East), Mumbai-400093
Phone +91 22 28312872 / 28311849
email : rajendra.jadhav@chandamama.com
New Delhi : Sushil Sharma, Circulation Manager-North
Mobile +91 98719 30767
CHANDAMAMA INDIA LTD., Goyal Business Centre,
C-23/2 First floor, Connaught Place, New Delhi-110001
Bangalore : P. Murali, Asst. Circulation Manager -Karnataka
Mobile +91 94488 36952
CHANDAMAMA INDIA LTD., 18, 10th Cross, Mayura Street
Papanna Lay Out, Outer Ring Road, RMV 2nd Stage
Bangalore-560094, Phone +91 80 6655 1000
email:murali.p@chandamama.com
Kolkata : Ananth Prakash, Circulation Manager-East
Mobile +91 98362 82202
email : ananth.prakash@chandamama.com
Advertisement : email : sales@chandamama.com
Business Dev and Online : Surajit Agarwal
email : surajit@chandamama.com
Subscription Queries: L Govindasamy
e-mail : govindaswamy.l@chandamama.com
Customer Cell : A B Sairam Mobile: +91 9841983774
e-mail : sairam.ab@chandamama.com
Head Office : CHANDAMAMA INDIA LTD.,
JVL Plaza, Block-A, 6th Floor, 626, Anna Salai, Teynampet
CHENNAI-600018, Phone +91 44 2432 2101/02,
Fax +91 44 2432 2103
email : chandamama@chandamama.com
Website : www.chandamama.com

शुल्क:

भारत में बुक पोस्ट द्वारा बारह अंक १८० रुपये। अपनी रकम डिमांड ड्राफ्ट या मनी-ऑर्डर द्वारा **'चंदामामा इंडिया लिमिटेड'** के नाम भेजें।

पाठकों का पन्ना

मेरी उम्र २६ साल है, अकाउन्टेन्ट की नौकरी करता हूँ। कम्प्यूटर पर दफ्तर में काम करने के बाद घर आकर *चन्दामामा* पढ़ कर ताज़गी और आनंद पाता हूँ। सचमुच *चन्दामामा* देश की सर्वश्रेष्ठ बालपत्रिका है। न सिर्फ साफ-सुथरी, भव्य और रंग-भरा है, बल्कि उसकी कहानियों में नयापन, बोध, ज्ञान, और मनोरंजन भी भरपूर है। साथ में प्रतियोगिताएँ द्वारा धन कमाने का भी लाभ। *चन्दामामा* देश की प्रमुख भाषाओं में प्रकट होकर भाषा की और राष्ट्र की एकता बनाये रखने में मददगार बनती है! भाषा सीधी-सरल है, जिसे कम पढ़ा पाठक भी आसानी से पढ़ लेता है। इसीलिए यह पत्रिका बालक, जवान, वृद्ध और मजदूर से लेकर मैनेजर तक सब पढ़ते हैं। ऐसी पत्रिका का प्रकट होना देश के लिये गौरव की बात है। जिस तरह प्रेमियों को आकाश में रात को *चन्दामामा* का इंतजार रहता है, उसी प्रकार नया महीना शुरू होते ही पाठकों को *चन्दामामा* (पत्रिका) का इंतजार करना शुरू हो जाता है। जब तक देश में चन्दामामा है मुझे तो हैरी पोर्टर की कहानियाँ पढ़ने की ज़रूरत नहीं पड़ेगी।

- प्रितेश अमृत पटेल, वलसाड

मैं बाल्यावस्था से *चन्दामामा* को नियमित रूप से पढ़ता चला आ रहा हूँ। मेरे बच्चे भी बड़े चाव से इसे पढ़ते हैं। आप इसमें देश-विदेश के धार्मिक, पौराणिक, ऐतिहासिक, प्रेरणादायक तथा शिक्षाप्रद कहानियाँ जो देते हैं, वे पाठकों को एक नई दिशा देती हैं।

चन्दामामा के प्रत्येक शब्द में अद्‌भुत जादू है। एक-एक अक्षर में वह तत्व भरा है जो अमृत के समान है। जिसे जितनी बार पढ़ोगे, उतना ही लाभ मिलेगा। हमारे परिवार के सभी सदस्य इस पत्रिका को रुचि व शौक से पढ़ते हैं। एक भला तथा सच्चा इन्सान बनने में *चन्दामामा* हर रूप से सहायक है। ***- कृष्णकुमार जायसवाल, बस्ती***

© The stories, articles and designs contained in this issue are the exclusive property of the Publishers. Copying or adapting them in any manner/ medium will be dealt with according to law.

आधा सच

पुनीत गरीब किसान था, पर उसकी अक़्लमंदी और समय बोध की प्रशंसा गाँव के सब लोग करते थे। एक दिन अचानक ज़ोर की बारिश हुई। पुनीत का घर पानी से भर गया। चूँकि फ़ौरन ही घर की मरम्मत कराने की शक्ति उसमें नहीं थी, इसलिए उसने घर में रखे मुख्य दस्तावेज़ों और बच्चों की जन्म कुंडलियों को एक गठरी में रखकर बाँध दिया और पड़ोसी भूस्वामी चौहान को सौंपकर कहा, ''इन्हें अपने घर में सुरक्षित रख दीजिये। घर की मरम्मत कराने के बाद मैं आपसे ले लूँगा।''

कुछ दिनों के बाद बेटी की शादी का रिश्ता माँगते हुए एक व्यक्ति आया। किन्तु उसने शर्त रखी कि वधू की जन्म कुंडली को देखने के बाद ही यह तय करेगा कि यह शादी हो सकती है या नहीं। जन्म कुंडली ले आने के लिए पुनीत, चौहान के घर गया। उस समय चौहान के घर में गड़बड़ी मची हुई थी। वह अपने पोते के खिलौनों के लिए दूसरी पेटी खोलनी चाही, पर वह खुल नहीं रही थी, क्योंकि चाभी सुराख में अटक गयी थी। सबने कोशिश की, पर कोई फ़ायदा नहीं हुआ।

पेटी खोलनी हो तो बढ़ई की ज़रूरत है। बढ़ई चाहिये तो पड़ोस के गाँव में जाना होगा। बढ़ई को बुलाने जाने में समय लगेगा। फिर वह घर पर होगा या नहीं। पैसे कितने लेगा? घर वाले इन सब कठिनाइयों के बारे में सोच रहे थे। पुनीत ने जैसे ही वे कागज़ात माँगे तब चौहान की पत्नी ने पति को अलग ले जाकर धीमे स्वर में कहा, ''चाभी ठीक करनेवालों के बारे में पुनीत को पूरी जानकारी है। उससे कहना कि जिस पेटी में उसके कागज़ात हैं, वह चाभी खराब हो गयी। चूँकि ज़रूरत उसकी है, इसलिए चाभी ठीक करने का वही कोई उपाय ढूँढ़ेगा।'' चौहान को पत्नी का

रामलक्ष्मी

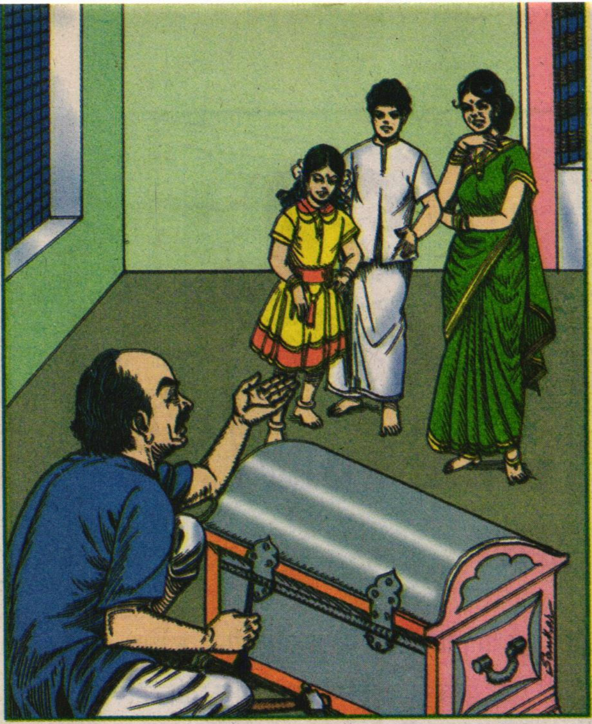

उपाय सही लगा। यही बात उसने पुनीत से भी कही। पुनीत ने कहा, ''मैं नहीं समझता कि ज़रूरी कागज़ातों को उस पेटी में सुरक्षित रखोगे, जिसमें बच्चों के खिलौने हों। दूसरी पेटी खोलकर देखना। शायद उसमें ये काग़जात हों।''

चौहान ने साफ़-साफ़ इनकार कर दिया। फिर भी पुनीत को विश्वास नहीं हुआ। उसे सन्देह था कि उसके काग़जात दूसरी पेटी में ही होंगे, खिलौनों की पेटी में नहीं। फिर भी पुनीत ने थोड़ी देर तक सोचा और कहा, ''सिद्धनाथ गाँव में नया-नया आया हुआ है। मेरे पड़ोसी ने कहा था कि वह चाभियों को ठीक कर सकता है। मेरे पड़ोसी ने यह भी कहा, वह कठोर स्वभाव का है, पर काम अच्छी तरह से जानता है। तुम्हें कोई एतराज न हो तो तुम उसे बुला सकते हो।''

चौहान ने सिद्धनाथ को बुलवाया। उसने चाभी के बारे में उससे बताया। इतने में पुनीत ने कहा, ''एक बार उस पेटी में भी देखना, जो ठीक है। मेरा भाग्य अच्छा रहा तो हो सकता है, मेरे काग़ज़ात उसमें मिल जाएँ।''

तब तक सिद्धनाथ ने काम शुरू कर दिया। चौहान ने सोचा कि खिलौनों की पेटी खुल जाने पर काग़ज़ात नहीं मिले तो दूसरी पेटी तो मजबूरन खोलनी ही पड़ेगी। अच्छा है, पहले ही खोल दें। उसकी बात भी रह जायेगी। संतुष्ट चौहान ने बड़ी पेटी खोली। उसमें काग़ज़ातों को ढूँढ़ने का नाटक किया और उसके काग़ज़ातों को पुनीत को सौंपते हुए कहा, ''तुम्हारे काग़ज़ात सचमुच इसी पेटी में मिल गये। मुझे लग रहा था कि मैंने दूसरी पेटी में, जिसकी चाभी अटक गई है, तुम्हारे काग़ज़ात रखे हैं। जैसा तुमने कहा था, तुम सचमुच भाग्यवान हो। ये काग़ज़ात लो और अपना काम करो।''

पुनीत खुश होकर अपने कागजात के साथ चला गया। पति-पत्नी ने जैसा सोचा था कि पुनीत बढ़ई को बुला कर ले आयेगा, वैसा नहीं हुआ। फिर भी उन्हें इस बात का सन्तोष था कि उसी की सलाह परसिद्धनाथ काम पर लग गया है।

पुनीत के चले जाने के बाद सिद्धनाथ ने घर के लोगों को बहुत तंग किया। वे परेशान हो उठे। वह कभी हथौड़ा माँगता है तो कभी बड़ा पत्थर। बीच-बीच में पानी माँगता है। इसके बाद चाभी को मरोड़ने के लिए सबको गाली देने लगता है।

शाम तक वह वहीं रहा और अंत में कहा, ''मैंने दिन भर कोशिश की, पर कोई फ़ायदा नहीं हुआ। कल छेनी हथौड़ी मँगवाइये। पेटी को तोड़ देंगे।''

इसके बाद उस समय पुनीत एक आदमी को वहाँ ले आया और चौहान के घरवालों को मिठाइयाँ देते हुए कहा, ''चूँकि मेरे काग़ज़ात दूसरी पेटी में थे, इसलिए आज मेरी बेटी की शादी पक्की हो गयी। इसका पूरा श्रेय आप ही को मिलता है।'' यों उसने चौहान की प्रशंसा की।

''तुम्हारा काम तो हो गया। तुम्हारे कहे मुताबिक हमने सिद्धनाथ को बुलाया, पर वह पूरे दिन हमें सताता रहा, गालियाँ देता रहा, फिर भी काम तो नहीं हुआ।'' कठोर स्वर में चौहान ने कहा।

पुनीत ने माफ़ी माँगते हुए कहा, ''अपने साथ एक बढ़ई को ले आया हूँ।''

वह बढ़ई अंदर गया और देखते-देखते उसने चाभी ठीक कर दी। पुनीत ने चौहान से कहा, ''अच्छा हुआ, फल अच्छा निकला। अब सिद्धनाथ को बुलाने की कोई ज़रूरत नहीं है।''

''इसका यह मतलब हुआ कि तुम अच्छी तरह से जानते थे कि सिद्धनाथ से काम नहीं होगा, इसीलिए इस आदमी को अपने साथ ले आये।'' चौहान ने कहा।

पुनीत ने हँसते हुए कहा, ''ऐसी कोई बात नहीं है चौहान। पहली बात तो यह है कि सिद्धनाथ को ले आने के बाद ही मेरे काग़ज़ात दूसरी पेटी में पाये गये। जब तुम्हें सन्तोष हो गया कि अब तो खिलौनों की पेटी खुल जायेगी, तभी तुमने दूसरी पेटी खोलकर देखी। उन्हें लेकर पड़ोस के गाँव में ज्योतिषी के पास जाते हुए मुझे याद आया। मुझे मालूम था कि मेरा पड़ोसी भी आधा सच बोलने का आदी है। उसने एक तो यह कहा कि सिद्धनाथ कठोर स्वभाव का है, फिर यह भी कहा कि काम जानता है। मुझे लगा कि इन दोनों में से कोई एक बात सच होगी। फिर सिद्धनाथ के काम करने के ढंग से पता लग गया कि वह बढ़ई नहीं है। हो सकता है उससे पेटी न खुले। अतः इसीलिए मैं वहीं से एक बढ़ई को भी ले आया।''

चौहान ने भांप लिया कि पुनीत झूठ कह रहा है, यह जानकर पुनीत चुप रह गया।

हाथी-सा भारी एक सवाल?

उस दिन सुबह महाराष्ट्र के पुणे में लकाकी झील पर एक असामान्य चहल-पहल थी। यह लोकप्रिय गणेश पूजा का अन्तिम दिन था, जब लोग गणेश की प्रतिमाएँ विसर्जन के लिए ले जाते हैं। हजारों परिवार नगर में से प्रवाहित होनेवाली मुल्ला तथा मुथा नदियों की ओर जाने लगते हैं। लकाकी झील को, जो पत्थर-उत्खनन के फलस्वरूप बन गई थी, पिछले एक दशक से प्रतिमा विसर्जन के लिए लोग सुविधाजनक स्थल मानने लग गये थे।

स्कूल यूनिफॉर्म में ३० से अधिक बच्चे एक वृत में बैठ कर अपनी रणनीति को अन्तिम रूप दे रहे थे। कमला ने उस साल अपने स्कूल के ग्रीन क्लब की प्रधान होने के कारण अगुआनी की। उसने उन बच्चों के नामों तथा दायित्वों की सूची पढ़ कर सुनाई जो पिछली बैठक में निभाने को तैयार हो गये थे। एक दूसरी सूची में प्रदर्शन के लिए जरूरत की "चीजों" के नाम थे- तीन बड़ी बाल्टियाँ, कुछ पुआल की चटाइयाँ, एक रजिस्टर तथा कलम।

जब ग्रीन क्लब के सदस्य अलग-अलग दिशाओं में फैल गये, कमला ने झील की ओर देखा। उसकी नजर झील के एक आखिरी कोने में सरकण्डों के बीच स्पॉट-बिल्ड डक्स के एक परिवार पर पड़ी। प्रातःकाल की नीरवता प्रायः पानी पर उड़ते समय व्हाइट ब्रेस्टेड किंग फिशर की ऊँची आवाजों से भंग हो जाती थी। आज बच्चों के उत्तेजित शोरगुल तथा उनके पदचापों के धब-धब में उनकी आवाज खो गई।

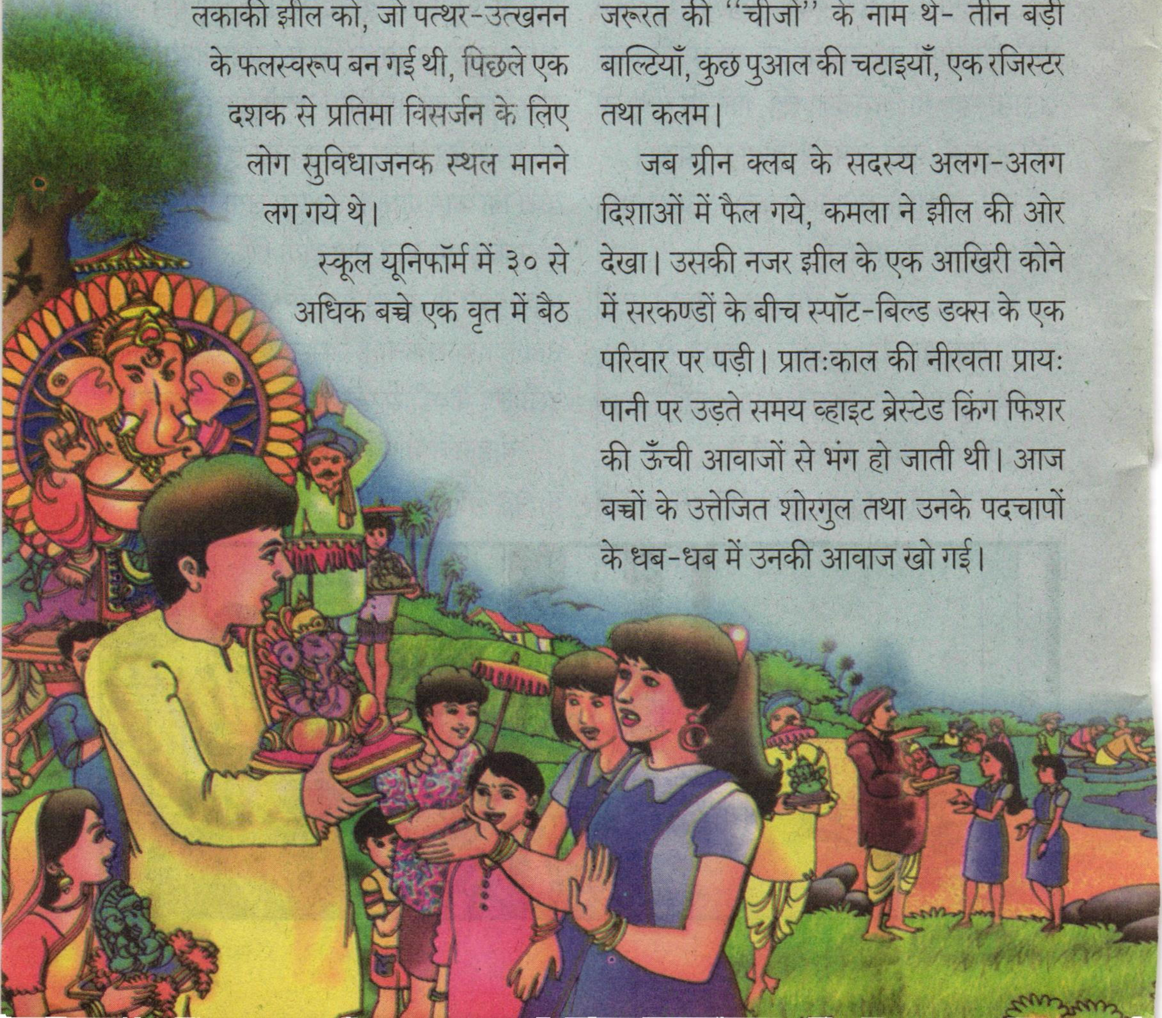

उनके स्कूल का ''ग्रीन ऑडिट'' किया गया था जिससे यह पता चले कि वे कितने पर्यावरण प्रेमी हैं। सोमवार की प्रातः असेम्बली में पूरे स्कूल के साथ अपने जाँच-परिणाम को बाँटना बड़ा रोमांचकारी था। इसके कारण तुरन्त कुछ कार्रवाई करने की जरूरत पड़ी। उनके खेल के मैदानों से बुहारे गये पत्तों को कम्पोस्ट करने के लिए एक गड्ढा खोदा गया। सत्र के अन्त में नोट बुक्स में खाली बचे पन्नों को पैड्स बनाने के लिए एकत्र किया गया तथा इस्तेमाल किये गये लिफाफों को अन्दर से उलट दिया गया जिन्हें ऑफिस स्टाफ फिर से उपयोग में ला सकें।

सबसे रोमांचकारी वह क्षण था जब बच्चों ने टेट्रापैक्स में बिकनेवाले सभी सॉफ्ट ड्रिंक्स का बहिष्कार करने का निश्चय किया। जब उन्हें पता चला कि ऐसी पैकिंग में न केवल अधिक खर्च होता है बल्कि पर्यावरण को इससे हानि पहुँचती है, क्योंकि इसमें आलुमिनियम का स्तर दिया रहता है जो नष्ट नहीं होता।

''हे लोटस, दिवा स्वप्न न देखो!'' दर्शिनी चीखी। वह कमला की स्कूल की सबसे अच्छी सहेलियों में से एक थी। उन सबने कमला का अंग्रेजी में लोटस नाम इसलिए दे दिया था, क्योंकि वह ग्रीन सम्बन्धी समस्याओं में अधिक रुचि लेने गई थी। ''ओह, सौरी!'' कमला झील के प्रवेश द्वार पर अपना स्थान ग्रहण करने के लिए दौड़ पड़ी, जहाँ कुछ सदस्य एक वृक्ष की दो शाखाओं के बीच कपड़े का बैनर बाँध रहे थे। बैनर में सख्त शब्दों में लिखा था, ''हमारी झील को दूषित न करो...हमलोग भी जिन्दा रहना चाहते हैं!'' इस सन्देश के चारों ओर मछलियों, मेंढकों तथा कुछ जल परिन्दों जैसे-स्पॉट-बिल्ड डक्स तथा किंग फिशर के रेखा चित्र बने थे।

शीघ्र ही, ग्रूप में उत्तेजना पूर्व बड़बड़ाहट शुरू हो गई। सब की आँखें उस पगडंडी की ओर मुड़ गईं जो झील के प्रवेश मार्ग की ओर जाती थी। कुछ लोग उस पर मंत्रोच्चारण और प्रार्थना करते हुए आगे बढ़ रहे थे। चार व्यक्ति गणेश की एक बड़ी प्रतिमा ढोते हुए उनके पीछे थे। कमला के पास खड़ी शिबानी थी, उसे टहोका देती वह फुसफुसाई, ''यह दिन का पहला है। शायद हमलोग किस्मतवाले हैं!''

जब प्रतिमा के साथ आनेवाले प्रवेश मार्ग पर आये तब कमला आगे बढ़ी, ''हमलोग केन्द्रीय विद्यालय के ग्रीन क्लब के सदस्य हैं। हमलोग आप से अनुरोध करते हैं कि आप अपनी प्रतिमा को इस झील में विसर्जित न करें।'' फिर अन्य सदस्यों ने भी अपने-अपने संवाद जोड़े।

एक ने कहा, ''प्रतिमा पर के रंग विषैले होते हैं और ये पानी को जहरीला बना देते हैं।''

''गणेश पूजा कभी अनेक परिवारों द्वारा

सामुदायिक रूप से मनाई जाती थी। परन्तु इन दिनों इसे व्यक्तिगत रूप से मनाया जाता है। इसलिए विसर्जन के लिए बहुत सी प्रतिमाएँ आती हैं।'' दूसरी सदस्य ने जोड़ा।

''और'', लीला, क्लब की सबसे छोटी सदस्य बोली, ''हमलोग समझते हैं कि इस झील के वन्य जीवन पर इसका दुष्प्रभाव पड़ेगा।''

इस दृश्य को बार-बार दुहराया गया, क्योंकि बहुत लोग अलग-अलग आकार की प्रतिमाओं के साथ आते रहे। छात्रों ने समझाया कि यह झील आस-पास के अनेक आवासीय क्षेत्रों के लिए एक मात्र पेय जल का साधन है तथा रंगों में भारी धातुओं जैसे शीशा, पारा, मैंगनीज तथा क्रोमियम का मिश्रण रहता है जो पानी में घुल जाता है। उन्होंने अनुरोध किया कि प्रतिमाओं को प्रतीकात्मक रूप से विसर्जित किया जाना चाहिये। इसके लिए, उन्होंने तीन बाल्टियों को पानी से भर दिया था। बच्चों ने विनयपूर्वक सलाह दी कि प्रतिमाओं को एक बाल्टी में विसर्जित कर वृक्ष के नीचे पुआल की चटाइयों पर रख दें।

क्लब के प्रयासों को कुछ सफलता मिली। वहाँ पर विसर्जन के लिए आये १५२ परिवारों में से ४३ परिवार झील में अपनी प्रतिमाओं को नहीं विसर्जित करने के लिए सहमत हो गये। जब भी कोई परिवार प्रतीकात्मक विसर्जन के लिए राजी हो जाता, तब लीला रजिस्टर लेकर परिवार का नाम और पता लिखने के लिए दौड़ पड़ती।

जब कमला तथा लीला घर के लिए पैदल लौट रहे थे, उन्होंने विसर्जन के लिए आती हुई गणेश की और प्रतिमाएँ देखीं। कमला के मुँह से आह निकल गई। लीला ने उसकी ओर देखते हुए पूछा, ''अब तुम किसके बारे में चिन्ता कर रही हो?'' कमला स्नेह से अपनी छोटी बहन पर मुस्कुराई जो हमेशा दुनिया के तौर तरीकों पर अक्सर सवाल उठाने के लिए उसे डाँटा करती थी, और बोली, ''नहीं लीला, मैं चिन्ता नहीं कर रही हूँ। केवल चिन्तन कर रही हूँ, अपने देश के हाथियों के बारे में जो पोचर्स द्वारा, चलती ट्रेनों से, और भी न जाने कैसे-कैसे मारे जाते हैं। बस, सन्देह हो रहा है, काश! किसी प्रकार यह सारी मानवीय भक्ति बेहतर उपयोग में लाई जा सकती...बस, इतना ही। जस्ट वॉण्डरिंग!''

-सुजाता पद्मनाभन

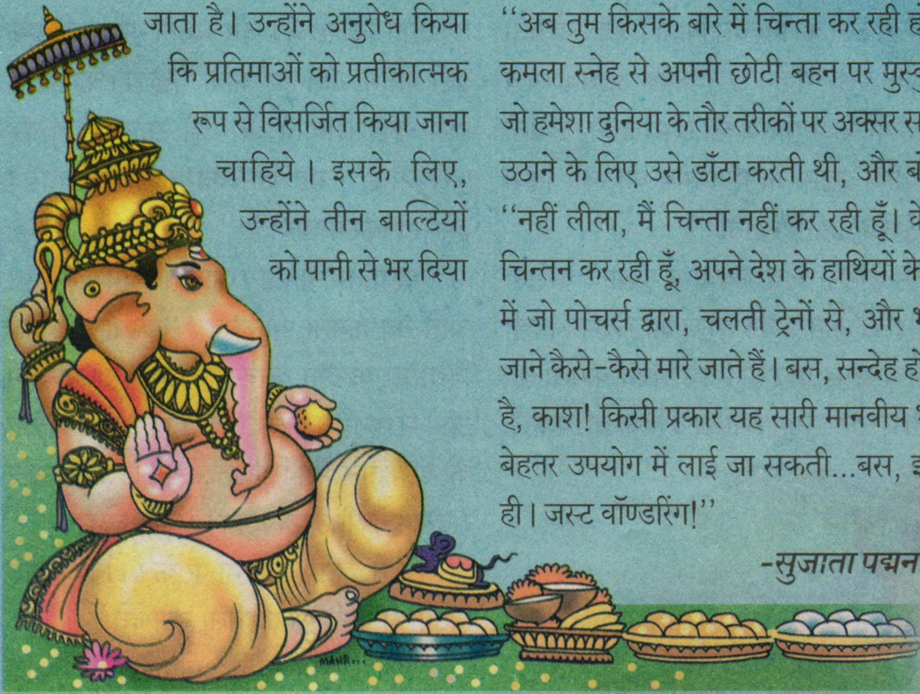

पाताल दुर्ग

2

(कुन्तल देश के मन्त्री के लड़के का नाम शशिकान्त था, वह दो मित्रों के साथ शिकार खेलने गया। वहाँ, यह शत्रु के बाण से घायल कर दिया गया। भद्र नाम का साथी भागकर राजधानी पहुँचा। जब कुन्तल का राजा और मन्त्री, जंगल में क्या हुआ था, इसके बारे में बात कर रहे थे, तो एक सैनिक ने उनको आकर बताया कि कदम्ब राजा ने दूत भेजे हैं। बाद में)

कदम्ब के राजा उग्रसेन के चार दूत, दो कैदियों के साथ दरबार में आये। शतमानु सिंहासन पर था। मन्त्री गंगाधर ने दूत के साथ के कैदियों के बन्धनों को हटाने के लिए सेवकों से कहा।

जब सेवक, कैदियों के बन्धन खोल रहे थे, तो उग्रसेन के दूतों में से एक आगे आया। उसने गंगाधर को सिर झुकाकर नमस्कार किया। ''महामन्त्री, हमें क्षमा करें, ये बड़े क्रूर हैं और अत्यन्त साहसी।'' कहकर वह कैदी के पास गया और उसको एक छड़ी से भोंकते हुए उसने कहा, ''यह धूमक है, पितृ हन्तक और दूसरा सोमक है भ्रातृ हन्तक।''

''इन हन्तकों को, हमारे पास भेजने में आपके महाराजा का क्या उद्देश्य है?'' मन्त्री गंगाधर ने उन तीनों से पूछा। यह सुनते ही, तीनों दूत सामने आये। सबने एक साथ बात करने की कोशिश

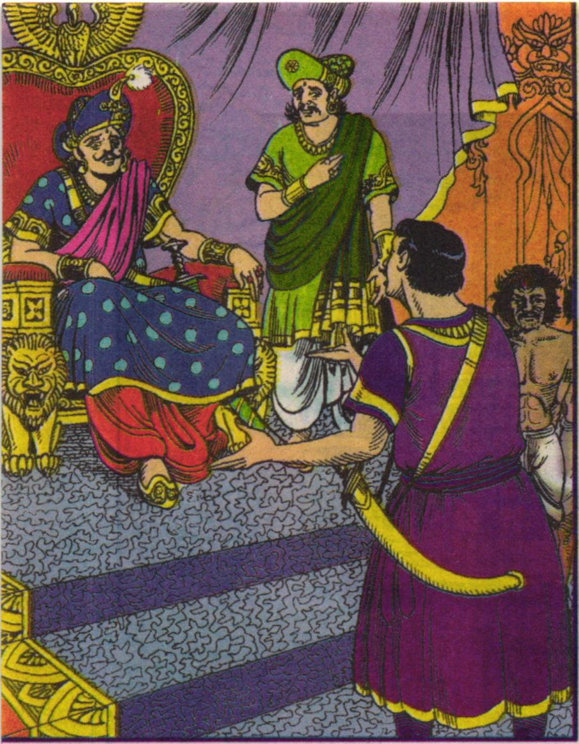

हैं। यदि वे मिल गये, तो वह खबर तुरंत आप तक पहुँचा दी जायेगी।''

''क्या आपके महाराजा ने यह सब जबानी बताने के लिए कहा है? क्या लिखित कुछ भी नहीं है आपके पास?'' गंगाधर ने पूछा।

''महाराज ने यह भयंकर घटना लिखनी तो चाही, पर उनका हाथ चला नहीं। इसलिए वे जो कुछ लिखना चाहते थे, उन्होंने वह मुझसे कहला कर भेजा है।'' दूत ने कहा।

राजा शतमानु, जो तब तक कदम्ब राजा का दूत जो कह रहा था, ध्यान से सुन रहा था, यकायक उठा। उसने कहा, ''अच्छा, तो आप सब लोग अब जा सकते हैं। इन हत्यारों की सुनवाई करके, हम उनको सजा देंगे।''

की, पर पहले दूत के इशारा करने पर वे रुक गये।

पहले दूत ने शतमानु की ओर सिर उठाकर देखा। फिर मन्त्री से, इस तरह कहा कि राजा भी सुन सके, ''महाराज और महा आमात्य को, हमारे राजा उग्रसेन बड़े आदरपूर्वक नमस्कार करके, एक दुखद वार्ता इस प्रकार सुनाते हैं। कदम्ब राज्य की सीमा में किसी कारणवश आये कुन्तल देश के महामन्त्री के लड़के और उनके साथियों को कैद से भागे हुए, भयंकर अपराधी धूमक और सोमक ने मार दिया। उन तीनों को मारकर, उनके गहने और घोड़े ये चोरी करना ही चाहते थे कि शेरों का एक झुण्ड उस तरफ़ आया। वे हत्यारे वहाँ से भागते-भागते, हमारे सैनिकों द्वारा पकड़ लिये गये। महामन्त्री के पुत्र और मित्रों के शवों के लिए, अपने सारे पर्वत प्रान्त में खोज कर रहे

यह सुनते ही उग्रसेन के दूतों को फ़िक्र होने लगी। वे एक दूसरे का मुँह देखने लगे। वे डर गये कि कैदी यहाँ रह जायेंगे तो रहस्य प्रकट हो जायेगा। कैदी सच क्या है, यहाँ के राजा को बता देंगे। फिर हमारे राजा की आज्ञा का उल्लंघन होगा।

जब सब दूत सोच ही रहे थे कि क्या जवाब दें तभी इस बार दूतों में से एक और दूत ने आगे आकर कहा, ''महाराज! माफ कीजिये। इन पितृ और भ्रातृ हन्तकों को पहले ही आजीवन कारावास का दण्ड दिया जा चुका है। इन्होंने कैद से भाग कर फिर यह अपराध किया है। हमारे महाराजा की आज्ञा है कि इन दोनों हत्यारों को कदम्ब और कुन्तल देश की सीमा पर, किसी महावृक्ष से लटका

कर फाँसी दे दी जाये। यह काम हम वापस जाते-जाते अवश्य कर देंगे। अब आज्ञा दीजिये।''

उग्रसेन के चारों दूत दोनों कैदियों के पास गये। उन्हें छड़ियों से मारकर वापस ले जाने लगे। कैदियों में से धूमक ने आँखें लाल करते हुए कहा, ''छीः, दुष्ट कहीं के।'' सोमक ने छड़ी की चोट खाकर, चूँ चाँ तक न की, न उसके चेहरे पर, दर्द का कोई निशान ही था।

दूतों में से एक ने उनके पास आकर दाँत पीसते हुए कहा, ''खबरदार, अपने बीवी, बच्चों को न भूलना।''

दूत, कैदियों के साथ दरबार से बाहर आ गये। राजा शतमानु, वे जिस द्वार से गये थे, उस ओर ध्यान से देखता रहा। उसने कहा, ''महामन्त्री! हत्यारा उग्रसेन ही है, यह धारणा मेरी और पक्की हो गयी है। क्यों वह, यह धोखाधड़ी कर रहा है? इसकी चाल के पीछे क्या उद्देश्य हो सकता है, समझ में नहीं आ रहा है। उग्रसेन ने कैदियों को हमारे पास क्यों भेजा?''

''महाराज, इस धोखे के पीछे, मुझे ऐसा लगता है, जैसे कोई बहुत बड़ी साज़िश हो। यही नहीं, मेरा ख्याल है कि शशिकान्त अब भी जीवित है।'' मन्त्री गंगाधर ने कहा।

''मैं भी चाहता हूँ कि शशिकान्त सुरक्षित वापस लौट आये। उग्रसेन शायद यह नहीं जानता कि हमारा भद्र घायल होकर वापस नगर आ गया है। इन दूतों की बातों से लगता है, जैसे वे तीनों जंगल में ही मर गये हैं।'' शतमानु ने कहा।

''उसके दूतों के हमारे नगर में आने से पूर्व, सबने ही यही सोचा था। ये दूत, नगरवासियों की बातचीत से जान जायेंगे कि भद्र यहाँ पहुँच गया है। जैसे ही पीठ में से बाण निकाल दिया जायेगा, मैं घोषणा करवा दूँगा कि वह मर गया है।'' गंगाधर ने कहा।

''इससे क्या लाभ होगा?'' शतमानु ने पूछा।

''यह अफवाह, उसके दूतों द्वारा या किसी और रास्ते उग्रसेन तक पहुँचेगी। वह इस भरोसे रहेगा कि जो कुछ जंगल में हुआ है, हम उसे न जान सकेंगे और इससे हमारा लाभ ही होगा। महाराज, जिन कैदियों को हत्यारा बताया जा रहा है, उनके बारे में मालूम करना होगा। वह सब मैं देख लूँगा। अब काफ़ी देर हो गयी है। आप अपने शयन कक्ष में जाइये।'' यह कहता गंगाधर,

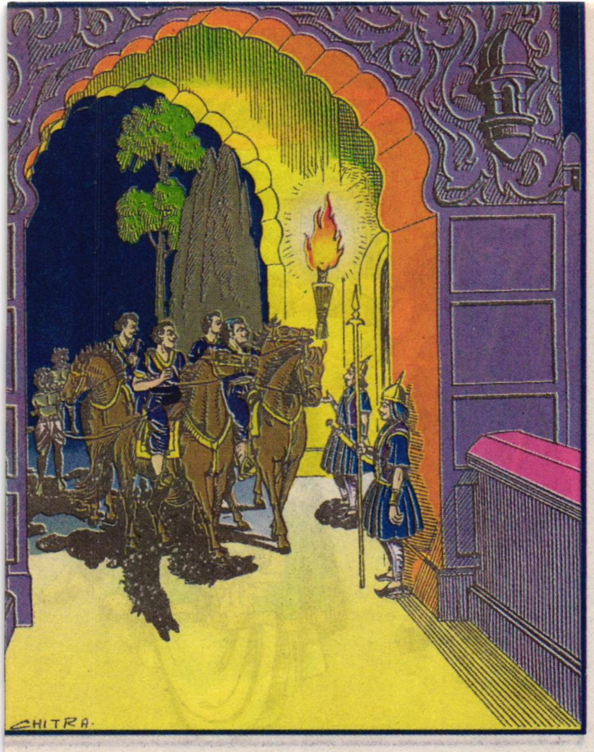

राजा को नमस्कार करता उठा और दरबार से बाहर आया। वहाँ पहरे पर खड़े एक सैनिक को बुलाकर उसने कहा कि वह अपने सरदार को बुलाकर लाये।

उग्रसेन के दूत, राजमहल के आँगन से, नगर में आये। राजवीथि में एक पेड़ के नीचे चार घोड़े बँधे हुए थे। दूत उन पर सवार हो गये और कैदियों की पीठ से रस्सी बाँधकर, जीन से कसकर वे निकल पड़े। दोनों कैदी घोड़े से बंधे हुए पीछे-पीछे जाने लगे।

तब तक काफ़ी रात हो गई थी। नगर में कहीं हलचल न थी। सिवाय दो तीन आने जानेवालों के और गश्त लगानेवाले सिपाहियों के उनको कहीं कोई न मिला। वे जानना चाहते थे कि भद्र जीवित है या मर गया है। जब वे कदम्ब राजा के यहाँ से चले थे, तो उनका ख्याल था कि जो बाण से घायल हो गया था, वह घोड़े पर से गिर-गिराकर कहीं मर मरा गया होगा। पर कुन्तल नगर में उन्होंने सुना कि वह घायल आदमी राजमहल तक पहुँच गया था।

यदि वह बात कर सकता है, तो सचाई सबको मालूम हो जायेगी। और उनके किये-कराये पर मिट्टी पड़ जायेगी। तब केवल हमारे राजा पर ही नहीं, पूरे राज्य पर ख़तरा आ सकता है। कोई आश्चर्य नहीं, कुन्तल हमारे राज्य पर हमला कर दे।

दूत नगर द्वार के पास पहुँचे। वहाँ पहरेदारों को, नगर रक्षक का दिया हुआ अनुमति पत्र दिखाया।

"मन्त्री के लड़के का दोस्त घायल होकर नगर पहुँचा है। उसके पीठ में बाण घुस गया था। फिर वह इतनी दूर कैसे आया, आश्चर्य होता है।" एक ने कहा। "उस घायल नौजवान का नाम भद्र है। वह फौलाद की तरह था। पर इससे क्या फायदा? पर जब उन्होंने बाण निकाला, तो रहे सहे प्राण भी बिचारे के निकल गये।" पहरेदारों ने कहा।

"अरे बिचारा..." दूतों ने झूठमूठ की सहानुभूति दिखाई। नगर के द्वार पार करके, वे जंगल की ओर चल दिये। भद्र की मृत्यु की वार्ता सुनकर वे बड़े खुश थे।

"जब हमारे राजा और मन्त्री चाल चलते हैं, तो उसका कोई जवाब नहीं, मन्त्री क्या मामूली

आदमी है? कैदियों को सामने करके हमारे मंत्री ने न सिर्फ राजा को, बल्कि पूरे राज्य को बचा लिया है। वे सूत से हाथी पकड़ सकते हैं।'' एक दूत ने कहा।

''अरे जिनको मरना था, वे मर गये हैं और चाल चलनेवाले चाल चल रहे हैं। उनका क्या कहना... हम किस्मतवाले हैं।'' एक और दूत ने कहा।

''क्यों भाई, कौन-सी है वह किस्मत?''

''हम जिस काम पर आये थे, वह खूब अच्छी तरह पूरा हो गया है। हमने अपनी बातों से इस देश के राजा और मन्त्री को खूब उल्लू बनाया। इसके लिए हमारे राजा हमारा एहसान मानेंगे। कैसी कैसी जागीरें देंगे, देखते रहना।'' दूत जोर से हँसा।

वह अभी हँस ही रहा था कि बड़ के पेड़ के पीछे से, किसी और का हँसना सुनाई दिया। चारों दूत अचरज में पड़ गये। उन्होंने उस ओर देखा। पर उनको वहाँ कोई न दिखाई दिया। जंगल में जाने क्या क्या आवाज़ें आ रही थीं। वहाँ विचित्र गूँज-सी थी। वातावरण डरावना था। कभी चीख-चिल्लाहट, कभी रोने तो कभी अट्टहास की आवाज आ रही थी। दूत डर गये।

''हम इतने खुश थे कि हमने आसपास की बातों का ख्याल ही न किया। इस जंगल में बड़े-बड़े चोर और डाकू तो रहते ही हैं, उनके अलावा पिशाच भी हैं यहाँ। बड़ी भयंकर जगह है यह। अब मुख बन्द करके, घोड़ों को होशियारी से आगे

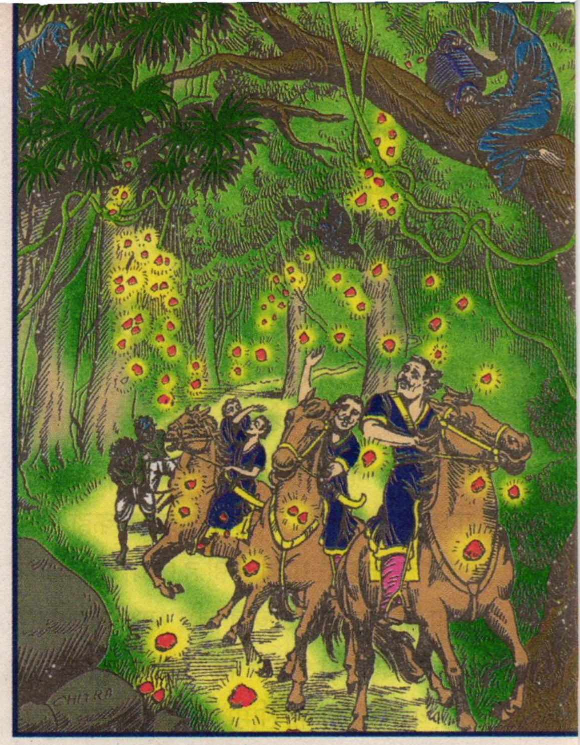

बढ़ाओ। धूमक और सोमक घोड़ों के साथ आ रहे हैं क्या?'' कहते हुए एक दूत ने पीछे मुड़कर देखा।

उसी समय दूतों पर, पेड़ों पर से अंगारों की वर्षा होने लगी। उन अंगारों के पड़ते ही घोड़े बिदक कर भागने लगे। दूतों में से दो के कपड़े जल कर खाक भी हो गये।

''भूत भूत...'' चारों दूत एक साथ चिल्लाये। लगाम खींचकर, उन्होंने घोड़ों को रोकने की चेष्टा भी न की। वे हिनहिनाते जंगल में इधर-उधर भागने लगे। धूमक और सोमक भी उनके पीछे गिरते पड़ते भागने लगे।

कुछ देर बाद जब घोड़े थक थका गये, तो सवारों के काबू में आ गये। दूतों में से एक ने सोमक और धूमक को अपने पास ही देख,

सन्तोष की लम्बी साँस लेकर कहा, ''हम कितने किस्मत वाले हैं। कितने बड़े खतरे से हम जिन्दे निकल आये हैं, अब यम भी हमारा कुछ नहीं बिगाड़ सकता।''

''इन बातों से क्या फायदा? हम रास्ता भटक गये हैं।'' एक ने खीझ कर कहा।

''अरे, भटक गये, तो भटक गये, प्राण तो बचे ! यह जो पहाड़ दिखाई दे रहा है, वह हमारे राज्य में ही तो है।'' एक और दूत ने कहा।

''हाँ, तुम्हारे राज्य में ही है। क्या तुम कदम्ब राजा के दूत हो? अच्छा। मेरे साथ आओ। मैं कुन्तल देश की सीमा का सिपाही हूँ। कुन्तल और कदम्ब देश की सीमा पर ही है वह महावृक्ष। यदि आपने उसके नीचे खड़े होकर देखा, तो आगे का रास्ता साफ साफ दिखाई देगा।'' सैनिक ने कहा।

सैनिक रास्ता दिखाता गया। दूतों ने उसके पीछे पीछे अपने घोड़े चलाये। वे उस महावृक्ष के पास पहुँचे। वहाँ एक और सैनिक तलवार लिये खड़ा था।

''वह सफेद सफेद, बल खाते साँप की तरह क्या चीज़ है? क्या कोई पहाड़ी नाला है?'' एक दूत ने पूछा। पहरेदार सैनिक उस प्रश्न का उत्तर देनेवाला ही था कि टहनी में से कुछ आहट हुई। दूत भय से काँप उठे। सिर उठाकर देखा, ''ये तो अजगर मालूम होते हैं।'' यह कहकर उन्होंने घोड़ों को एड़ी मारी।

इतने में ऊपर से फाँसी के दो फन्दे आये और दो दूतों के गलों में लग गये। वे ज़िन घोड़ों पर सवार थे, वे घोड़े आगे भाग गये। जिसने तलवार हाथ में पकड़ रखी थी, उसने धूमक और सोमक जिस रस्सी से बँधे थे, उसे काट दी।

बाकी दोनों दूत भय से चिल्लाते, घोड़ों को सम्भालते पहाड़ी नाले की ओर भागे और जिनके गलों में फन्दा आ लगा था, वे एक क्षण चिल्लाये और फिर टहनियों से लटक गये।

''वे जो भाग रहे हैं, उनको नाले तक पहुँचने से पहिले ही पकड़ लो।'' किसी का चिल्लाना सुनाई दिया। तुरंत पेड़ों के पीछे से कुन्तल देश के सैनिक बाहर आये और वे भागते हुए कदम्ब राजा के दूतों पर बाण-वर्षा करने लगे।

(अभी है)

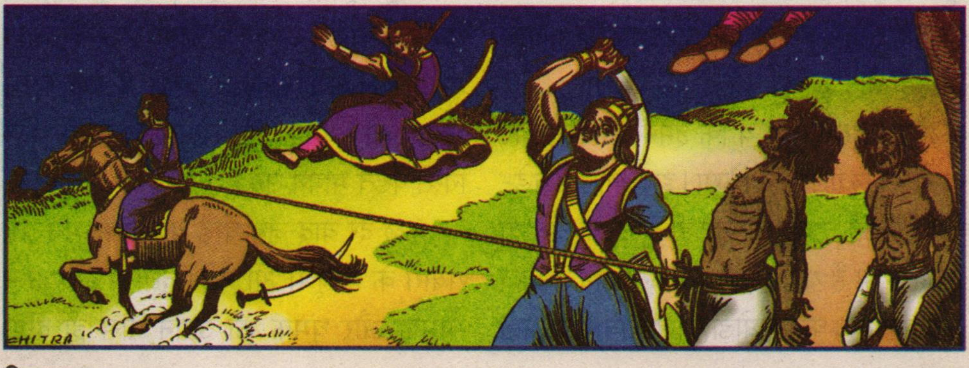

चिरुनाथ-का दान

धुन का पक्का विक्रमार्क पुनः पेड़ पर से शव को उतारा और उसे कंधे पर डालकर श्मशान की ओर बढ़ता हुआ जाने लगा। तब शव के अंदर के वेताल ने कहा, "राजन्, तुम्हारा भविष्य में क्या होगा, मैं भी बता नहीं सकता। पर यह तो बता सकता हूँ कि अब तक तुम्हारा चित्त स्थिर है। कुछ लोग पहले यह तय कर लेते हैं कि जीवन में अवश्य ही कुछ पाना है। किन्तु पा लेने के बाद बिना किसी कारण के उसे त्यज देते हैं। चिरुनाथ एक ऐसा ही युवक है, जिसने परिश्रम किया और अद्भुत निधि प्राप्त की। किन्तु वह उस निधि को दान में देने के लिए सन्नद्ध हो गया। तुम्हें सावधान करने के लिए उसकी कहानी सुनाता हूँ। ध्यान से उसे सुनना।" कहकर यों कहानी सुनाने लगाः

वेताल कथा

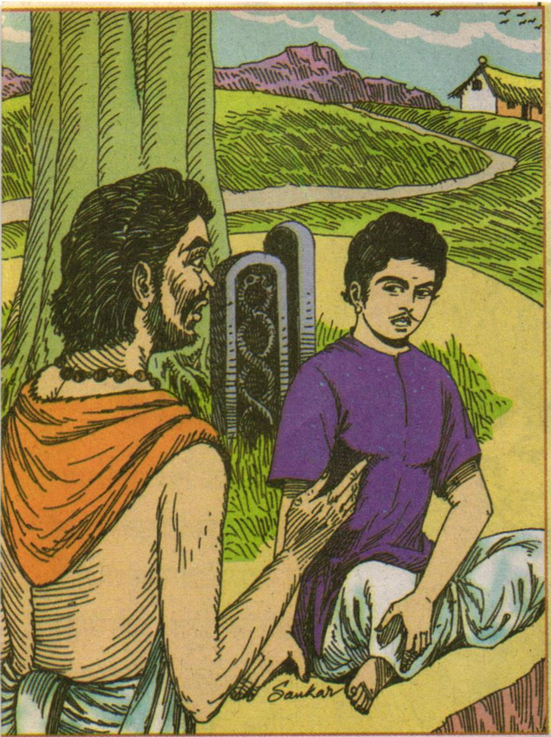

सिरि नामक गाँव में चिरुनाथ नामक एक युवक रहा करता था। उस गाँव में आये हुए एक बैरागी ने उसके हाथ की रेखाएँ देखीं और कहा, ''भाग्य तुम्हें ढूँढ़ता हुआ आयेगा।'' उस क्षण से लेकर सुंदर भविष्य को लेकर बिना कोई काम किये वह सपने देखने लगा। एक दिन दुपहर को गाँव के बाहर के बरगद के पेड़ के तले वह बैठा हुआ था। उस समय एक युवक उसके पास आया और कहने लगा, ''पाँच सालों तक मुझसे बताये जानेवाले उस घर में काम करने के लिए तैयार हो तो तुम्हें अपार निधि प्राप्त होगी।''

चिरुनाथ ने उसे आश्चर्य भरी आँखों से देखा। तब उस व्यक्ति ने अपने बारे में यों बताया। वह श्रीपुर का है और उस युवक का नाम आनंद है। वह उसी गाँव की एक युवती से विवाह करना चाहता था। उसने इसके लिए उस युवती के पिता से विनती की? उसने एक हज़ार अशर्फियों का दहेज माँगा। चूँकि उसके पास इतनी बड़ी रक़म नहीं थी, इसलिए उसने गाँव के संपन्न लोगों से कर्ज़ माँगा। पर हर किसी ने उसे रक़म देने से इनकार किया, क्योंकि वह बहुत ही गरीब था। अंत में वह शकार नामक एक संपन्न व्यक्ति के घर गया। उसने शर्त रखी कि लगातार पाँच सालों तक वह उसके घर में काम करने को तैयार हो तो यह रक़म दूँगा। आनंद ने इसकी शर्त मान ली और उसके घर में काम करने लगा। पर, थोड़े ही दिनों में वह एक विचित्र बीमारी का शिकार हो गया और उसका चेहरा विकृत हो गया। इस कारण उस युवती ने उससे विवाह करने से इनकार कर दिया। इससे उसमें जीवन के प्रति विरक्ति उत्पन्न हो गयी और वह देशाटन करने निकल पड़ा।

निकलने के पहले जब आनंद ने शकार को अपना निर्णय सुनाया तब उसने कहा, ''तुमने कर्ज़ माँगा और मैं देने के लिए तैयार भी हो गया। नहीं लेना चाहते हो तो मत लो। पर, वचन के अनुसार तुम मेरे घर में काम नहीं करोगे और वचन से मुकर जाओगे तो यह पाप होगा और यह पाप तुम्हारा पीछा करता रहेगा।''

आनंद यह कहकर वहाँ से चला गया कि लौटने के बाद अपना वचन निभाऊँगा। कुछ दिनों के बाद वह बृहदारण्य पहुँचा और प्रकांड की परिचर्याओं में लग गया। एक दिन उसने अपनी स्थिति प्रकांड से बताकर संन्यास दिलाने की प्रार्थना की।

"तुम्हारी विरक्ति तात्कालिक है। संन्यास लेना कोई सुलभ कार्य नहीं है। तुम्हारी स्थिति को देखते हुए अब तुम्हें धनमंत्र का उपदेश दूँगा। उसका जप करते हुए तपस्या करोगे तो तुम्हें एक रहस्य से भरी निधि दीखेगी। एक वर्ष तक तुम उसका संरक्षण करते हुए तपस्या को जारी रखोगे तो तुम्हें कुछ शक्तियाँ प्राप्त होंगी और तुम्हें जो चाहिये, वह मिलेगा। तब भी तुममें विरक्ति बनी रहे तो संन्यास ग्रहण कर सकते हो। परंतु, एक ही साल के अंदर जल्दबाजी में अपनी शक्तियों का उपयोग करोगे तो उससे बड़ा अनर्थ होगा।'' फिर उन्होंने उसे धनमंत्र का उपदेश दिया।

आनंद ने एक आश्रम का निर्माण किया। और धनमंत्र का जप करते हुए तपस्या करने लगा। कुछ समय के बाद उसे एक निक्षित निधि बरगद के कोटर में दिखायी पड़ी। ठीक उसी समय पर नीलांबरी नामक एक युवती वहाँ आयी।

नीलांबरी का जन्म एक दरिद्र परिवार में हुआ। उसकी दृष्टि सदा धन और सुख पर ही केंद्रित होती थी। सुबोध नामक एक युवक ने उसे चाहा और बिना दहेज माँगे उससे शादी करने के लिए तैयार हो गया। नीलांबरी के पिता ने इस प्रस्ताव को सहर्ष मान लिया, पर पिता के इस निर्णय से डरकर वह घर से भाग निकली। वह आनंद के आश्रम में पहुँची। उसकी कहानी सुनने के बाद आनंद ने उससे निधि के बारे में बताया और कहा, "एक साल तक निधि का संरक्षण करते हुए मेरी परिचर्या करती रहोगी तो वह निधि तुम्हारी हो जायेगी। जैसे ही मेरी तपो दीक्षा समाप्त होगी, उस निधि को ले लेना।''

नीलांबरी ने स्वीकार कर लिया और वहीं रहने लगी। एक दिन जब आनंद स्नान करने के लिए नदी पर गया तब नीलांबरी को ढूँढ़ते हुए सुबोध वहाँ आया। नीलांबरी ने पूरा विषय उसे बताया और कहा, "निधि के लिए एक साल तक रुक नहीं सकती। तुम आनंद की हत्या कर दो तो निधि लेकर यहाँ से चले जायेंगे।''

स्नान करने के बाद आये हुए आनंद ने उसकी बातें सुन लीं और क्रोधित होकर उसे शाप दिया, "तुम्हें निधि देने के लिए भी तैयार हूँ, फिर भी मुझे मार डालने पर तुल गयी हो। इसी क्षण से तुम राक्षसी बन जाओगी।''

नीलांबरी यह सुनकर निश्चेष्ट रह गयी। ठीक

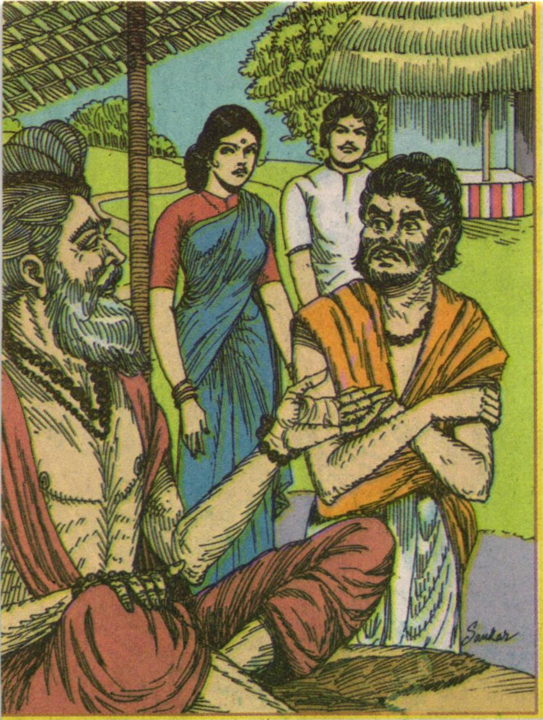

उसी समय पर प्रकांड वहाँ आये और आनंद से कहा, ''तुमने नियम का उल्लंघन किया। एक साल ही के अंदर तुमने तपोशक्ति का दुरुपयोग किया और उन सारी शक्तियों को खो दिया। उसके शाप विमोचन के बाद ही वे शक्तियाँ पुनः तुम्हें प्राप्त होंगी। और यह शाप विमोचन तुमसे संभव नहीं।''

''नीलांबरी के व्यवहार के कारण मुझमें फिर से जीवन के प्रति विरक्ति उत्पन्न हो रही है। कृपया संन्यास प्रदान कीजिये'', बड़े ही दीन स्वर में उसने विनती की।

''तुमने शकार को वचन दिया और तुम उसके ऋणी हो। जब तक वह ऋण नहीं चुकाओगे, तब तक तुम संन्यास प्राप्त करने के योग्य नहीं हो'', प्रकांड ने तीखे स्वर में कहा।

''आप ही को मुझे कोई दूसरा उपाय बताना होगा'', कहते हुए वह प्रकांड के पैरों पर गिर गया।

''नीलांबरी राक्षसी के रूप में परिवर्तित होगी और बरगद के पेड़ पर छा जायेगी और उस निधि का संरक्षण करती रहेगी। तुम शकार के ऋण से मुक्त होकर जब किसी योग्य व्यक्ति को वह निधि सौंपोगे, तब उसे शाप से मुक्ति मिलेगी'', प्रकांड ने कहा।

''आप ही बताइये कि यह कैसे संभव है? जैसे आप बताएँगे, वैसे ही करूँगा।'' आनंद ने कहा।

''धन पाने की दुराशा की वजह से नीलांबरी ने कृतज्ञता भुला दी। कृतज्ञतापूर्वक जो धन की आशा को त्यज देगा, उसी व्यक्ति से उसे शाप से विमुक्ति मिलेगी। सिरि गाँव का चिरुनाथ ऐसा महोन्नत व्यक्ति बन सकता है, ऐसी मेरी आशा है। कोशिश करके देखना'', फिर प्रकांड ने आवश्यक विवरण दिये और वहाँ से चले गये।

चिरुनाथ को ढूँढ़ते हुए आनंद सिरि गाँव पहुँचा। आनंद से पूरा विवरण सुनने के बाद चिरुनाथ में भी निधि के प्रति आशा जगी। उसने पूछा कि कहो, मुझे किसके घर में काम करना है।

''श्रीपुर के शकार के घर में काम करने के बाद बृहदारण्य पहुँचना'', यों कहकर आनंद तपस्या करने चला गया।

चिरुनाथ श्रीपुर पहुँचकर शकार से बताया कि उसे आनंद ने आपके घर में काम करने के लिए मुझे भेजा। फिर वह शकार की अनुमति लेकर उसके घर में काम पर लग गया। शकार की पत्नी उससे सब प्रकार के काम कराने लगी, मानों वह

उससे बदला ले रही हो। चिरुनाथ की दृष्टि उस निधि पर ही केंद्रित थी, इसलिए वह चुपचाप वे सब काम कुछ कहे बिना करने लगा।

एक दिन शकार की पत्नी ने उससे कहा, भोजन बनाते हो वह खाया ही नहीं जाता। इसी गाँव में चिरुमति नामक एक कन्या है। घर के काम करने में वह माहिर है। उसे इस बात का गर्व है कि मुझ जैसी उत्तम रसोइन कोई है ही नहीं। तुम उसे रसोई बनाने के लिए यहाँ ले आओ अथवा आनंद से कह देना कि हम तुम्हें नौकरी पर रखने को तैयार नहीं हैं।

चिरुनाथ उसकी बातों से हताश नहीं हुआ। वह चिरुमति से मिला और अपनी स्थिति बतायी। चिरुमति ने हँसकर कहा, ''भविष्य के भाग्य पर दृष्टि रखते हुए अब दुर्भाग्य को भी अपना रहे हो। तुम्हारी इस दुस्थिति पर मुझे दया आ रही है पर, मैं तुम्हारी सहायता नहीं कर सकती।''

''पाँच सालों तक काम करूँगा तो मुझे अपार धन-राशि मिलेगी। बड़ा हो जाने के बाद तुम्हारा ऋण चुकाऊँगा। मेरी बात का विश्वास करना और मुझपर दया करना'', आनंद ने विनती की।

चिरुमति नरम पड़ गयी और बोली, ''ऋण के बारे में बात मत करो। अपने लिए कष्ट सहना मेरे लिए आदत बन गयी है। अब तुम्हारे लिए कष्ट उठाऊँगी।'' फिर वह चिरुनाथ के साथ शकार के घर गयी और रसोइन का काम संभाला।

पाँच साल देखते-देखते बीत गये। चिरुनाथ बृहदारण्य गया, आनंद से मिला और कहा, ''तुम्हें दिये वचन के अनुसार शकार के घर में पाँच सालों तक काम करके लौटा हूँ। तुम्हारा ऋण चुका

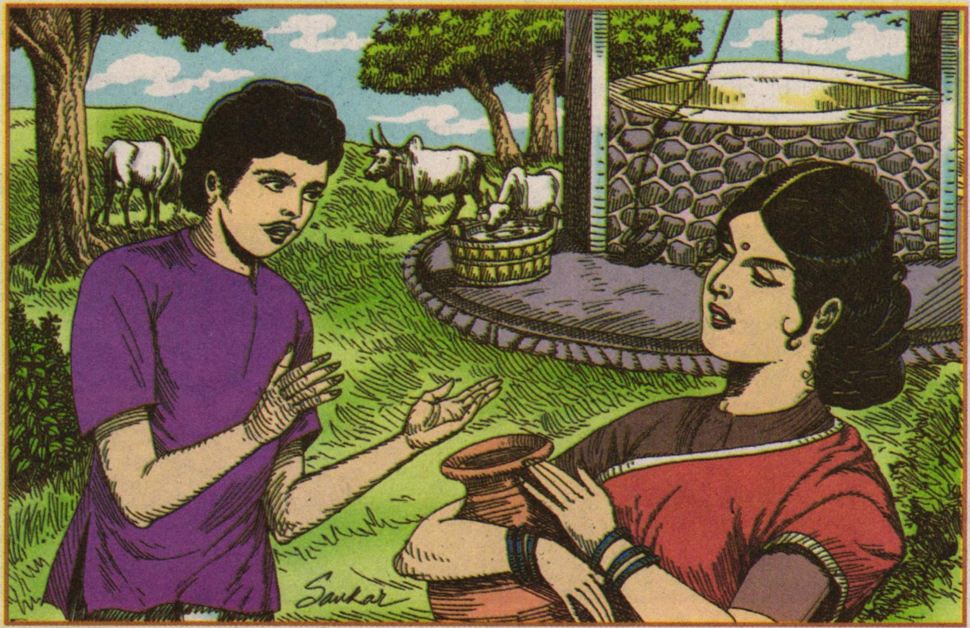

दिया। किन्तु, मुझे अब निधि नहीं चाहिये। जिसे तुम चाहते हो, उसे यह निधि दे दो। लगता है कि जिस चिरुमति ने मेरे साथ, मेरे लिए कष्ट सहे, उससे शादी करूँ। नीलांबरी के शाप विमोचन के लिए कृतज्ञता बद्ध होना आवश्यक है, इसलिए तुम जो कहोगे, उसे करने के लिए तैयार हूँ।''

वह यों बता ही रहा था कि नीलांबरी का शाप विमोचन हो गया। तभी वहाँ आये प्रकांड चिरुनाथ की बातों से बहुत प्रसन्न हुए और उसके सिर पर हाथ रखते हुए आशीर्वाद दिया।

वेताल ने यह कहानी बतायी और राजा विक्रमार्क से कहा, ''राजन्, चिरुनाथ भाग्यवान होने की प्रतीक्षा में पाँच सालों तक कष्ट भी उठाये। किन्तु निधि जैसे ही उसे मिलने वाली थी, उसे स्वीकार करने से उसने इनकार किया। उसने ऐसा क्यों किया? किसी के भी हस्तक्षेप के बिना नीलांबरी कैसे शाप से मुक्त हो गयी? प्रकांड ने आनंद भरित होकर चिरुनाथ को आशीर्वाद क्यों दिया? मेरे इन संदेहों के समाधान जानते हुए भी तुम चुप रहोगे तो तुम्हारा सिर फट जायेगा।''

विक्रमार्क ने कहा, ''पाँच सालों तक चिरुनाथ ने शारीरिक कष्ट सहे, मेहनत की, इसलिए परिश्रम में जो मिठास है, उसे मालूम हो आया। इसीलिए निधि में उसकी आसक्ति नहीं रही। प्रतिफल की आशा में किया जानेवाला परिश्रम व्यापार कहलाता है, वह सहायता नहीं कहलाता। प्रतिफल की आशा किये बिना, मानवता में विश्वास रखनेवाली, चिरुमति ने, चिरुनाथ की सहायता की। उसके साहचर्य के कारण ही चिरुनाथ के धन की आशा पर भी जीत पायी।

''ऐसे व्यक्ति के वहाँ आने के कारण ही नीलांबरी शाप से मुक्त हो गयी। वर्तमान काल में मानव संबंध व्यापारिक होते जा रहे हैं। चिरुनाथ का निर्णय विशिष्ट और अनूठा है जो बिरले ही देखने को मिलता है। चूँकि चिरुनाथ ने ऐसा उत्तम निर्णय लिया, इसीलिए प्रकांड ने बहुत ही प्रसन्न होकर उसे आशीर्वाद दिया।''

राजा के मौन-भंग में सफल वेताल शव सहित गायब हो गया और पुनः पेड़ पर जा बैठा।

आधारः वसुंधरा की रचना

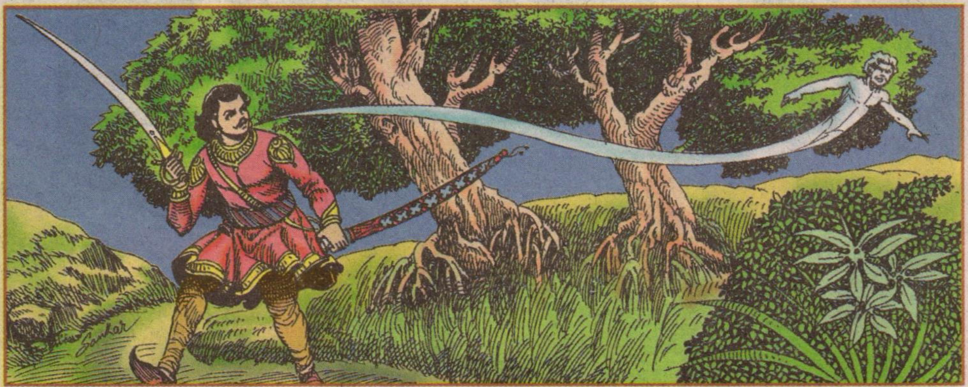

समाचार झलक

ओलम्पिक स्वर्ण पदक

इस अंक के छपते-छपते अभी यह खबर आई है कि भारत के सर्वश्रेष्ठ युवा निशानेबाज चण्डीगढ़ के अभिनव बिन्द्रा ने (२५) बिजिंग ओलम्पिक खेलों के १० मी. एयर राइफल प्रतियोगिता में स्वर्ण पदक जीता है। यह प्रथम अवसर है जब भारत आधुनिक ओलम्पिक्स के ११२ वर्ष के इतिहास में एक व्यक्तिगत स्वर्ण पदक जीत रहा है। अपने देश को यह असाधारण सम्मान दिलाने के लिए, अभिनव को *चन्दामामा* की ओर से बहुत बहुत हार्दिक बधाई!

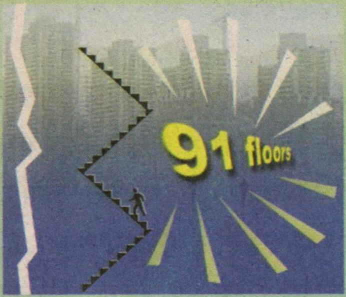

आरोहण-कीर्तिमान

इटली के मार्को द गैसपेरी (३० वर्ष) विश्व के सबसे ऊँचे गगन चुम्बी भवन, ताईपेई १०१ के ९१ वें मंजिल तक ११ मिनट ३९ सेकेण्ड में आरोहण करके एक नया विश्व कीर्तिमान स्थापित किया है। यह भवन इम्पायर स्टेट बिल्डिंग (८६ मंजिल और १५७६ सीढ़ियाँ) से ४०० मी. अधिक ऊँचा है। इस प्रतियोगिता में अन्य ८० प्रतियोगी थे। जर्मनी का थोमा डोल्ड द्वितीय स्थान पर था जिसने ११ मि.५६ से. में आरोहण पूरा किया। महिलाओं में पूर्व चैम्पियन आन्द्रेया मार (२८-आस्ट्रिया) ने १२ मि. ५४ से.में लक्ष्य पूरा किया।

श्वान सम्मानित

शल्य चिकित्सा के समय प्राण रक्षा के लिए रक्त दान करना मानवता की सेवा माना जाता है। एक दो वर्षीय इंग्लिश मैस्टिफ श्वान, लर्च, जरूरत के समय दूसरे श्वानों के उपयोग के लिए बीस बार रक्तदान कर चुका है। वास्तव में, अमरीका के मिचिगन निवासी उसके मालिक जोनी मेल्विन थीएड के मुताबिक उसका श्वान हर महीने में एक बार रक्तदान करता है। उसके रक्त ने दर्जनों कुत्तों को मदद की है। लर्च का वजन ९० किलो है और हर महीने में करीब ९० किलो भोजन खाता है। उसे मिचिगन चैप्टर ऑफ द अमरीकन रेड क्रॉस द्वारा सम्मानित किया गया है और "पेट्स बेस्ट फ्रेण्ड अवार्ड" से पुरस्कृत किया गया है।

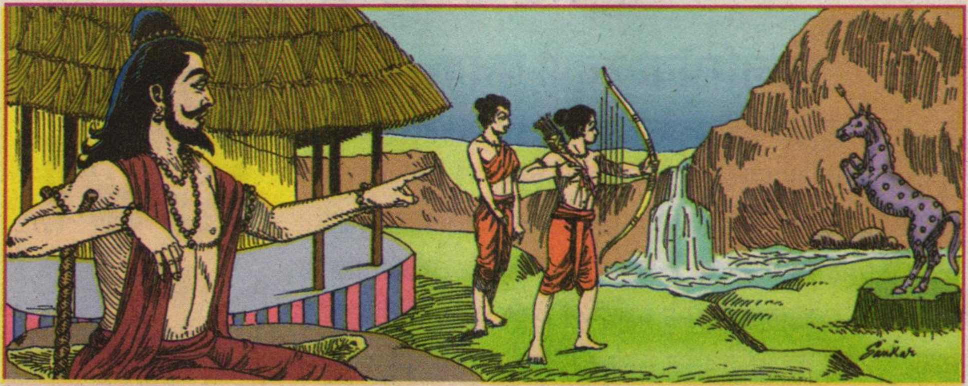

धृष्टद्युम्न

जिस योद्धा के पिताश्री का अपमान किया, उससे बदला लेने, उसका अंत करने के लिए यज्ञकुंड से उत्पन्न धृष्टद्युम्न वीर कुमार था। उसके पिता पांचाल राजा द्रुपद का घोर अपमान किया, बलवान शत्रु द्रोण ने। उसका अंत करना धृष्टद्युम्न का एकमात्र लक्ष्य था।

बताया जाता है कि कृष्ण और सुदामा जिगरी दोस्त थे। उनकी मैत्री को प्रेम और अनुराग का सजीव उदाहरण माना जाता है। इसके बिलकुल ही विपरीत उदाहरण है, बाल्य मित्र द्रुपद व द्रोण के बीच की शत्रुता। इन दोनों ने अहंकार जनित पराभवों तथा प्रतिकारों से अपने जीवन को भर दिया।

द्रोण भरद्वाज ऋषि का पुत्र था। वेदों के अध्ययन के बाद अस्त्रविद्याओं को सीखने के लिए वह अग्निवेश नामक गुरु का शिष्य बना। उसने गुरु से आग्नेय अस्त्रों को प्राप्त किया। उसी दौरान पांचाल राजा वृषत का पुत्र द्रुपद भी अस्त्रविद्याएँ सीखने के लिए वहीं विद्याभ्यास किया करता था। एक ही गुरु से वे विद्या सीख रहे थे, अतः दोनों में अच्छी मैत्री स्थापित हो हुई। दोनों ने एक ही गुरुकुल में रहते हुए साथ-साथ रहकर धनुर्विद्या का अभ्यास किया।

विद्याभ्यास की पूर्ति के बाद पिता के तदनंतर द्रुपद पांचाल राज्य का राजा बना।

द्रोण ने कृप की बहन से विवाह किया और फिर अश्वत्थामा नामक पुत्र को जन्म दिया। अब वह जीविका अर्जित करने के प्रयत्न में लग गया। किन्तु उसके प्रयत्न सफल नहीं हो पाये। जब उसे मालूम हुआ कि परशुराम दान धर्म कर रहे हैं तो वह उनके पास गया। किन्तु परशुराम के पास दान में देने के लिए कुछ भी बचा नहीं था। जितना उसके पास था, उसने वह सब कुछ दान में दे

पौराणिक युवा नायक - ४

दिया। उसके पास जो दिव्यास्त्र शेष रह गये थे, उन्हें लेकर द्रोण चला गया। परिवार चलाना उसके लिए बहुत बड़ी समस्या बन गयी। उसने सोचा कि अपने बाल्यमित्र राजा द्रुपद के पास जाना ही एकमात्र मार्ग है। वह बड़ी आशा लेकर राजा द्रुपद के पास गया।

परंतु, सिंहासन पर आसीन होने के बाद द्रुपद में अहंकार बड़ी मात्रा में बढ़ गया। द्रोण की बातों पर उसने ध्यान ही नहीं दिया। उल्टे उसकी अवहेलना करते हुए उसने कहा, ''तुम जैसे दरिद्र के साथ मेरी कैसी मैत्री? मैं तुम्हें जानता ही नहीं। यहाँ से तुरंत चले जाओ।''

जब समय साथ नहीं देता तब उसकी छाया भी साथ नहीं देती। द्रोण इस कठोर सत्य को समझ गया। उसने मन ही मन ठान लिया कि समय आने पर अवश्य ही द्रुपद को पाठ सिखाऊँगा और इस अपमान का प्रतिकार लूँगा।

इसके बाद द्रोण हस्तिनापुर गया और कौरव-पांडवों को धनुर्विद्या सिखाने लगा। वह उनका गुरु बन गया। राजकुमारों को असाधारण वीर बनाने में वह सफल हुआ। मुख्यतया अर्जुन को धनुर्विद्या में अद्वितीय प्रवीण बनाया। विद्याभ्यास जब पूरा हुआ तब उसने उनसे कहा, ''मुझे गुरु दक्षिणा चाहिये।''

''कहिये, आपको क्या चाहिये?'' राजकुमारों ने पूछा।

''ऐश्वर्य के नशे में चूर है द्रुपद। उसे पकड़ कर मेरे पास ले आओ'', द्रोण ने कहा।

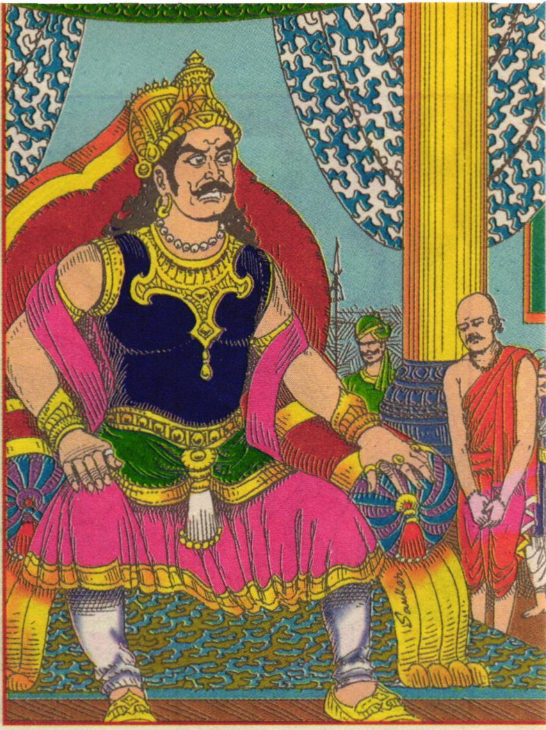

गुरु की आज्ञा को पूरा करने के लिए यद्यपि कौरव राजकुमार गये, पर द्रुपद को हराना उनके लिए संभव नहीं हो पाया। उन्हें विवश होकर लौट आना पड़ा।

इसके बाद अर्जुन भीम, नकुल, सहदेव को लेकर द्रुपद को पकड़ कर ले आने गया। चारों वीरों ने युद्ध में द्रुपद को हरा दिया और उसे पकड़ कर वे ले आये और गुरु दक्षिणा के रूप में उसे गुरु को समर्पित कर दिया।

अपमानित द्रुपद को देखकर द्रोण ने उससे कहा, ''क्या मेरे सामने सिर झुकाकर खड़े हुए तुम द्रुपद राजा हो? अब तुम और तुम्हारा राज्य, राजधानी कोपिल्य नगर मेरे अधीन है। अब ही सही, हमारी बाल्य मैत्री को मानते हो या नहीं? मैं शासकों की मैत्री चाहनेवालों में से हूँ। पर तुम्हारा

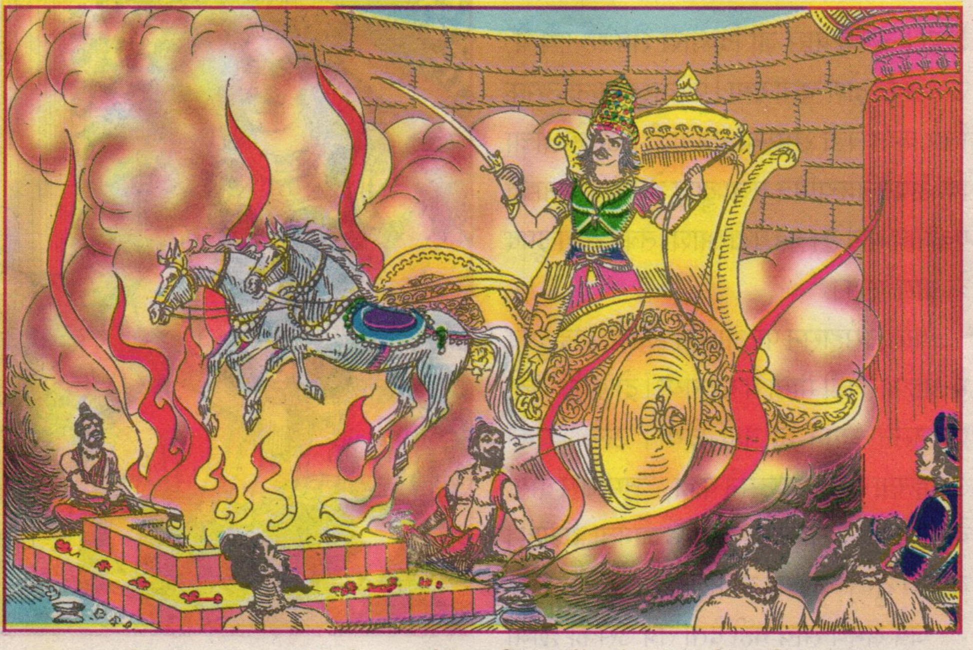

राज्य अब नहीं रहा। अब तुम दरिद्र हो। तुम जैसे दरिद्र के साथ मेरी कैसी मैत्री? फिर भी, बाल्य मित्र होने के नाते तुम्हें आधा राज्य देता हूँ।'' यों उसने उसका मज़ाक उड़ाया।

द्रुपद चुप तो रह गया, पर अंदर ही अंदर उसके मन में क्रोधाग्नि भभकने लगी। द्रोण का अंत करने, उसे हराने के लिए अर्जुन जैसे दामाद को पाने के उद्देश्य से उसने एक पुत्री को जन्म देना चाहा। इसके लिए उसने तपोसंपन्न ऋषि मुनियों से सहायता माँगी।

आख़िर, याज नामक मुनि की सहायता से उसने पुत्र कामेष्टि यज्ञ किया। याज ने अग्निकुंड में जो आहुतियाँ डालीं, उससे एक हाथ में चमकती हुई तलवार, दूसरे हाथ में धनुष लेकर, मणिमय किरीट धारण किये रथ पर आरूढ़ होकर दिशाओं को भी प्रतिध्वनित करता हुआ, सिंहनाद करता हुआ एक योद्धा प्रकट हुआ। वही था धृष्टद्युम्न। फिर इसके बाद उसी अग्निकुंड से एक तेजमयी स्त्री निकली। वह थी द्रौपदी।

कुछ समय बीत जाने के बाद द्रुपद ने धृष्टद्युम्न को द्रोण के पास अस्त्रविद्याएँ सीखने भेजा। द्रोण उसे धनुर्विद्या सिखाने के पक्ष में नहीं था, पर अपकीर्ति के भय से उसे धनुर्विद्या सिखायी।

द्रौपदी के स्वयंवर मंडप में धृष्टद्युम्न ने घोषणा की कि इन पांचों बाणों को डोरी पर चढ़ा कर नीचे के जल में प्रतिबिम्ब को देखते हुए जो मत्स्य यंत्र को तोड़ेगा, उससे मेरी बहन का विवाह संपन्न होगा।

जब कोई राजा अथवा राजकुमार इस प्रयास में सफल नहीं हुआ, तब एक ब्राह्मण युवक धीरे से उठा और स्वयंवर स्थल की ओर बढ़ा। उसने

बड़ी आसानी से जल में मत्स्य के प्रतिबिम्ब को देख कर उसे भेद डाला।

फिर वह घोषणा के अनुसार द्रौपदी को साथ लेकर वहाँ से चला गया।

उस यंत्र को तोड़नेवाला और द्रौपदी से विवाह करनेवाला यह ब्राह्मण युवक कौन है, यह जानने के लिए धृष्टद्युम्न छिपकर उनके पीछे-पीछे गया। उनकी बातों से उसे ज्ञात हुआ कि वे पाँच भाई हैं। भोजन के बाद निद्रा में जाने के पहले वे युद्ध विद्याओं के बारे में और विविध शस्त्रों के प्रयोग के बारे में आपस में बातें करने लगे। जब उसे साफ़-साफ़ मालूम हो गया कि वे ब्राह्मण नहीं, बल्कि क्षत्रिय हैं, तब उसने आकर पिता को सारा विषय बताया।

कुरुक्षेत्र के युद्ध में पांडवों के पक्ष में वीरोचित युद्ध करनेवाला योद्धा था धृष्टद्युम्न। क्रौंच व्यूह, अर्धचंद्र व्यूह, बाज़ व्यूह, मकर व्यूह, वज्रव्यूह, सर्वभद्र व्यूह तथा कौरवों के अन्य व्यूहों को छिन्नभिन्न करनेवालों में से धृष्टद्युम्न प्रमुख था। उसने कुरुक्षेत्र के युद्ध में एक महत्वपूर्ण भूमिका निभाकर पांडवों की बहुत बड़ी सहायता की। द्रोण आदि वीरों से उसने वीरोचित लड़ाई लड़ी और अंत में उसी के हाथों द्रोण जैसे दुर्जेय महारथी का अंत हुआ।

भीष्म के पतन के उपरांत द्रोण सेनाध्यक्ष बना। जब वह धृष्टद्युम्न से भीषण युद्ध कर रहा था, तब धर्मराज ने कहा, ''अश्वत्थामा की मृत्यु हो गयी।'' यह विषादपूर्ण समाचार को सुनने के बाद द्रोण विरक्त हो गया और अस्त्रों के प्रयोग से संन्यास ले लिया। इसी को अच्छा अवसर मानकर धृष्टद्युम्न ने उसके सिर को काट डाला।

वास्तव में अश्वत्थामा नाम का हाथी मारा गया था, द्रोण का पुत्र अश्वत्थामा नहीं।

युद्ध की समाप्ति के बाद अश्वत्थामा जब दुर्योधन के पास आया तब उसकी दुर्दशा को देखते हुए उसपर दया आयी और उसने प्रतिज्ञा की कि सूर्योदय के पहले मैं पांडवों का नाश करके रहूँगा। तब वह पांडवों के शिविर में गया और निद्रामग्न धृष्टद्युम्न को मार डाला। विडंबना तो यह है कि वह द्रोण के पुत्र से ही मारा गया।

कहानी जो मुझे सबसे अधिक पसन्द थी - १४

मुम्बई के पोपुलर प्रकाशन के प्रबन्ध निर्देशक रामदास भटकल ने मराठी में एक हजार से अधिक तथा अंग्रेजी में भी एक हजार से ऊपर पुस्तकें प्रकाशित की हैं। मराठी प्रकाशन के लिए इन्हें ''महाराष्ट्र फाउण्डेशन ऑफ यू एस ए अवार्ड'' से पुरस्कृत किया गया है तथा फेडरेशन ऑफ इण्डियन पब्लिशर्स की ओर से ''आउटस्टैण्डिंग पब्लिशर इन इंग्लिश'' अवार्ड दिया गया है। इनकी अपनी मराठी कृतियाँ- 'जिग्सा' तथा 'मोहनमाया' क्रमशः महाराष्ट्र सरकार तथा मराठवाड़ा साहित्य परिषद द्वारा पुरस्कृत की गई हैं। इनके शोध प्रबन्ध ''गाँधी और उनके विरोधी'' पर इन्हें यूनिवर्सिटी ऑफ मुम्बई द्वारा डॉक्टरेट की उपाधि प्रदान की गई है।

शत्रुता का सेतु - मित्रता का सेतु

यात्रियों को ढोने के लिए मोटर परिवहन अभी अभी आरम्भ किया गया था। बसों में पुराने फैशन के भोंपू हुआ करते थे और न केवल भीड़ भरे बाजारों में बल्कि सुनसान सड़कों पर भी चालकों को भोंपू बजाने में मजा आता था। सड़कें उबड़-खाबड़ होती थीं और सवारियों को मजबूरन उछाल भरी बस यात्रा करने में आनन्द लेना पड़ता था।

वह क्षेत्र नदी-नालों के साथ आड़ा-तिरछा था। अधिकांश नदियों को नाव से पार करना पड़ता था। यात्रियों को नदी के दूसरे किनारे पर दूसरी बस लेनी पड़ती थी। कभी-कभी नाव इतनी बड़ी होती थी कि यात्रियों के साथ पूरी बस को नदी के पार ले जा सकती थी। उस नाव को 'जंगल' कहा जाता था जिसे दो एक-समान बनी बड़ी नावों को मिला कर बनाया जाता था। इन दोनों नावों पर लकड़ी का बना एक इतना मजबूत प्लैटफॉर्म रखा जाता था जो बस का भार सह सके।

जब चालक गोविन्दा एक नये मार्ग से बस चलाते हुए एक नदी के तट पर पहुँचा तो उसे यह देख कर आश्चर्य के साथ खुशी हुई कि नदी पर उस पार जाने लायक पुल बना दिया गया है और वह उस पुल पर से नदी के पार जा सकता है। उसने इसके पूर्व ऐसा पुल नहीं देखा था, इसलिए उसे थोड़ा सन्देह हुआ। उसने सावधानी से पुल पार करना शुरू किया।

दूसरे ही क्षण उसने देखा कि विपरीत दिशा से एक दूसरी बस उसकी ओर आ रही है। उसे विश्वास था कि उसकी बस के पहिये पुल पर पहले चढ़े थे इसलिए दूसरी बस को पीछे हट कर उसे पहले पुल के पार जाने देना चाहिये। उसे यह नहीं मालूम था कि दूसरी बस का चालक

गोपाल भी ठीक यही सोच रहा है। गोविन्दा और गोपाल दोनों चालकों ने ठसाठस भरी अपनी-अपनी बस पुल के बीचोबीच लाकर खड़ी कर दी।

दोनों उतर कर नीचे आये और विवाद करने लगे कि किसे पीछे हटना चाहिये और किसे आगे बढ़ना चाहिये। जो वाद-विवाद दोस्ताना बातचीत से शुरू हुआ था अब वह आक्रोश पूर्ण तू-तू मैं-मैं में बदल गया। वे ऐसी-ऐसी दलीलें देने लगे कि बड़े-बड़े वकील भी शरमा जायें। गोविन्दा का दावा था कि पुल के ऊपर पहले उसी ने प्रवेश किया था।

गोपाल का कहना था कि उसकी बस में अधिक यात्री हैं। गोविन्दा की बस बिलकुल नई थी। गोपाल ने दावा प्रस्तुत किया कि वह इस सड़क पर का पुराना चालक है और उसने ऐसी स्थिति का सामना कभी नहीं किया। इसलिए वह अपना पुराना कीर्तिमान क्यों तोड़े? शीघ्र ही यात्री भी इस संघर्ष में शामिल हो गयें। मैं-मैं तू-तू के बाद वे हाथापाई पर उतर आये। शीघ्र ही हो-हल्ला मच गया। दोनों बसों के शीशे टूट गये, अनेक यात्रियों को चोटें लगीं। कितनों के सामान फेंक दिये गये। किस्मत से किसी की जान नहीं गई। उस इलाके के ग्रामीण घायलों की सेवा में जुट गये।

इस स्थान से थोड़ी ही दूरी पर नदी थोड़ी संकीर्ण हो गई थी। हो सकता है कि कोई पेड़ नदी पर आड़े गिर गया हो जिस पर से नदी पार करने का रास्ता बन गया था। या सम्भवतः कुछ ग्रामीणों ने एक पेड़ काट कर नदी पार करने के लिए दोनों किनारों को जोड़ते हुए उस पर रख दिया हो। साहसी युवक पेड़ पर चलते हुए नदी को पार कर सकते थे, पर हाँ, थोड़ी सावधानी के साथ।

एक ढीठ-सा दीखने वाला बकरा, जिसे

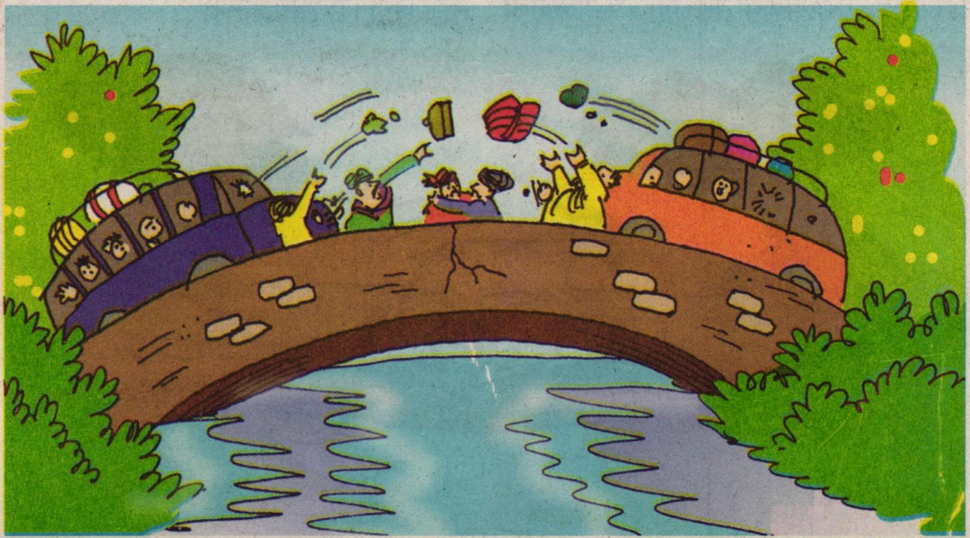

Exclusively for Chandamama Readers!

Do you want to be a whiz kid? SIP Academy has a lot of cool programmes, like an International Art Programme, International Abacus and Brain Gym. Enrol TODAY at any one of 455 centres across India and get 15% off!

सम्भवतः मानव-विषाणु से ग्रस्त होने के कारण दूर का ढोल सुहावना लगने लगा और जिसे नदी के पार की घास अधिक हरी-भरी दिखाई पड़ने लगी, पेड़ के पुल पर चढ़ कर आगे जाने लगा। वह पेड़ काफी चौड़ा था जिस पर वह सुरक्षित चल सकता था।

जब वह थोड़ी दूर जा चुका था, उसने देखा कि एक दूसरा खूबसूरत जवान विपरीत दिशा से आ रहा है। जब वह थोड़ी दूर और आगे बढ़ा, तो उसे सिर से सिर टकराने वाला खेल खेलने का मन करने लगा जिसमें उसे बड़ा मजा आता था। क्या उसे अपने सुन्दर सींगों पर गर्व नहीं था? क्यों न निर्णय कर लें कि कौन अधिक शानदार दिखता है- वह स्वयं या वह सामने से आनेवाला ढोंगी? अपने प्रतिद्वन्द्वी के निकट पहुँचने के थोड़ा पहले नीचे बहती नदी के जल-प्रवाह पर उसकी दृष्टि पड़ गई। यही हम दोनों की नियति बन जायेगी। उसने महसूस किया कि बचने का एक ही मार्ग है। उसने अपने सामने के पैर मोड़ लिये और पेड़ पर घुटने टेक कर अपने काबिल शत्रु को इशारा किया।

दूसरे बकरे ने भी नीचे नदी को झाँक कर देखा और चुपचाप घुटने टेके दोस्त को लांघ कर दूसरी ओर चला गया। दोनों दूर के सुहावने ढोल की ओर अपनी-अपनी यात्रा पर आगे बढ़ गये और यह निश्चय किया कि वह मैत्रीपूर्ण खेल फिर किसी अवसर पर खेलेंगे जब दोनों अधिक सुदृढ़ जमीन पर खड़े होंगे।

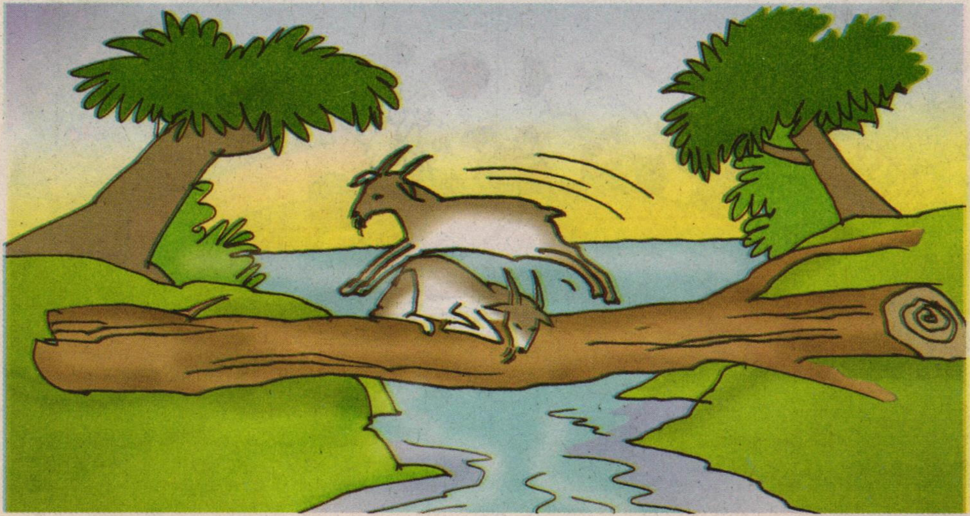

भगवान की वेशभूषा

हिन्दू भक्तगण सदा दिन में एक बार ही मन्दिर जाकर भगवान के दर्शन करते हैं। उस समय वे देवता या देवी की वस्त्र-सज्जा देखने में समय नहीं गंवाते। उड़ीसा के प्रसिद्ध पुरी के जगन्नाथ मन्दिर ने अभी हाल में स्वामी जगन्नाथ, स्वामी बलभद्र तथा देवी सुभद्रा द्वारा धारण किये गये वस्त्रों के ३२ विभिन्न सेट्स की प्रदर्शनी आयोजित की। भक्त गण इन्हें देख आनन्द से झूम उठे। एक भक्त ने विचार प्रकट किया, ''जब लोग मन्दिरों में जाते हैं, तब मुख्य उद्देश्य दर्शन होता है। इसलिए यह प्रदर्शनी शिक्षाप्रद और प्रेरणादायक है।''

दत्तक-ग्रहण के लिए बाघ

बाघ भारत का राष्ट्रीय पशु है। बीसवीं शताब्दी के पहले दशक में यहाँ के जंगलों में करीब ४० हजार बाघों के होने का अनुमान किया गया था। साठ वर्षों के बाद १९७२ में की गई पहली गणना के अनुसार केवल १८०० बाघ पाये गये। टाइगर प्रोजेक्ट नाम की एक योजना आरम्भ की गई और कुछ नेशनल पार्कों को बाघों के लिख आरक्षित रखे गये। इतना ही नहीं, बाघ को राष्ट्रीय पशु घोषित किया गया। आश्चर्य की बात है कि इस वर्ष के आरम्भ में बाघों के लिए आरक्षित स्थानों में केवल १,४०० बाघ रह गये। ऐसा सन्देह किया जाता है कि २,२०० से भी अधिक बाघ गायब हो गये हैं। क्या हमलोग अपने राष्ट्रीय पशु की रक्षा करने में सक्षम नहीं हैं? उड़ीसा के नन्दन कानन टाइगर रिजर्व ने एक अनोखी योजना की घोषणा की है; कोई भी व्यक्ति निश्चित रकम देकर बाघ को दत्तक बना सकता है।

महापुरुषों के जीवन की झाँकियाँ - ३३

विजेता की अन्तिम विजय

बाबर (१४८३-१५३०) का जीवन, निस्सन्देह, ऐसी सफलता का एक दृष्टान्त है जो साहस, कठिनाइयों का सामना करने की तत्परता तथा जोखिम उठाने के उत्साह से प्राप्त होती है। वह फरघाना का शाहाजादा और तेमरलेन का, (तैमूरलंग के नाम से भी प्रसिद्ध), जो समरकन्द का आतंक था, वंशज था। माँ की तरफ से वह बेरहम मंगोल विजेता चंगेज खान के खानदान से आता था।

फरघाना एक छोटी रियासत था जो इसे ११ वर्ष की उम्र में अपने पिता से विरासत में मिला था। पर, एक साजिश में वह महल से बाहर कर दिया गया। उसने सौ साल से ऊपर की एक बुढ़िया की कुटिया में शरण ली। उस बुढ़िया ने

बाबर के मन में आश्चर्यजनक हिन्दुस्तान को जीतने का सपना पैदा कर दिया। वह कहती, "तुम क्यों नहीं कर सकते जब कि तुम्हारे पूर्वज तैमूर और चंगेज ने किया?"

बाबर ने निश्चय किया कि वह अपनी किस्मत खुद बनायेगा। उसने एक छोटी सी सेना का संगठन किया और काबुल पर आक्रमण कर उसे जीत लिया। फिर वह भारत की ओर बढ़ा। तब उसकी उम्र २१ वर्ष थी। उस समय दिल्ली का सुलतान इब्राहिम लोदी था जो एक कमजोर शासक था। उसका दुश्मन उसका चाचा आलमखान खुद दिल्ली का सुलतान बनने का सपना देख रहा था। उसने, दौलत खान से, जो पंजाब का शासन देखने के लिए नियुक्त किया गया था, मिल कर भारत पर आक्रमण करने के लिए बाबर को आमंत्रित किया। इन विश्वासघातियों ने सोचा कि बाबर जब तैमूर और चंगेज की तरह नगरों को लूट कर चला जायेगा तब वे दिल्ली के सिंहासन पर कब्जा पर लेंगे। बाबर ने खुशी से उनका निमन्त्रण स्वीकार कर लिया और पंजाब पर अधिकार कर लिया। पर वह हिन्दुस्तान छोड़ कर जाना नहीं चाहता था। निराश दौलत खान बाबर का दुश्मन बन गया। बाबर लौट गया और एक बड़ी सेना लेकर पुनः भारत आया। उसने दौलत खान को परास्त

कर उसे कैद कर लिया और पानीपत की प्रसिद्ध लड़ाई में इब्राहिम लोदी को मार कर भारत में मुगल साम्राज्य की स्थापना की जो अंग्रेजों के आगमन तक कायम रहा।

हमलोग यहाँ उसके मानवीय पक्ष पर ध्यान केन्द्रित करते हैं जो जनश्रुति के अनुसार उसके जीवन के अन्तिम चरण में एक घटना से परिलक्षित होता है। अकबर का एक मंत्री अबुल फ़ज़ल ने भी, जो विद्वान और इतिहासकार था, इस घटना का जिक्र किया है।

बाबर का बेटा हुमायूँ बीमार पड़ गया। उस समय के सभी हकीमों और वैद्यों ने उसकी चिकित्सा की परन्तु उसकी हालत दिनोंदिन बदतर होती चली गई। बाबर समय की विडम्बना को समझते हुए असहाय बैठा रहा। उसने हिन्दुस्तान फतह करके, हजारों की जानें लेकर एक बहुत बड़े विजेता का फतवा हासिल किया था, पर अब एक इनसान, अपने ही बेटे की जान बचाने में अपने आप को बहुत छोटा और लाचार समझ रहा था। उसने चिकित्सकों से प्रार्थना की कि वे उसके बच्चे को बचाने के लिए हर सम्भव प्रयास करें और कोई दवा बनायें चाहे उसकी कीमत एक साम्राज्य की क्यों न हो।

हकीमों ने अपनी तरफ से कोई कोशिश नहीं छोड़ी। परन्तु अफसोस! कोई फल न निकला। आखिर में मुख्य हकीम ने खड़ा होकर सिर नीचा किये कहा, ''हुजूर, माफ करें, शाहजादे की जिन्दगी की अब कोई उम्मीद नहीं है। सच यह है, कि आखिरी क्षण कभी भी आ सकता है।''

हकीम की बात को सुनकर बाबर कुछ क्षणों के लिए सन्न होकर देखता रहा। फिर वह घुटने टेक कर बैठ गया और अपने हाथों को ऊपर उठा कर इबादत करने लगा, ''हे अल्लाह हो अकबर, मेरे बेटे की जगह पर मेरी जान ले ले। मैं आप से बेटे की जिन्दगी की भीख माँगता हूँ और इसकी जगह पर मैं मरने को तैयार हूँ।'' वह देर तक अल्लाह से यही दुआ माँगता रहा। फिर अपने बेटे के सिर पर हाथ रख कर चुपचाप बैठा रहा। उसकी आँखों से झर-झर आसूँ बह रहे थे।

कुछ घण्टों में हुमायूँ ने आँखें खोलीं और उसके स्वस्थ होने के लक्षण दिखाई देने लगे। पर बाबर की आँखों के सामने अन्धेरा छाने लगा और उसके बेटे के रोग के लक्षण धीरे-धीरे इस पर हावी होने लगे।

उसने खाट पकड़ ली और तीन महीनों के अन्दर प्राण छोड़ दिये। *(एम्.डी.)*

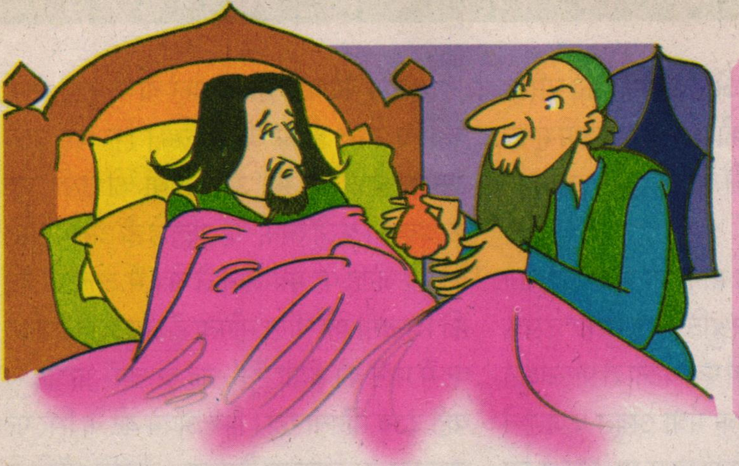

बीरबल की
कहानियाँ-१३

मुँहतोड़ जवाब

बीरबल बादशाह अकबर ने दरबार के दरबारियों में सबसे चतुर था। वह अक्लमन्द, हाजिरजवाब और तेज था। इसलिए वह बादशाह का प्रिय पात्र बन गया।

कुछ दरबारी बीरबल से जलते थे जिनमें शाही हकीम जालिम खान भी शामिल था। वे ऐसे हालात पैदा करने की ताक में थे जो बीरबल को शाही दरबार से निकलने के लिए मजबूर कर दे। यह मौका उन्हें तुरन्त ही मिल गया।

बादशाह बीमार पड़ गये। हक़ीम जालिम खान को बुलाया गया। वह महल में जाने को तैयार हो ही रहा था कि कुछ दरबारी उसके घर पर आ गये।

''मैं जल्दी में हूँ'', हकीम बोला, ''बादशाह सलामत बीमार हैं।''

''हम जानते हैं, इसीलिए हम आप से मिलने ज़ल्दी चले आये।'' एक दरबारी बोला।

''हमलोगों का समय आ गया है। हम जो कहते हैं, वैसा कीजिये। फिर देखिये, बीरबल कैसे जान बचाता फिरेगा!'' दूसरा दरबारी बोला।

''मैं बीरबल को गड्ढे में गिराने के लिए दुनिया के आखिरी छोर तक जा सकता हूँ।'' हक़ीम खीसें निकालता बोला।

सबसे बूढ़ा दरबारी हकीम के पास आकर उसके कान में कुछ बोला। हकीम की आँखें खुशी से चमक उठीं।

दरबारी विदा लेकर चले गये। हकीम महल की ओर दौड़ा। बादशाह पलंग पर लेटे हुए थे। एक मोटी कसीदाकारी की हुई रज़ाई से एड़ी से ठुड्डी तक शरीर ठका हुआ था। उनके चेहरे पर बेचैनी साफ दिखाई पड़ रही थी।

हकीम ने शहनशाह की नाड़ी की जाचँ-परख की और मन में यह निष्कर्ष निकाला कि शहनशाह की तबीयत कोई खास खराब नहीं है। काफी देर तक काम करने से थकान भर है और केवल कुछ दिनों के लिए विश्राम की जरूरत है। पर उसने बादशाह को यह सब नहीं बताया।

उसने बादशाह से कुछ और कहा, ''यह गम्भीर रोग है, आलमपनाह। मेरे पास इसकी सही दवा है। फिर भी....'' यह कह कर हकीम रुक गया। फिर बोला, ''इस दवा का असर बहुत

जल्दी होगा यदि इसे साँढ़ के दूध के साथ मिला कर लिया जाये।''

''साँढ़ का दूध?'' बादशाह को यकीन नहीं हुआ।

''हाँ, आलमपनाह! कुछ साँढ़ दूध देते हैं, हालांकि इन्हें खोज पाना कठिन है।'' हकीम ने बताया।

''लेकिन दूध देनेवाले साँढ़ का पता कौन लगायेगा?'' बादशाह ने पूछा।

''मैं समझता हूँ, आलमपनाह, कि इस कार्य के लिए सही व्यक्ति बीरबल है। वह अक्लमन्द है, चतुर है और बादशाह को उसने कभी निराश नहीं किया है।'' हकीम ने सलाह दी।

''बीरबल? क्या वह यह काम कर सकता है?'' बादशाह ने नाराज होते हुए पूछा।

''यदि कोई दूध देने वाले साँढ़ का पता लगा सकता है तो वह केवल बीरबल है, आलमपनाह!'' हकीम ने जोर देकर कहा। उसने बादशाह को एक सप्ताह तक पूरी तरह विश्राम करने की सलाह दी। ''यदि सम्भव हो सके तो इस चूर्ण को साँढ़ के दूध के साथ दिन में चार बार लेते रहिये। अन्यथा गाय के दूध के साथ ले सकते हैं हालांकि रोग देर से जायेगा।'' हकीम ने एक नौकर को चूर्ण का डिब्बा दिया और बादशाह को सलाम करके बाहर आ गया।

बीरबल को बुलाया गया। तुरन्त बीरबल बादशाह के कमरे में हाज़िर होकर, ''अब आपकी तबीयत कैसी है, शहनशाह?'' बीरबल ने बादशाह को सलाम करके पूछा।

''मैं ठीक नहीं हूँ बीरबल! हकीम कहता है कि मैं तभी जल्दी चंगा हो सकता हूँ यदि उसकी दवा को मैं साँढ़ के दूध के साथ खाऊँ।''

''साँढ़ का दूध? मैंने दूध देनेवाले साँढ़ के बारे में कभी नहीं सुना!'' बीरबल भौचक रह गया।

''हकीम कहता है कि दूध देने वाले साँढ़ दुर्लभ होते हैं। उसे विश्वास है कि ऐसे कुछ साँढ़ अवश्य हैं पर वे कहाँ मिल सकते हैं, उसे नहीं मालूम है। वह समझता है कि तुम इस काम को कर सकते हो और उसका पता लगा कर साँढ़ का दूध ला सकते हो।'' बादशाह ने बीरबल की ओर देखते हुए कहा।

''क्या हकीम ऐसा समझता है कि मैं साँढ़ का दूध ला सकता हूँ?'' बीरबल को उसके विरुद्ध साजिश का सन्देह हुआ। वह अपने सन्देह की पुष्टि कर लेना चाहता था।

''निस्सन्देह! क्या तुम मेरे लिए इतना नहीं

कर सकते बीरबल?''

''हुजूर, मैं आप के लिए कुछ भी कर सकता हूँ।'' बीरबल ने तुरन्त अपनी अक्ल का घोड़ा दौड़ाया और कहा, ''मैं वही करने जा रहा हूँ इसलिए समय नष्ट करना नहीं चाहता।'' इतना कह कर बीरबल ने झुक कर सलाम किया और बाहर निकल गया।

अब उसे पूरा विश्वास हो गया कि हकीम ने उसे फँसाने के लिए फन्दा डाला है। वह घर पहुँचने तक मार्ग में इसी पर विचार करता रहा और इससे बचने की एक योजना भी बना ली। घर पहुँचते ही उसने बेटी को बुलाया जो बहुत अक्लमन्द लड़की थी और उसे अपनी समस्या के बारे में बताया।

''क्या किसीने साँढ़ के दूध के बारे में सुना है?'' उसे आश्चर्य हुआ।

''हकीम ने इसके बारे में सुना है। लेकिन वह इसे नहीं ला सकता; वह चाहता है कि मैं जल्दी से इसे ले आऊँ।'' बीरबल बिल्कुल ठण्ढे और स्थिर मन से बोला।

''क्या हकीम आप से नफरत करता है? क्या वह आप का दुश्मन है?'' बेटी ने पूछा।

बीरबल ने सिर हिलाया। ''मैं तुम्हें बताता हूँ क्या करना है।'' उसने उसके कान में अपनी योजना समझा दी।

''ओह अप्पाजी, काश! मैं आप के समान बुद्धिमती होती?'' वह मुस्कुरा कर बोली।

''तुम एक तेज लड़की हो। आज रात में इस योजना को कार्यान्वित करने के लिए तैयार हो जाओ।'' बीरबल ने अपनी बेटी को प्यार से थपथपाया।

आधी रात जैसे ही होनेवाली थी कि बीरबल की बेटी एक विश्वासी सेविका को लेकर नदी की ओर चल पड़ी। उन दोनों ने कपड़ों की एक गठरी और कपड़ों से, पीट-पीट कर, गन्दगी निकालने के लिए एक मोटा-सा डण्डा ले लिया। वे एक ऐसे घाट पर गये जो महल के पास था। उन्होंने गठरी को पत्थर की सीढ़ियों पर रख दिया। फिर लड़की ने एक-एक कर कपड़े को पानी में डुबोया, उसे पत्थर पर फैलाया और उसे डण्डे से पीटना शुरू किया। इससे जोर-जोर से धब-धब की आवाज आने लगी। साथ ही, लड़की अपनी सेविका से ऊँची आवाज में बातचीत भी करती रही।

धब-धब और दोनों की बातचीत की आवाज से बादशाह की नींद में खलल पड़ गई। बादशाह का शयन कक्ष नदी के घाट से लगा हुआ था।

उन्होंने नाराज होकर नौकर को बुलाया। एक रक्षक तुरन्त अन्दर आया। "देखो, यह कैसी जोर-जोर से आवाज आ रही है?" बादशाह ने गुस्से में कहा।

रक्षक ने धब-धब की और जोर-जोर से हँसने की आवाज सुनी। उसने सिर हिलाया।

"जाओ, पता करो कौन इस समय कपड़े धो रहा है? वे क्यों इतना शोर मचा रहे हैं? मैं एक झपकी भी न ले सका। उन्हें जल्दी भगाओ।" बादशाह ने आग बबूला होकर हुक्म दिया।

रक्षक बादशाह को सलाम कर घाट पर गया। एक युवती कपड़े धो रही थी। पास में घुटने भर जल में खड़ी उसकी सेविका कपड़ों को खंगाल रही थी।

"अरी लड़कियो! क्या यह कपड़े धोने का समय है? दिन में क्यों नहीं धोती?" रक्षक ने भाले को हवा में उछालते हुए उन्हें डाँटा।

"क्या नदी केवल दिन में बहती है?" लड़की उस पर हँसती हुई बोली।

"बहस नहीं करो। परेशानी में पड़ जाओगी।" रक्षक ने चेतावनी दी।

"परेशानी? कपड़ों को धोने में मैं कभी परेशानी में नहीं पड़ूँगी, शहनशाह के राज्य में तो कभी नहीं। वे इतने निष्पक्ष और इन्साफ पसन्द हैं!" उसने दलील दी।

"तुम इतना हल्ला कर रही हो कि बादशाह की नींद में खलल पड़ गई।" रक्षक ऊँची आवाज में बोला।

"क्या तुम बिना शोर किये कपड़े धो सकते हो?" लड़की मुस्कुराई।

"तुम कौन हो?" रक्षक ने क्रोध में आकर पूछा। "एक लड़की।"

"मुझे तुम्हारे बाप को यहाँ बुला कर लाना पड़ेगा ताके तुम्हारी खोपड़ी में कुछ अक्ल डाल सके। बताओ किस की बेटी हो?"

"अपने बाप की।" पट जवाब आया।

"चुप रहो। मेरे साथ आओ। बादशाह ही तुम्हें ठीक करेंगे। जेल के तहखाने में सड़ने के लिए तैयार रहना।" उसने उसे साथ चलने का संकेत दिया।

लड़की के चेहरे पर भय का कोई चिह्न नहीं था। वह रक्षक के साथ चल पड़ी। शीघ्र ही वे बादशाह के शयन कक्ष में थे। लड़की बादशाह को झुक कर सलाम करने के बाद मुस्कुराती हुई खड़ी हो गई।

रक्षक ने बादशाह से कहा कि यह लड़की अपनी सेविका के साथ कपड़े धोती हुई पाई गई।

''रात में कपड़े क्यों धो रही हो?'' बादशाह ने तीखी आवाज में पूछा।

''शहनशाह, आज शाम को मेरे पिता ने एक शिशु को जन्म दिया।'' उसने कहा।

''बकवास!'' बादशाह ने डाँटा।

''शहनशाह, मैं शिशु की सफाई में लगी हुई थी और अपने पिता की सेवा...''

वह बादशाह का गर्जन सुन कर रुक गई। ''अपने पिता की सेवा में लगी थी जिसने बच्चे को जन्म दिया! ठीक है न?'' बादशाह कड़क कर बोले।

''जी हाँ शहनशाह!''

''और तुम चाहते हो कि मैं विश्वास कर लूँ कि तुम्हारे पिता ने एक बच्चे को जन्म दिया या...'' उनकी आवाज काँपने लगी, ''तुम बोलने में भूल कर गई? तुम्हारी माँ ने शिशु को जन्म दिया?''

''नहीं शहनशाह, मेरे पिता ने ही शिशु को जन्म दिया।'' लड़की के होठों पर मुस्कुराहट आ गई।

''नहीं शहनशाह, मैं आपसे सचाई बयान कर रही हूँ, मैं आपसे सचाई के सिवा और कुछ नहीं कह रही हूँ।'' वह अपनी बात पर अडिग रही।

''क्या हमलोग एक विचित्र समय में नहीं जी रहे हैं?'' वह फिर बोली, ''मैंने सुना है कि इस देश में साँढ़ के दूध से कुछ रोग जल्दी ठीक हो जाते हैं।'' लड़की ने बादशाह की तरफ देखा।

बादशाह ने संकेत समझ लिया। उन्होंने पूछा, ''क्या तुम बीरबल की बेटी हो?'' उनकी आवाज धीमी और शान्त थी।

''हाँ, शहनशाह, मुझे खेद है, मैंने आप की नींद में खलल डाल दी। परन्तु, जब साँढ़ दूध देने लगते हैं और मर्द बच्चे पैदा करने लगते हैं तब रातों को दिन में परिवर्तित करना पड़ता है,'' वह झुक कर बोली।

''तुम बहुत अक्लमन्द, तेज और होशियार लड़की हो। अपने पिता को बोल दो कि तुमने पहले ही मुझे साँढ़ का दूध दे दिया है।'' बादशाह ने सोने के मोहरों का एक थैला निकाला और उसके हाथ में पकड़ा दिया।

वह झुक कर सलाम करके बाहर आ गई। बादशाह अपने आप से बड़बड़ाने लगे, ''साँढ़ का दूध, बकवास! जालिम खाँ को यह बात कहाँ से सूझी? अथवा क्या वह बीरबल को परेशानी में डालने की कोशिश कर रहा था? कल मैं इसका पता लगाऊँगा।''

अगला दिन हकीम के लिए बड़ा अशुभ दिन बन गया।

कर्नाटक की एक लोक कथा

क्या यह स्वप्न था?

एक समय की बात है। एक ब्राह्मण प्रतिदिन सन्ध्या समय धार्मिक कथाएँ सुना कर अपनी जीविका चलाता था। वह अपने आसन के सामने अपनी दुशाला बिछा देता था, जिस पर श्रोतागण कथा के बाद कुछ सिक्के डाल जाते थे। कालक्रम में श्रोताओं ने देखा कि पंडित एक ही कथा को बार-बार दुहराता रहता है, और कुछ नई बात नहीं कहता, इसलिए श्रोताओं की संख्या धीरे-धीरे कम होने लगी। स्वाभाविक ही, उसकी आमदनी भी कम हो गई और वह कंगाल बन गया।

उसने सोचा कि कोई कठिन परिश्रम करना उसकी मर्यादा के विरुद्ध है। इसलिए उसने निकट के मन्दिरों में जाना शुरू किया और प्रार्थना में समय बिताने लगा। ''हे भगवती माते, यदि आप की यही इच्छा है कि मैं भूख से तड़प कर मर जाऊँ, तो मैं खुशी से, किसी के प्रति बिना किसी शिकवा-शिकायत के इस संसार से जाने को तैयार हूँ।'' सोने के लिए कहीं जाने से पहले उसने यह अन्तिम प्रार्थना की। एक दिन उसने मन्दिर में ही सोने का निश्चय किया। उस रात उसने एक सपना देखा जिसमें भगवती माँ प्रकट होकर बोली, ''वत्स, मैं नहीं चाहती कि तुम भूख से मरो। जो कुछ तुम्हें मुझसे प्राप्त हो, उसका एक भाग दान कर दो!'' इतना कह कर भगवती माता अदृश्य हो गई। उन्होंने यह नहीं बताया कि वह उसे क्या देगी और कितना देगी।

जब सुबह पंडित की नींद खुली तो उसने देखा कि सिर के नीचे रखी तकिये की तरह लपेटी हुई शॉल के निकट एक थैली रखी हुई है। उसने थैली को खोल कर देखा। उसमें चाँदी के एक सौ सिक्के थे।

उसने मन्दिर के अन्दर प्रतिमा के सामने जाकर कहा, ''हे भगवती माँ, मैं आप के दिये

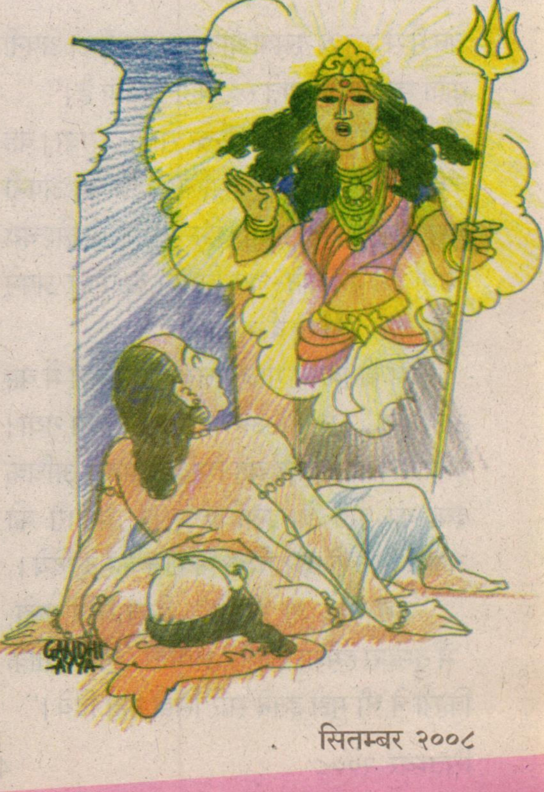

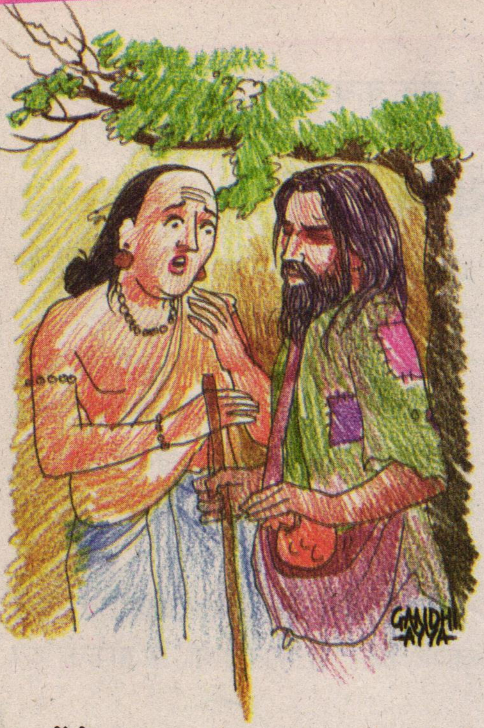

धन में से उसका दसवां भाग दान कर दूँगा। अपनी कृपा मुझ पर बरसाते रहें, यही प्रार्थना है।''

ब्राह्मण इसके बाद मन्दिर से बाहर गया। वह कई दिनों से भूखा था, इसलिए पहले वह अपनी भूख मिटाना चाहता था। फिर भी, उसने निश्चय किया कि वह दान-धर्म निभाने के पहले अपने ऊपर कुछ नहीं खर्च करेगा।

जैसे ही किसी भोजनालय की तलाश में वह आगे बढ़ा, उसे एक अन्धा भिखारी मिल गया। ब्राह्मण ने सोचा कि यह भिखारी सबसे अधिक दया का पात्र है। इसलिए उसने भिखारी को अपनी थैली से दस सिक्के निकाल कर दे दिये।

''तुम चाहे जो भी हो'', भिखारी ने कहा, ''मैं तुम्हारा हमेशा के लिए आभारी रहूँगा, क्योंकि किसी ने भी मुझे इतने सारे सिक्के नहीं दिये।''

ब्राह्मण ने उसे अपने सपने के बारे में बताते हुए कहा कि कैसे भगवती माता ने उस पर कृपा की। और यह भी बताया कि देवी ने उससे उनकी कृपा का एक भाग दान में देने का वचन ले लिया था।

''ओह! देवी ने तुम्हें एक सौ सिक्कों की थैली प्रदान की महानुभाव, क्या आप इस गरीब अन्धे को भगवती माते की दी हुई सिक्कों की थैली छूने देंगे?'' उस अन्धे ने उत्तेजित होकर कहा।

''देखो, यह लो, तुम इसे छूकर माँ के दिये वरदान का वजन महसूस कर सकते हो।'' ब्राह्मण ने उसे थैली देते हुए कहा।

अन्धे भिकारी ने थैली को अपने हाथ में लेते हुए कहा, ''हालांकि मैं थैली को देख नहीं सकता, पर मैं महसूस कर सकता हूँ कि यह कितना मुलायम है। महाशय, आप वास्तव में बड़े भाग्यशाली हैं!''

दूसरे ही क्षण, उसने सिक्कों की थैली को अपने कन्धे से लटकते अपने कपड़े के थैले में डाल लिया और चलता बना!

ब्राह्मण हक्का-बक्का रह गया। ''किन्तु, किन्तु..मेरे सिक्कों की थैली कहाँ लिये जा रहे हो?'' उसने उस अन्धे आदमी को पकड़ने के लिए उसके पीछे दौड़ते हुए कहा।

''कैसी थैली?'' अन्धे भिखारी ने चिल्ला कर कहा। ''तुमने तो कभी थैली नहीं दिया।''

''सिक्कों की थैली...जो मुझे भगवती माँ ने दी थी,'' उसने भिखारी के थैले से अपनी थैली निकालने की कोशिश करते हुए हकला कर रहा। परन्तु भिखारी ने अपने थैले को कस कर पकड़

रखा था इसलिए ब्राह्मण की सारी कोशिश बेकार हो गई।

तभी भिखारी ने चीखना-चिल्लाना शुरू कर दिया जिसे सुन कर लोगों की भीड़ इकट्ठी हो गई। भीड़ में से किसी ने पूछा, ''तुम दोनों क्यों झगड़ा कर रहे हो?''

पहले, भिखारी ने उत्तर दिया। ''देखो, यह आदमी मेरा थैला लूटने की कोशिश कर रहा है। मैं गरीब अन्धा भिखारी हूँ और यह मेरी पूरी जिन्दगी की कमाई झपट रहा है, जो मैंने अपने थैले में संभाल कर रखा है।''

भीड़ के आदमी ने फिर पूछा, ''कितने होंगे?''

भिखारी झट बोला, ''हे सज्जन महोदय, मैं समझता हूँ, इसमें नब्बे सिक्के होंगे।'' फिर उसने अपने कपड़े के थैले में सिक्कों वाली थैली निकाली और भीड़वाले आदमी को थमा दी।

उस आदमी ने गिनना शुरू किया, ''एक, दो, तीन...नवासी, नब्बे। तुम ठीक कहते हो। नब्बे सिक्के हैं।'' फिर उसने सिक्कों की थैली भिखारी को पकड़ा दी और ब्राह्मण की ओर मुड़ कर कहा, ''महोदय, अब आप क्या कहते हैं?''

ब्राह्मण ने कहा, ''यह मेरी थैली है। मैंने यह उसे दी थी, क्योंकि वह इसे छूकर देखना चाहता था, पर उसने झट से अपने बड़े थैले में डाल लिया।''

किसी प्रकार ब्राह्मण ने सोचा कि भीड़ को अपने सपने तथा सिक्कों की थैली के बारे में बताना तथा यह कहना ठीक नहीं होगा कि उसने देवी को दिये वचन के अनुसार भिखारी को दस सिक्के दान में दिये; फिर भिखारी ने उसकी सिक्कों की थैली को स्पर्श करने का अनुरोध किया। यदि वह इन सारी बातें खोल दे तो वे सब उसका केवल मजाक उड़ायेंगे।

''छी! छी! तुमने एक अन्धे भिखारी को लूटने की कोशिश की? तुम्हें शर्म आनी चाहिये!'' उस आदमी ने जाते-जाते ब्राह्मण को धिक्कारा। भीड़ के लोग भी चले गये।

भिखारी भी चलता बना, पर ब्राह्मण हक्का-बक्का सा होकर यह सोचता रहा कि वह कैसे

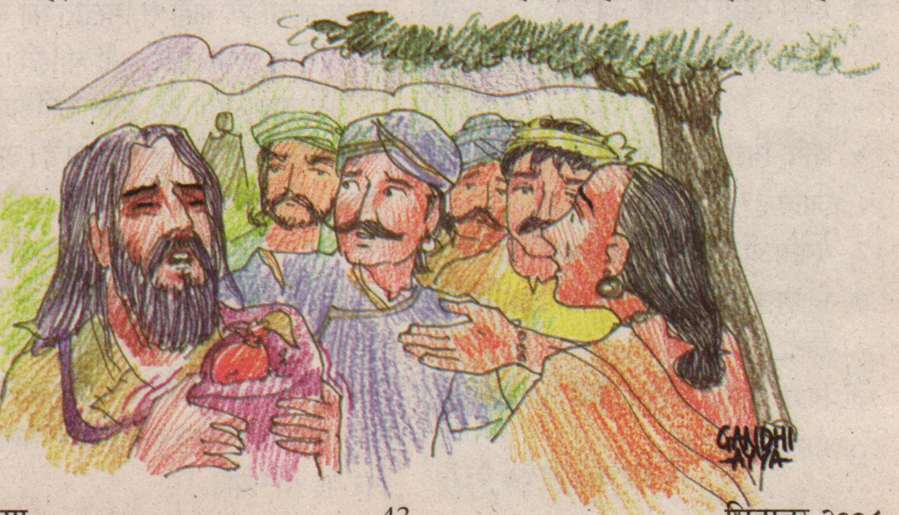

अपने भारत को जानो
प्रश्नोत्तरी

इस महीने में प्रश्नोत्तरी पुराणों पर आधारित है।

१. कौन देवता सात घोड़ों के रथ की सवारी करते हैं?
२. कृष्ण के गुरु कौन थे?
३. किस देवता के तीन नेत्र हैं?
४. पुराणों में वर्णित पंच कन्याएं कौन-कौन हैं?
५. योग-विज्ञान के संस्थापक किन्हें माना जाता है?
६. देवताओं के नामी चिकित्सक कौन थे?
७. विष्णु के चारों हाथों में क्या-क्या वस्तुएँ रहती हैं?
८. किस देवता को सभी रोगों का विनाशक माना जाता है?

(उत्तर पृष्ठ ७४ पर)

भिखारी की तलाश करके उसे भी वैसे ही मूर्ख बनाये जैसे भिखारी ने चालाकी से उसे ठगा था।

दिन भर ढूँढ़ने के बाद आखिर भिखारी के ठिकाने का पता लगा लिया जो बजार के पास एक झोंपड़ी में रहता था। वह एक चटाई पर बैठा हुआ था और उसके कन्धे का थैला उसके बगल में पड़ा था। उस समय वह ब्राह्मण की छोटी थैली से सिक्के निकाल पर बाँस की अपनी लाठी के अन्दर डाल रहा था। यह स्पष्ट है कि लाठी खोखली थी और उसमें सिक्के भरे जा सकते थे। लाठी में सिक्कों को डाल देने के बाद उसे अपने पास रख कर वह सो गया।

ब्राह्मण ने उस स्थान को भली-भाँति समझ लिया और फिर चला गया। लेकिन भोर में फिर वह लौट आया और इन्तजार करने लगा कि कब भिखारी उठ कर अपने रोजमर्रे के काम पर जायेगा। भिखारी उठने के बाद तैयार होकर अपने काम पर लाठी लेकर चला गया। ब्राह्मण ने एक उपाय सोचा कि कहीं से भिखारी की लाठी की तरह बाँस की एक लाठी लानी चाहिये।

उसे याद आया कि उसने कहीं पास में ही बाँस के पेड़ों का एक झुरमुट देखा है। उसने वहाँ जाकर बाँस काट कर एक पोली लाठी बनाई। शाम होने पर वह झोंपड़ी के पास गया और भिखारी का इन्तजार करने लगा। जैसा कि पिछली रात वह देख चुका था, भिखारी ने आकर झोंपड़ी के एक कोने में रखी चटाई फैला दी, अपने थैले से एक-दो सिक्के निकाल कर लाठी में डाल दी और फिर वह सो गया।

जब भिखारी गाढ़ी नींद में सो गया, तब ब्राह्मण उसकी झोंपड़ी के अन्दर घुसा। उसने उसकी लाठी लेकर उसकी जगह पर अपनी लाठी रख दी और बाहर निकल गया। वह बाजार तक गया और लाठी के अन्दर के सिक्कों को निकाल कर अपने शॉल में रख लिया। उसने अपने नब्बे सिक्के गिन कर निकाल लिये और बाकी उसी के अन्दर छोड़ दिये। फिर, वह झोंपड़ी में पुनः गया जहाँ भिखारी अभी भी सो रहा था। उसने पुनः लाठियों की अदला-बदली की और वह मन्दिर की ओर चल पड़ा।

मन्दिर पहुँच कर उसने देवी की प्रतिमा के समक्ष प्रार्थना की, ''हे भगवती माते,कृपा करके मुझे क्षमा कर दीजिये, क्योंकि मैंने उतने ही सिक्के लिये हैं जितने आपने मुझे दिये थे और आप के आदेशानुसार जो मैंने उसे दान में दिये थे, उससे मैंने उसे वंचित नहीं किया। मैं हमेशा आप का आभारी रहूँगा।''

मात्र कुतूहलवश ब्राह्मण झोंपड़ी में फिर गया। भिखारी उस समय रोज की तरह अपनी लाठी लिये झोंपड़ी से बाहर आ रहा था। ब्राह्मण को शक हुआ कि शायद भिखारी को सिक्कों के गायब होने की खबर मालूम है या नहीं।

ब्राह्मण कुछ दूरी तक भिखारी के पीछे-पीछे जाता रहा। फिर वह भिखारी के पास जाकर बोला, ''क्या तुझे मेरे बारे में कुछ याद है? मैंने कुछ दिन पहले तुम्हें दस सिक्के दिये थे और बाद में मेरे नब्बे सिक्के तुमने लूट लिये।''

''हाँ, हाँ, मुझे याद है।'' भिखारी ने कहा। ''लेकिन जिस देवी ने तुम्हें जो सिक्के दिये थे वे सिक्के उन्होंने ले लिए। वह कल मेरे सपने में प्रकट हुई थी। मैंने उस दिन आप के साथ जो कुछ किया, उसके लिए मैं शर्मिन्दा हूँ। कृपया माफ कर दीजिये!''

किसी ने कहा है – ''अन्त भला तो सब भला।''

नेश्नल स्टेडियम

नेश्नल अक्यूवाटिक सेन्टर

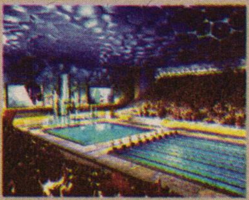

गगन नारंग

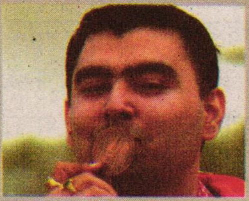

सुरेन्द्र सिंह

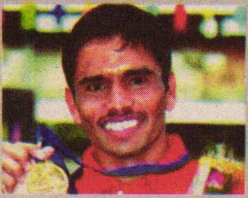

डोला बनर्जी

ओलम्पिक्स में भारत

इस अंक के प्रकाशन के पहले ही बिजिंग ओलम्पिक खेल खत्म हो चुके होंगे। भारत की ओर से चीन की राजधानी पहुँचे खिलाड़ी-प्रतियोगियाँ के दस्ते में ५७ सदस्य हैं जिनसे देश को बहुत अधिक पदकों की आशा नहीं है। उनमें से प्रायः अखबार की सुर्खियों में जो छाये रहे हैं उनमें से कुछ नाम हैं डोला बनर्जी (तीरन्दाजी), अंजु बाबी जॉर्ज (लम्बी कूद), सुरेन्द्र सिंह (१०,००० मी.), कौर मंजीत (४०० मी.), सैना नेहवाल (बैडमिण्टन), खुमुजाम तौम्बी देवी (जूडो), राज्यवर्धन सिंह राठौर, गगन नारंग तथा अंजलि भागवत (निशानेबाजी), वीरदावल खाडे (तैराकी), लियेण्डर पायेस, महेश भूपति तथा सानिया मिर्जा (टेनिस) और मोनिका देवी (कुश्ती)।

बिजिंग ओलम्पिक्स के परिणामों से अलग रह कर पिछले एक सौ से भी अधिक वर्षों के ओलम्पिक खेलों में भारतीय प्रदर्शन पर एक विहंगम दृष्टिपात करना रोचक होगा। भारत ने सबसे पहली बार १९२० में (ऐण्टवॅप ओलम्पिक्स) दो एथलिट्स का एक दल भेजा। पेरिस के अगले खेलों में हमलोगों ने आठ एथलिट्स भेजे। एक भारतीय एथलिट, ऐंग्लो नॉरमान प्रिचर्ड इंग्लैंड की ओर से १९०० में पेरिस के खेलों में भाग ले चुका था और दो रजत पदक २०० मी. तथा २०० मी. हर्डल्स में जीत चुका था। भारत ने १९२८ में ऐम्सटरडम के खेलों में कमाल दिखाया जब हमारी हॉकी टीम ने स्वर्ण पदक जीता। हॉकी

बर्लिन ओलम्पिक्स (१९३६) में विजय प्राप्त हॉकी टीम

को उसी वर्ष प्रतियोगी खेलों में शामिल किया गया था। टीम का कप्तान जयपाल सिंह था। अगले लगातार पाँच ओलम्पिक खेलों में भारत स्वर्ण पदक लेकर अपनी श्रेष्ठता बनाये रहा। 'हॉकी का जादूगर' ध्यानचन्द ने १९३२, १९३६, १९४८ (१९४० तथा १९४४ में विश्वयुद्ध के कारण खेल बन्द रहे) के खेलों में अहम भूमिका निभाई। भारत ने १९६४ (टोकियो) तथा १९८० (मास्को) में स्वर्ण जीता। रोम ओलम्पिक्स १९६६ में भारत ने रजत तथा मेक्सिको (१९६८) और म्यनिक (१९७२) में केवल कांस्य लिया। एथेन्स (२००४) में भारत का स्थान सातवां था। अब, भारत की टीम २००८ के खेलों में भाग लेने के योग्य भी नहीं मानी गई।

हॉकी के पदकों के अतिरिक्त, भारत ने अब तक एथलेटिक्स में २ रजत तथा कुश्ती, निशानेबाजी, भारोत्तोलन तथा टेनिस में ४ कांस्य जीते हैं। विजेता थे दादा साहेब जादव, डॉ.कर्णी सिंह, करनम मल्लेश्वरी तथा टेनिस जोड़ी लियेण्डर पायेस और महेश भूपति। पी.टी.उषा दुर्भाग्यवश १९८४ के लॉस एंजिलिस में ४०० मी. के हर्डल्स में एक सौवां सेकेण्ड से कांस्य लेने से वंचित रह गई। हेनरी रेबेलो (ट्रिपल जम्प, लन्दन १९४८), मिल्खा सिंह (४०० मी., रोम, १९६०), गुरबचन सिंह रंधवा (१०० मी. हर्डल्स, टोकियो, १९४) तथा श्री राम सिंह (८०० मी. मॉन्ट्रियल, १९७६) ने प्रशंसनीय प्रदर्शन किये। भारत की महिला ४०० मी. रिले टीम (पी.टी.उषा, एम.डी. वलसम्मा, वन्दना राव, शाइनी अब्राहम) का लॉस एंजिलिस, १९८४ में सातवां स्थान था। ये भारत के प्रतिष्ठित ओलम्पियन्स हैं।

चन्दामामा प्रश्नोत्तरी-६ जुलाई २००८ उत्तरः

१. आई एन एस चक्र; २. ४ दिसम्बर; ३. १९४८; ४. मानिक शॉ; ५. १९७८; ६. आई एन एस ब्रह्मपुत्र; ७. ले. ज. पंकज जोशी; ८. पृथ्वी; ९. १८ मई १९७४ बुद्धा इज स्माइलिंग पोखरन (राजस्थान में)।

अंजलि भागवत

अंजु बाबी जॉर्ज

सानिया मिर्जा

सैना नेहवाल

पायेस और भूपति

श्री चक्रपाणि
५ अगस्त १९०८ - २४ सितम्बर १९७५

अपने संस्थापक के स्मरण के क्षण

पिछली तीन पीढ़ियों के पाठक–बाल और वृद्ध समान रूप से चक्रपाणि नाम से अवश्य परिचित होंगे, जिन्होंने ६१ वर्ष पूर्व स्वर्गीय श्री बी.नागि रेड्डी के साथ मिलकर लोकप्रिय बाल पत्रिका की संस्थापना की। जबकि श्री नागि रेड्डी ने प्रकाशन तथा प्रबन्धन का दायित्व संभाला, श्री चक्रपाणि ने सम्पादक के रूप में विषय-सामग्री जुटाने का सारा भार अपने ऊपर लिया। उनके तेलुगु भाषा तथा साहित्य के ज्ञान ने *चन्दामामा* के तेलुगु संस्करण का स्तर बहुत ऊँचा उठा दिया, जिसका प्रकाशन सबसे पहले किया गया था। यह बड़ी दिलचस्प बात है कि उन्होंने संस्कृत, हिन्दी, अंग्रेजी तथा बंग्ला भाषाएँ अपने आप सीखीं। बंग्ला भाषा पर उनका इतना अधिकार हो गया कि उस भाषा की अनेक प्रसिद्ध कृतियों का तेलुगु में उन्होंने अनुवाद किया। वास्तव में, देश के कोने-कोने में *चन्दामामा* को पहुँचाने के लिए विभिन्न भाषाओं में इसके प्रकाशन का एक प्रमुख कारण था भाषाओं के प्रति इनका गहरा अनुराग।

आन्ध्र प्रदेश के तेनाली में अगस्त १९०८ में जन्मे अलुरी वेंकट सुब्बा राव की जन्म शताब्दी, तेलुगु साहित्यिक मण्डलियों द्वारा देश भर में मनाई जा रही है। अपने हजारों पाठकों की ओर से, अपने संस्थापक तथा तेलुगु साहित्य के प्रति इनकी सेवाओं के स्मरण के क्षण में *चन्दामामा* उनके साथ है।

- प्रकाशक

एक और शेर

''ब्रिटिश सरकार के विरुद्ध अद्‌भुत वीरता और सम्मान के साथ लड़नेवाले वृद्ध राजपूत का २६ अप्रैल १८५८ को देहान्त हो गया।'' होम्स ने 'सिपाही युद्ध के इतिहास' में यह लिखा। इस दिन अंग्रेजी ईस्ट इंडिया कम्पनी के शिविर में बहुत हर्षोल्लास मनाया गया। बिहार के दुर्दमनीय शेर राजा कुंवर सिंह के अन्ततः पतन से अंग्रेजों ने राहत की सांस ली और खुशी के मारे वे उछलने लगे। इस अस्सी वर्षीय नायक ने उन्हें आतंकित-सा कर दिया था, वह हमेशा उनके हर रणव्यूह से बच कर उनकी नाक के नीचे से निकल जाता था। अफसोस कि अपनी पूरी कोशिश के बावजूद वे उसे कैद न कर सके। उसकी सेना की हमेशा जीत हो जाती थी। व्हाइट ने हिस्टरी ऑफ द म्यूटनी में लिखा है, ''अंग्रेज़ों को इस अवसर पर बुरी तरह से शर्मनाक शिकस्त खानी पड़ी।''

अब अंग्रेज़ों ने उसके राज्य पर आक्रमण कर कब्जा करने की योजना बनाई। शीघ्र ही एक दुर्जेय सेना को बड़े धूमधाम से उस छोटे से राज्य पर धावा बोलने के लिए भेजा गया। वे कितने ही शिकस्तों का बदला लेने के लिए बेकरार थे। लेकिन उन्हें नहीं पता था कि एक और शेर, वैसा ही शूरवीर और निडर, वैसा ही उदात्त और देशभक्त उनकी प्रतीक्षा कर रहा था। वह और कोई नहीं, कुंवर सिंह का छोटा भाई राजा अमर सिंह था जिस पर जगदीश पुर के दिवंगत राजा का दायित्व आ पड़ा था। एक क्षण भी नष्ट किये बिना वह अपने आदमियों के साथ जनरल लुगार्ड की सेना का मुकाबला करने के लिए आगे बढ़ा। दोनों सेनाओं में भयंकर युद्ध हुआ। धीरे-धीरे अंग्रेज़ों की सेना हावी होने लगी। लेकिन अचानक शत्रु की सेना गायब सी हो गई। अदृश्य सेना के साथ कैसे युद्ध किया जाये?

इस बीच चतुराई में दक्ष राजा अमर सिंह ने अपने आदमियों को छोटे-छोटे समूहों में बँट जाने का आदेश दिया और फिर भिन्न-भिन्न दिशाओं में पर सुचिह्नित स्थानों की ओर बढ़ जाने को कहा। अंग्रेजों को उनका पीछा करना असम्भव सा लगा। पर यह देख कर वे स्तम्भित रह गये कि एक पूर्व नियोजित संकेत पर सभी क्रान्तिकारी शक्तिशाली व एक जुट होकर

अचानक प्रकट हो गये मानो आसमान से टपक पड़े हों। जैसे ही बहादुर राजा को फिर से घेर लिया गया, वह एक जंगल के छोर से बच कर दूसरे जंगल में चला गया। निराशोन्मत शत्रु ने उसे इस बार करीब-करीब जाल में फँसा लिया था। किन्तु चालाक राजकुमार फिर एक बार धोखा दे गया और अपने स्वामिभक्त घोड़े पर सवार हो जंगल में भाग गया। अंग्रेज उस समय हक्का-बक्का रह गये जब वह घूम कर फिर वापस आ गया और जंगल में शेर की तरह निर्भीक घूमने लगा। जनरल लुगार्ड और उसके आदमी थक कर अपमानित और निराश महसूस कर रहे थे। उसने अपने पद से तुरन्त त्याग पत्र दे दिया और वह इंग्लैण्ड वापस चला गया। उसकी सेना आराम करने के लिए शिविर में लौट गई।

दुस्साहसी राजकुमार को अपनी सेना को एकत्र करने और पुनर्गठित करने का अवसर मिल गया। शीघ्र ही शत्रु सेना को गलत दिशा में भटका कर उसने आरा पर आक्रमण कर दिया और वहाँ प्रवेश कर अपनी राजधानी जगदीशपुर की ओर बढ़ गया। फिर किले की ऊँची प्राचीर पर आजादी के झण्डे लहराने लगे। उसके नीचे दरबार के शानदार हॉल में स्वाधीन प्रजा का युवा राजा अमरसिंह सिंहासन पर आसीन था। ब्रिगेडियर डगलस और उसकी दस हजार सिपाहियों की सेना राजा को किसी तरह खत्म करने की प्रतिज्ञा कर ली। वास्तव में, बहादुर राजा का सिर लाने के लिए, चाहे जैसे भी हो, बड़े-बड़े इनाम घोषित किये गये। किन्तु किसमें इतना दम था? राजा अमर सिंह की युद्ध शैली ऐसी निराली और उनका जोश इतना असाधारण और भयावना था कि उनके दुर्बल से दुर्बल आदमियों में नया प्राण आ जाता था। यह सब देख कर उनकी प्रजा समझती थी कि कुंवर सिंह अभी मरा नहीं है।

ब्रिगेडियर डगलस और उसकी भारी सेना ने जंगलों को साफ कर दिया और सड़कें बना दीं और धीरे-धीरे एक एक पोस्ट से होते हुए राज्य की ओर वे बढ़ते गये। सात भिन्न-भिन्न सेनाएं सात विभिन्न दिशाओं से एक ही समय में धीरे-धीरे जगदीशपुर को घेरने लगीं। शहर में जानेवाली सभी सड़कों को बन्द कर दिया गया। राजा अमर सिंह सचमुच में घातक जाल में फँस चुके थे। अंग्रेजी सेना की राजधानी पर घेराबन्दी और सख्त होती गई। शहर से जंगल में जानेवाले सभी रास्तों पर आग लगा दी गई जिसे कोई पार नहीं कर सके। ऊँची लपटों के पार हथियारबन्द सैनिकों के जत्थे तैनात कर दिये गये। बचाव के किसी तरह के मार्ग की कल्पना नहीं की जा सकती थी। आकाश मार्ग से उड़ कर जाने के लिए राजा के पास पंख नहीं थे।

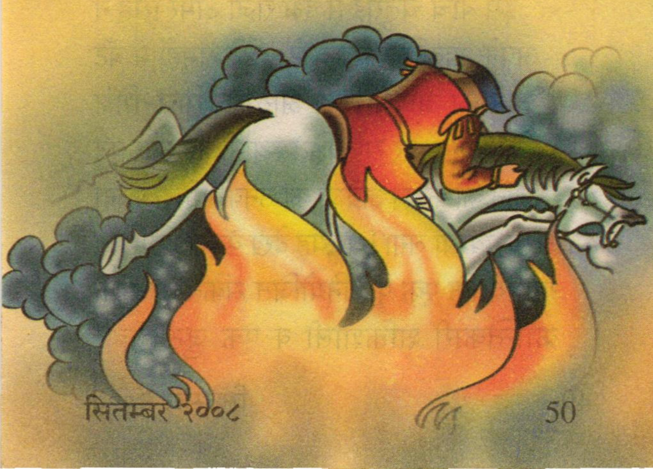

अगले दिन सेना की टुकड़ियाँ किले में घुसने वाली थीं। समय तेजी से बीत रहा था। तभी अंग्रेजों के शिविर के पिछले द्वार से सफेद घोड़े पर एक सिपाही चुपचाप आता दिखाई पड़ा और शत्रु सेना की पंक्ति के आगे से निकल गया। उससे प्रश्न करने पर उसका दो टुक उत्तर था, "मैं ड्यूटी पर हूँ।" परन्तु सवार अचानक रुक गया। सभी मार्गों पर आग की लपटों की दीवारें खड़ी थीं। बिना झुलसे उनसे होकर गुजरना असम्भव था। कोई परन्तु घोड़े और घुड़सवार के लिए कोई विकल्प न था। इस लपटों की दीवार को उन्हें पार करना ही था। सवार की प्यार की एक थपकी घोड़े की पीठ पर जैसे ही पड़ी कि घोड़ा उछल पड़ा और गगनचुम्बी लपटों के पार एक लम्बी छलांग लगाई। अंग्रेज़ सैनिक जब तक यह समझने में लगे हुए थे कि यह क्या हो गया, तब तक वह श्वेत घोड़ा अंधेरे में अदृश्य हो गया। इस प्रचलित दन्त कथा को बहुत लोग सच मानते थे।

दूसरे दिन आत्म विश्वास से भरी ब्रिटिश सेनाएँ सभी दिशाओं से एक साथ जगदीशपुर पर टूट पड़ीं। लेकिन जिस बब्बर शेर को वे पकड़ना चाहते थे, उसका कहीं नामो निशान तक न था। वह कहाँ उड़ गया था? कब और कैसे वह बच कर भाग गया? क्या विगत रात का सफेद घोड़े पर अंग्रेज वेशधारी सवार वही तो नहीं था? शीघ्र ही उन्होंने महसूस किया कि वही व्यक्ति राजा था जो उनकी आँखों में धूल झोंक कर उनके सामने से निकल भागा। वे अपनी मूर्खता पर पछताने लगे। राजा ने एक बार पुनः उनकी योजनाओं पर पानी फेर दिया। चकित होकर, डगलस ने राजा तथा उसके साथ सम्मिलित होनेवाले आदमियों का पीछा करने के लिए घुड़सवारों का एक दल भेजा।

राजा अमर सिंह पूरी तरह क्लान्त हो चुके थे। शत्रु सेना की नई-नई टुकड़ियाँ भूखे भेड़ियों की तरह बराबर उनकी टोह लेते रहे। उनके हथियार भी राजा की मामूली बन्दूकों की तुलना में बहुत श्रेष्ठ थे। फिर भी राजा के मन में समर्पण का विचार कभी नहीं आया और वे भयानक शेर की भाँति निरन्तर लड़ते रहे। इन्हें और इनकी सेना को नोनादी गाँव में खदेड़ दिया गया और इनके चार सौ आदमियों को कैद कर लिया गया। राजा का पता फिर भी नहीं चला। क्या इन्हीं लोगों में वह छिपा हुआ है? अंग्रेज़ों ने इनमें से तीन सौ आदमियों को क्रूरतापूर्वक कत्ल कर दिया, पर एक सौ आदमी खेतों में भाग गये और घायल शेरों की तरह दुश्मन पर टूट पड़े। अंग्रेज़ों की नई टुकड़ी के साथ इनका घमासान युद्ध हुआ। राजा के एक सौ बहादुर सैनिकों में से इस युद्ध में सिर्फ

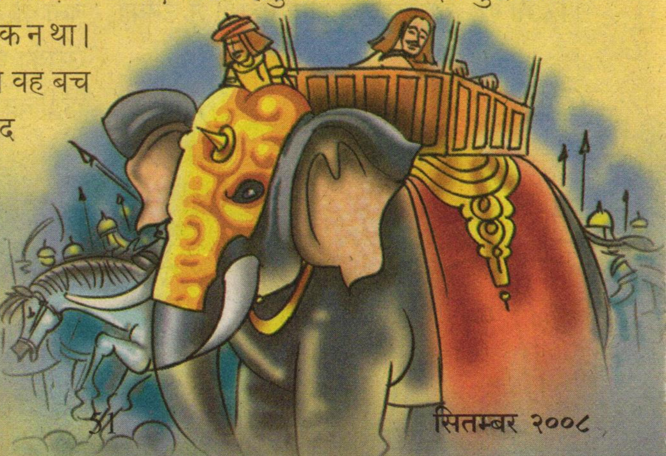

तीन बच कर भाग निकले। इन तीनों में से एक बहादुर राजा अमरसिंह था जो अब तक छद्म वेश में निरन्तर युद्ध करता रहा।

राजा की अंग्रेज़ों के साथ कितनी ही घमासान और रक्तपात भरी मुठभेड़ें हुईं जिनमें लगातार इन्हें अपने राज्य से बाहर खदेड़ दिया गया, फिर भी अपनी भूमि के चप्पा-चप्पा के लिए ये निरन्तर लड़ते रहे। एक बार अमर सिंह एक हाथी के ऊपर एक बॉक्स में छद्म वेश में यात्रा कर रहे थे। हाथी को शीघ्र ही शत्रु द्वारा कैद कर लिया गया। जब शत्रु के सिपाही हाथी को लेकर जा रहे थे, तब वे अचानक हाथी पर से कूद गये और पास के जंगल में गायब हो गये। उनके मार्ग रक्षक हक्का-बक्का होकर मुँह बाये रह गये। सचमुच वे बाल-बाल बचे!

शीघ्र ही वे अपने आदमियों के साथ कैमूर की पहाड़ियों में पहुँचे। स्थानीय लोग इनके दोस्त और सहायक बन गये क्योंकि वे जानते थे कि ये बहादुर लोग किसी बड़े उद्देश्य के लिए लड़ रहे हैं। जरा भी संकोच किये बिना, ''उस जिले की पूरी आबादी के लोग बराबर और सुनियमित ढंग से अंग्रेजों को गलत सूचना देकर भटकाते रहे।'' फिर भी दृढ़-संकल्प शत्रु सेना पहाड़ों में उनका पीछा करती रही। अमर सिंह किसी प्रकार सन्धि भी कर ले! शत्रु के मन में यह विचार आता। पर राजा के चट्टान जैसे अटल हृदय में इस विचार की हवा तक नहीं आई।

पर्वत की चोटियों और तराइयों की शिलाएं युद्ध के हथियारों की भयंकर गर्जनों से गूंज उठीं। एक दल मातृभूमि की आजादी के पावन उद्देश्य के लिए लड़ रहा था तो दूसरा दल लोभ वश होकर अपने उपनिवेश के विस्तार के लिए रक्तपात कर रहा था।

अफसोस! राजा अमरसिंह के आदमी एक-एक कर खत्म होते गये। जगदीशपुर के राजमहल की वीरांगनाएँ निराश होकर बन्दूकों के सामने खड़ी होकर फ्यूज में आग लगा दी।

लेकिन कहा जाता है कि राजा अमरसिंह फिर भी अंग्रेज़ों के हाथ न आ सके। वे उनके चंगुल से पुनः बच निकले। उनका क्या हुआ? उनके जीवन के आखिरी दिन कैसे व्यतीत हुए? यह एक रहस्य बना रहा। इतिहास भी इसके बारे में मौन है।

जो भी हो, अंग्रेजों ने सम्भवतः उसी नाम के एक क्रांतिकारी को पकड़ कर गोरखपुर में कैदी बना कर रखा। किन्तु, उस पर मुकदमा चले और उसकी पहचान साबित हो सके, इसके पूर्व ही कैदी का देहान्त हो गया। ***(ए.के.डी)***

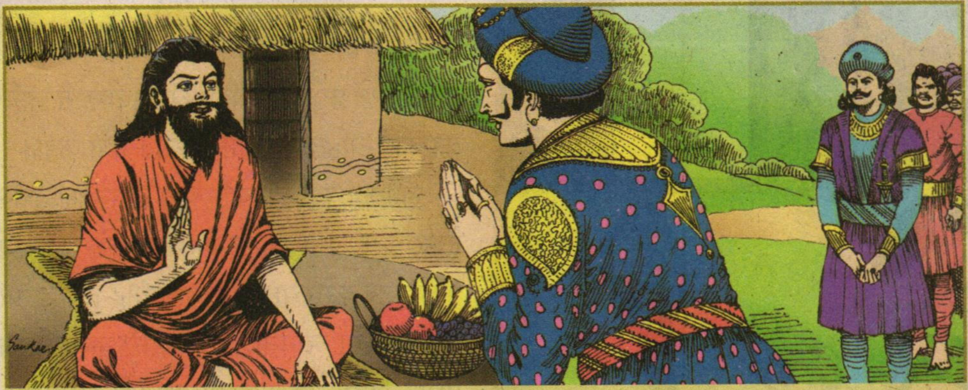

विश्वासघातक

काशी राज्य पर ब्रह्मदत्त राज्य करते थे। उन दिनों पाँच सौ व्यापारी दूसरे देशों के साथ व्यापार करने के लिए एक भारी नाव पर चल पड़े, लेकिन वह नाव समुद्र के बीच डूब गई। उन में एक आदमी को छोड़ कर बाकी सब लोग मछलियों के आहार बन गये। जो बच गया था, वह समुद्र के किनारे बसे करंबिया नगर में भीख माँगने लगा।

उस पर रहम खाकर नगर के लोग उसको अनेक प्रकार की चीज़ें देने लगे। पर उसने उन्हें लेने से इनकार किया, ''ये सब किसलिए! मुझे तो सिर्फ़ खाना-कपड़ा चाहिए।''

इस पर जनता ने सोचा, ''ओह, यह कोई महान तपस्वी होगा!'' इस प्रकार विचार कर उसके वास्ते एक पर्ण कुटी बनवाई और उसे सलाह दी कि उस कुटी में रह कर तपस्या करें।

उस कुटी में रहते हुए उस बैरागी ने अपना नाम करंबिया महामुनि रख कर जनता के दिल में आदर प्राप्त कर लिया। उसकी यह लोकप्रियता का समाचार सुनकर राजा भी महामुनि के दर्शन करने आने लगे। करंबिया की मित्रता प्राप्त करनेवालों में सर्पों के राजा पंडरक तथा गरुड़ों के राजा के रूप में जन्म धारण करनेवाले बोधिसत्व भी थे।

एक दिन गरुड़ राजा ने आकर करंबिया को प्रणाम किया और उस के पार्श्व में बैठकर कहा, ''स्वामि, हमारे गरुड़ों तथा सर्पों के बीच जब जब युद्ध हुआ, तब तब सर्पों से अधिक गरुड़ ही मरते रहे। इसका मतलब साफ है कि गरुड़ सर्पों को पकड़ने का रहस्य नहीं जानते। आप से हमारा यही निवेदन है कि आप सर्पों से यह रहस्य जानकर हमें बताने की कृपा करें।''

करंबिया ने गरुड़ राज की बात मान ली। तब गरुड़ राजा सन्तुष्ट होकर वहाँ से चला गया। इसके

जातक कथा

बाद जब सर्प राज करंबिया से मिलने आया, तब उसने पूछा, ''सर्पराज, मैंने सुना है, गरुड़ जब तुम लोगों को पकड़ते हैं तब वे अधिक संख्या में मर जाते हैं। आखिर इसका कारण क्या है? यह रहस्य बता दो-किस तरह तुम लोगों को पकड़ने से तुम लोग गरुड़ों के अधीन हो जाओगे।''

इस पर सर्पराज ने विनयपूर्वक उत्तर दिया, ''स्वामि, इस में एक रहस्य छिपा हुआ है। यदि मैं यह रहस्य आप को बता दूँ तो मैं अपनी समस्त जाति का द्रोही बन जाऊँगा और अपने विनाश का रहस्य प्रकट करनेवाला हो जाऊँगा। इसलिए कृपया इस बात पर जोर न दीजियेगा।''

''क्या तुम मुझ पर शक करते हो कि यह रहस्य जानकर मैं गरुड़ जाति को बता दूँगा? यही न? ऐसा कभी न होगा। मैं केवल कौतूहल वश यह रहस्य जानना चाहता हूँ। मुझ पर यह रहस्य प्रकट करने पर किसी भी प्रकार से तुम्हारी जाति का कोई अहित न होगा!'' करंबिया ने कहा।

सर्पराज करंबिया को रहस्य बताने का वचन देकर चला गया। दूसरे दिन जब फिर सर्पराज आया तब करंबिया ने यह बात याद दिलाई, पर सर्पराज मौन रह गया। जब तीसरी बार सर्पराज मिलने आया तब करंबिया ने सर्पराज से पूछा, ''मैं तीसरी बार वही सवाल करता हूँ, फिर भी तुमने वह रहस्य नहीं बताया, कारण क्या है!''

सर्पराज ने सकुचाते हुए कहा, ''महानुभाव, मुझे डर है कि आप हमारा यह रहस्य दूसरों पर प्रकट कर देंगे।''

''मैं इस बात का तुम्हें वचन देता हूँ कि यह रहस्य मैं अन्य लोगों पर कभी प्रकट न करूँगा।'' करंबिया ने आश्वासन दिया।

इस पर आश्वस्त होकर सर्पराज ने रहस्य खोल दिया, ''महानुभाव, तब तो सुन लीजिए। हम बड़े-बड़े कंकड़ निगलकर अपने शरीरों को भारी बनाकर लेटे रहते हैं। गरुड़ जब हम पर हमला कर देते हैं, तब हम मुँह खोलकर उनका सामना करते हैं! हमारे भारी शरीरों को ढोने के कारण उनके बदन का सारा पानी निकल आता है। इस वजह से वे मर जाते हैं। वे मूर्ख गरुड़ अगर हमारे सर दबोचने के बदले हमारी पूँछ पकड़ कर हवा में उड़ जाते हैं तो हमारे निगले हुए कंकड़ मुँह से नीचे गिर जायेंगे और हमारे शरीर हल्के हो जायेंगे। ऐसी हालत में बड़ी आसानी से गरुड़ हम को उड़ा ले जा सकते हैं।

यही हमारा रहस्य है। इसको न समझने के कारण ही गरुड़ हमेशा अपने प्रयत्न में असफल रहते हैं।''

सर्पराज के चले जाने के बाद गरुड़ राज ने आकर करंबिया से पूछा, ''महात्मा, क्या आपने सर्पराज से उनका रहस्य जान लिया है?''

इस पर करंबिया ने सर्पों का रहस्य गरुड़ राज को बता दिया।

''सर्पराज ने अपनी जाति के प्रति बड़ा अन्याय किया है। अपनी सारी जाति के विनाश का रहस्य खोल दिया है। मैं अभी जाकर उनको पकड़ लेता हूँ।'' यह कहकर गरुड़ राज वहाँ से उड़कर सर्पराज के पास पहुँचा और उसकी पूँछ पकड़ कर आकाश में उड़ गया।

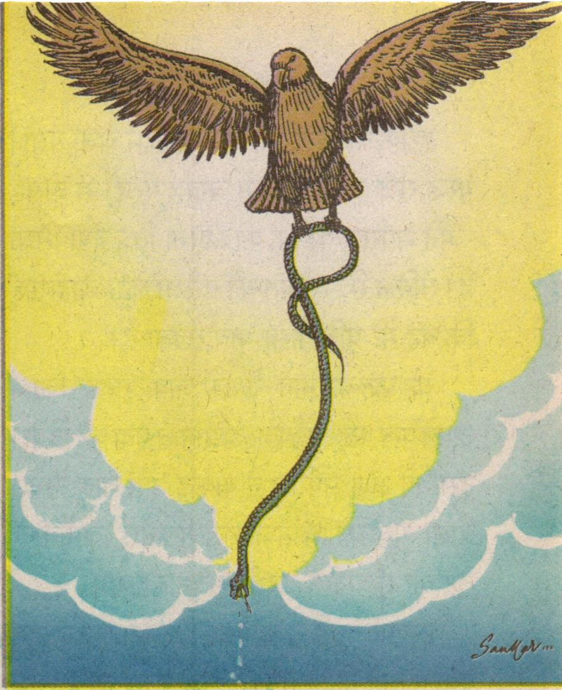

औंधे मुँह लटकनेवाले सर्पराज ने अपने निगले हुए कंकड़ों को उगल डाला, फिर चिन्तित होकर विलाप करने लगा, ''उफ़! मैंने अपने विनाश को स्वयं मोल लिया है! उस दुष्ट को महामुनि समझ धोखे में आकर अपना रहस्य खोल दिया। इस से मेरी सारी जाति का विनाश होगा। मैंने अपनी जाति के साथ द्रोह किया है।''

इस पर गरुड़ राज बोला, ''अरे मूर्ख, तुम अपना रहस्य उस कपटी संन्यासी पर खोल कर विलाप क्यों करते हो? मृत्यु सबके लिए अनिवार्य है। पर मानव का प्रधान धर्म विवेक है। तुम्हारी दुर्गति का कारण मैं नहीं हूँ और न संन्यासी ही है। बल्कि तुम्हारी मूर्खता है। प्रत्येक प्राणी के लिए अपने माता-पिता से बढ़कर प्रेम-पात्र कोई नहीं होते। उनसे भी तुम्हें अपना रहस्य बताना नहीं चाहिए। अपने बन्धु व मित्र हो सकते हैं। सुन्दर पत्नी हो सकती है। उन सब पर भी तुम्हें अपना रहस्य प्रकट नहीं करना चाहिए। इस प्रकार अपने रहस्य को छिपा सकनेवाला व्यक्ति ही अपने शत्रु को दूर रख सकता है।''

''महात्मा, मैंने आपके उपदेश को समझ लिया है। माँ अपने बच्चे के प्रति जैसा वात्सल्य दिखाती है, वैसी करुणा आप मुझ पर दर्शाइये।'' यों सर्पराज ने गरुड़ राज से प्रार्थना की।

''वैसे पुत्र तीन प्रकार के होते हैं, शिष्य, पालतू बच्चे और निजी बच्चे! तुम मेरे शिष्य बन गये हो, इसलिए मेरे पुत्र हो गये हो! इसलिए मैं तुम्हारे प्राण बचा रहा हूँ।'' यह कहकर गरुड़ राज ने सर्पराज को जमीन पर उतार दिया और अपने पंजे से उस को मुक्त कर दिया।

इसके बाद सर्पराज नाग लोक में चला गया। गरुड़ राज अपने लोक में जाकर गरुड़ों से बोला, "मैंने सर्पराज पंडरक को अपना मित्र बना लिया है। लेकिन मैं इस बात की परीक्षा लेना चाहता हूँ कि वह मेरे प्रति कैसा भाव रखता है।"

यह कह कर नाग लोक में जाकर गरुड़ राजा ने अपने पंख फड़-फड़ाकर झंझावात पैदा कर दिया। दूसरे ही क्षण सर्पराज ने कंकड़ और बालू निगल डाला, पूँछ को छिपाकर गेंडुली बनाई, जमीन पर लेट कर मुँह खोल कर के फुत्कारने लगा।

इस पर गरुड़ राज बोला, "सर्पराज, यह तुम क्या कर रहे हो? हमने तो मित्रता कर ली है। तुम मुझको मारने की तैयारी क्यों कर रहे हो?"

सर्पराज ने कहा, "दोस्त, विवेक शील व्यक्ति किसी पर विश्वास नहीं करता। तिस पर कल तक तुम मेरे शत्रु रहे, ऐसी हालत में मैं तुम पर कैसे विश्वास कर सकता हूँ?"

गरुड़ राज हँस कर बोला, "तुम मेरा सबक़ मुझ को ही पढ़ा रहे हो? चलो, हम उस कपटी संन्यासी से मिलेंगे।"

इसके बाद दोनों मिलकर करंबिया की कुटी में पहुँचे। सर्पराज ने करंबिया से पूछा, "मैं ने तुम्हारी वेष-भूषा को देख महान तपस्वी समझा और तुम पर अपना रहस्य खोल दिया। उस रहस्य को गरुड़ राज पर खोलकर तुमने मेरे साथ विश्वासघात क्यों किया?"

"मैं ने अज्ञानवश यह काम नहीं किया है! तुम दोनों मेरे मित्र हो, लेकिन गरुड़ राज के प्रति मेरे दिल में स्नेह भाव अधिक है! इसीलिए मैं ने तुम्हारा रहस्य गरुड़ राज पर खोल दिया है!" करंबिया ने उत्तर दिया।

"अरे दुष्ट! तुम ने सर्वस्व को त्याग दिया है, फिर भी मन में शत्रुभाव रखते हो ! तुम कैसे मुनि हो? तुम मुझे ही नहीं सारे जगत को धोखा दे रहे हो। इस अपराध में तुम्हारा सिर टुकड़ों में फट जाये!" करंबिया को सर्पराज ने गुस्से में शाप दे डाला।

फिर क्या था, दूसरे ही क्षण करंबिया का सिर फट गया। उसके नीचे की भूमि फट गई। इस पर तपस्वी सीधे अवीची नरक में चला गया।

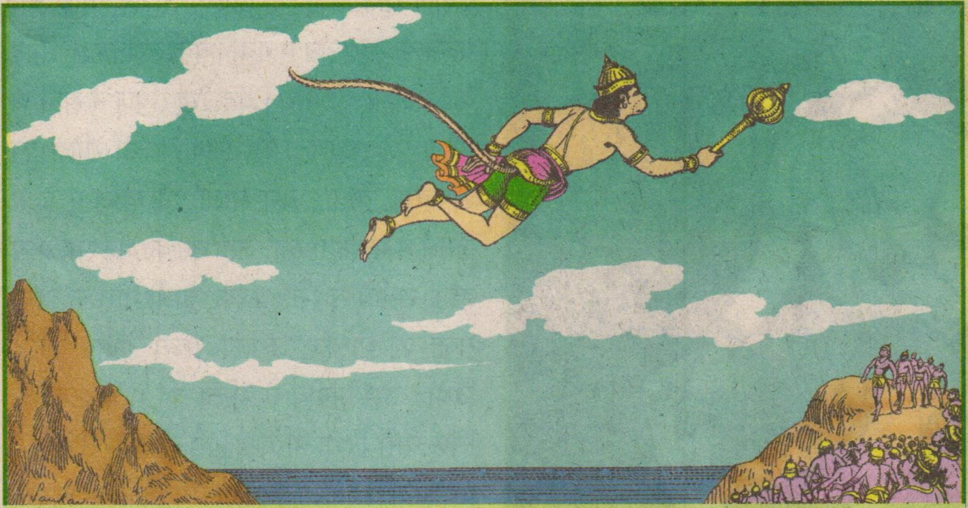

रामायण

इस बीच सीता दुख से विवश हो उठी। उसने सोचा या तो रावण नहीं तो राक्षस स्त्रियाँ उसको अवश्य मार देंगी और उसका राम की प्रतीक्षा करना बेकार है। यदि राम नहीं आये तो मेरा जीना व्यर्थ है। राक्षसों के हाथ मरने से तो अच्छा है आत्महत्या कर लूँ। यह सोचकर वह शिंशुपा वृक्ष के नीचे गई। आत्महत्या करने के लिए उसने अपने बालों की चोटी गले में लपेट ली।

इतने में उसको शुभ लक्षण दिखाई दिये। उसकी बायीं आँख और बायीं भुजा फड़कने लगी। ऐसे लक्षण दीखने पर पहले उसका शुभ हुआ था, इसलिए इन्हें देखकर, उसकी जान में जान आयी।

उसने गले में लिपटी चोटी हटा ली। हनुमान ने शिंशुपा वृक्ष पर चढ़े चढ़े यह सब देखा। सब सुना। पर उसे न सूझा कि क्या करे। उसे राम के बारे में कहकर, उनका सन्देश सीता को पहुँचाना था।

हनुमान ने सोचा, 'सीता से बिना बात किये, यदि चला गया, तो सीता को राम के बारे में नहीं मालूम होगा और वह दुखी होंगी। शायद आत्म हत्या ही कर लें। यही नहीं, राम भी अवश्य पूछेंगे कि सीता ने क्या कहा? यदि मैंने कहा कि मैंने सीता से बात ही न की, तो राम मुझे अपनी नज़रों से ही जला देंगे और अगर सीता से बात करना भी चाहूँ, तो राक्षस स्त्रियाँ उसके चारों ओर बैठी हैं। संस्कृत में अगर बात की गई, तो वे समझ न सकेंगी, यह तो ठीक है। पर सीता यह भी सोच सकती है कि रावण ही यों माया रूप में आया है।

सुन्दर काण्ड - ४

उसके भयभीत होकर चिल्लाने से राक्षस स्त्रियाँ हथियार लेकर, मुझ पर हमला कर सकती हैं। वे उसके हाथ से घायल होकर, राक्षस योद्धाओं को बुला लायेंगी। उनसे युद्ध करके थक जाने पर, हो सकता है कि मैं फिर समुद्र न पार कर सकूँ और अगर मैं राक्षसों के हाथ मारा गया, तो सीता को कौन खबर पहुँचायेगा। सीता को मेरी बात सुननी तो चाहिए। पर उसे मुझे देखकर डरना नहीं चाहिए, क्या ऐसा कोई रास्ता है?' हनुमान ने बहुत देर तक विचार करने के बाद एक मार्ग सोच निकाला। वह पत्तों के पीछे इस तरह छुपकर बैठ गया, ताकि उसे सीता देख न सके, फिर उसे देखते हुए उसने यों कहना शुरू किया।

दशरथ नाम का एक बड़ा राजा था। उसका बड़ा लड़का राम बड़ा सुन्दर और बाण विद्या में प्रवीण था। पिता की आज्ञा पर वह, भाई और पत्नी के साथ वन में गया। वहाँ उसने खर आदि कई राक्षसों को मारा। यह देख रावण ने सोने के हरिण की सहायता से उसकी पत्नी सीता का अपहरण किया। राम सीता को खोजता हुआ जंगल में भटकता रहा, जहाँ उसकी भेंट सुग्रीव से हुई। सुग्रीव से स्नेह करके, वाली नाम के वानर राजा को मारकर, उसका राज्य सुग्रीव को दे दिया। उस सुग्रीव ने सीता का पता करने के लिए चारों दिशाओं में हज़ारों वानर भेजे। उसी प्रयत्न में मैं सौ योजनवाले समुद्र को पार करके, इस लंका में आया और राम के दिये हुए वर्णन के आधार पर सीता को देख सका।

हनुमान के इन बातों के कहने पर सीता ने आश्चर्य और स्वाभाविक भय से सिर उठाकर, शिंशुपा वृक्ष की ओर देखा। उसे हनुमान दिखाई दिया। सीता को अपनी आँखों और कानों पर ही विश्वास न हुआ।

उसने सोचा कि वह सपना देख रही है और सपने में बन्दर का दिखाई देना अशुभ है। इससे वह डर गई। फिर वह जान गयी कि वह सपना नहीं देख रही है। फिर सोचा कि शायद उसे भ्रम हो गया है। चूँकि वह हमेशा राम के बारे में ही सोचती जा रही थी, इसलिए शायद उसे ऐसा भ्रम हुआ हो कि कोई और राम के बारे में उसे कह रहा हो।

इतने में हनुमान पेड़ पर से उतर आया। उसने थोड़ी दूर पर खड़े होकर, नमस्कार करके कहा,

"तुम कौन हो, जो यूँ फटी पुरानी साड़ी पहने, पेड़ की टहनी पकड़े खड़ी हुई हो? तुम किस जाति और गुण की हो? तुम देवी-सी जान पड़ती हो। तुम्हारा पिता कौन है? पति कौन है? बड़े दुख में हो? क्या तुम्हारा कोई बन्धु मारा गया है? यदि तुम जनस्थान से अपहृत सीता हो, तो तुरंत यह बता दो।"

सीता ने हनुमान को देखकर कहा, "मैं दशरथ की बहू हूँ। जनक की लड़की हूँ। राम की पत्नी हूँ। मेरा नाम सीता है। मेरी गृहस्थी के तेरहवें साल में, मेरे पति का राज्याभिषेक होना था कि दशरथ की पत्नी कैकेयी ने कहा कि यदि राम का पट्टाभिषेक किया गया, तो वह प्राण छोड़ देगी। उसने हठ किया कि राम को वनवास दिया जाये। पिता के कहने पर राम ने राज्य वापस दे दिया। उन्होंने वल्कल वस्त्र पहनकर, वनवास पर जाते समय मुझे अपनी माँ कौशल्या के पास रहने के लिए कहा। मैं राम का वियोग नहीं सह सकती थी, इसलिए मैं उनके साथ चली आयी। मुझसे पहले ही लक्ष्मण वल्कल वस्त्र पहनकर जाने को तैयार था। हम दण्डकारण्य में थे कि दुष्ट रावण मुझे यहाँ उठा लाया। वह रावण मुझे और दो मास जीने देगा, फिर मुझे मार देगा।"

सीता को दुखी देखकर, हनुमान भी दुखी हुआ। उसने उसका दुख शान्त करने के लिए कहा, "सीता देवी! मैं राम के दूत के तौर पर यहाँ आया हूँ। राम ने अपने कुशल समाचार भेजकर, तुम्हारे कुशल समाचार मालूम करके आने

के लिए कहा है। लक्ष्मण ने अपना साष्टांग प्रणाम कहा है।"

यह सुनते ही सीता को रोमांच हुआ। "अगर कोई जीवित रहे, तो सौ वर्ष में कभी न कभी तो आनन्द मिलेगा ही। यह मेरे बारे में बिलकुल ठीक है।" सीता ने कहा।

यह देख कि सीता को उस पर विश्वास हो गया है हनुमान उसके पास आया। परन्तु सीता ने फिर सोचा कि शायद रावण ही वानर रूप में आया है। उसे भय हुआ कि क्यों उसने उसके साथ आत्मीयों की तरह बात की। इसलिए वह अशोक वृक्ष छोड़कर नीचे बैठ गयी। उसे नमस्कार करते हनुमान को देखने का साहस न हुआ। उसने हनुमान से कहा, "तुम सचमुच रावण हो। अब अन्दर के रूप में आये हो। उस

दिन संन्यासी के रूप में आये थे। मैं पहले ही उपवास और दुख के कारण दुर्बल हूँ, क्यों मुझे यों तंग करते हो? तुम्हारा ऐसा करना ठीक नहीं है। यदि तुम राम के सच्चे दूत हो, तो उनके गुणों का वर्णन करो। राम और लक्ष्मण के बारे में बताओ। राम से तुम्हारा सम्बन्ध कब हुआ? तुम राम और लक्ष्मण को कैसे जानते हो? नर वानर का सम्बन्ध कैसे हुआ?'' सीता ने अपना सन्देह दूर करने के लिए हनुमान से ये प्रश्न पूछे। उसने सोचा कि यदि हनुमान इन प्रश्नों का सन्तोषजनक उत्तर दे देगा तो वह अवश्य राम का दूत होगा।

हनुमान ने राम के गुणों का वर्णन किया। राम का आपाद मस्तक वर्णन किया। सीता के अपहरण के बाद राम के ऋष्यमूक पर्वत पर का उसने सारा वृत्तान्त सुनाया। उसने कहा कि उसका नाम हनुमान है और वह सुग्रीव का मन्त्री है। फिर उसने राम की दी हुई अंगूठी दी।

हनुमान की बात सुनकर और राम की दी हुई अंगूठी देखकर सीता को हनुमान पर विश्वास हो गया। उसका मुँह खिल-सा गया। उसने हनुमान की प्रशंसा करते हुए कहा कि वह मामूली बन्दर नहीं है, वह बड़ा शक्तिशाली है, तभी तो वह समुद्र पार करके लंका आ सका। रावण भी उसका कुछ न बिगाड़ सकेगा। वह सपने देखने लगी कि राम तुरंत आकर उसकी रक्षा करेगा। अयोध्या से भरत भी एक अक्षौहिणी सेना भेजेगा। राम और लक्ष्मण युद्ध में रावण और उसके साथियों को मार देंगे। उसे फिर यह भी सन्देह हुआ कि राम उसको ले जायेंगे कि नहीं। यदि न ले गये, तो उसने प्राण त्यागने का निश्चय किया।

''राम हमेशा सीता को ही याद करते रहते थे। उसके चले जाने के बाद उन्होंने ठीक से खाना-पीना भी छोड़ दिया।'' हनुमान ने कहा, ''उनको यह मालूम होते ही कि सीता कहाँ है, वे यहाँ तुरंत आ जायेंगे।'' सीता ने हनुमान से कहा कि रावण ने उसे एक वर्ष की अवधि दी थी और उसमें से अब केवल दो मास ही रह गये हैं। इसलिए अब राम को तुरन्त आकर मुझको यहाँ से ले जाना चाहिये नहीं तो अवधि समाप्त होने पर वह हमें जीवित रहने नहीं देगा। हनुमान से सीता ने एक और बात कही कि लंका में उसका पक्ष लेनेवाले भी कुछ हैं। उनमें विभीषण, उसकी पत्नी, उसकी बड़ी लड़की नला और अविंध्य नाम के राक्षस हैं।

हनुमान ने सीता को आश्वासन देते हुए कहा, "अब आपको एक क्षण भी दुख नहीं करना चाहिए। मेरी पीठ पर सवार हो जाइये। एक क्षण में समुद्र पार हो जायेंगे।"

हनुमान छोटे आदमी के रूप में था, इसलिए सीता को उसकी बातों पर विश्वास नहीं हुआ। "मैं कैसे तुम्हारी पीठ पर सवार होकर, समुद्र पार कर सकती हूँ। आखिर हो बन्दर ही।"

यह सुन हनुमान को लगा जैसे किसी ने उसका अपमान कर दिया हो। वह सीता से कुछ दूर चला गया और उसने अपना शरीर बड़ा किया। उसका आकार विशाल हो गया और उसका शरीर आग की तरह चमचमाने लगा। "सीता देवी, आपको ही नहीं, इस सारी लंका को जड़ से उखाड़ कर ले जा सकता हूँ। आप डरिये नहीं, मेरे साथ चल चलिये।"

परन्तु सीता ने आपत्ति प्रकट करते हुए कहा, "जब, तुम मुझे अपनी पीठ पर सवार करके निकलोगे, तो सायुध राक्षस तुम्हे घेर लेंगे और मैं डरकर समुद्र में गिर सकती हूँ और ऐसा करने से तुम पर आपत्ति आ सकती है और मुझ पर भी। और अगर तुमने सब राक्षसों को मार भी दिया, तो उससे राम का ही अपयश होगा। इसलिए तुम्हारा वापस जाकर, राम को बुलाकर लाना ही उत्तम होगा।" सीता ने सोचा कि हनुमान के मन में यह सन्देह होगा कि वह परपुरुष है, इसलिए मैं उसे छूना नहीं चाहती। उसने इसलिए हनुमान से कहा, "तुम सोच रहे हो, कि मैं परपुरुष के

स्पर्श के भय से तुम्हारे साथ नहीं जा रही हूँ और तुम्हारे मन में यह प्रश्न भी होगा कि क्या रावण ने मुझे नहीं छुआ था? परन्तु तब कुछ और बात थी, मैं दुखी भी थी। मेरा पति मेरे पास न था। मैं लाचार और असहाय थी। मैं स्वेच्छा से उसके साथ नहीं आई। मैं अपहरण करके छल-कपट से लाई गई। मैंने यथाशक्ति विरोध किया। अब स्थिति भिन्न है। अब मैं तुम्हारे साथ स्वेच्छा से जाऊँगी। स्वेच्छा से परपुरुष का स्पर्श अमान्य होगा।''

हनुमान ने इसे उचित समझकर कहा, ''मैं परपुरुष हूँ और मेरी पीठ पर सवार होकर जाने में आपको आपत्ति होना ठीक ही है। ताकि राम यह जान सकें कि मैंने आपको देखा है और आपको बातचीत की है आप मुझे कोई निशानी दे दीजिए।''

ताकि राम को पता लग सके कि हनुमान ने सीता से बातचीत की है, सीता ने हनुमान को एक पुरानी घटना बतायी। यह घटना चित्रकूट पर्वत पर, गंगा के किनारे, एक ऋषि के आश्रम में जब राम और लक्ष्मण थे, तब हुई थी। एक दिन सीता वहाँ के पुष्प वन में विहार करके थक गई और राम की गोदी में बैठ गई। तब एक कौव्वे ने आकर, सीता की छाती को कुरेदा। सीता को गुस्सा आया, उसने उसको भगाया। परन्तु वह कौव्वा भागा नहीं और बार-बार उसके पास आता रहा। राम ने सीता को कौव्वे से परेशान पा, उसका उपहास किया। फिर उसने उसको आश्वासन दिया। फिर सीता राम की गोदी में सिर रखकर सो गई। उसके उठने पर राम उसकी गोदी में सिर रखकर सो गये। फिर वह कौव्वा आया और सीता की छाती का माँस कुरेद कर खाने लगा। उसकी छाती के घाव से इतना खून निकला कि राम खून से भीग गये।

सीता कौव्वे से इतनी तंग हो गई कि उसने राम को उठाया। सीता का घाव देखकर उसने क्रुद्ध होकर कहा, ''कौन दुष्ट है वह, जिसने यह घाव किया है?'' जब इधर उधर देखा, तो उसे एक कौव्वा दिखाई दिया, जिसके नाखून खून से लथपथ थे। राम ने दर्भासन से एक तिनका निकाला और ब्रह्मास्त्र मन्त्र पढ़कर उसे छोड़ दिया। वह दर्भ प्रलयाग्नि की तरह उसकी ओर गया।

दीवार

लक्ष्मी प्रसाद ने मेहनत करके बहुत सारा धन कमाया। इसलिए उस धन का अपव्यय उसे कभी पसंद नहीं था। घर का सारा ख़र्च उसके हाथ से ही किया जाता। पत्नी के हाथ फूटी कौड़ी भी देता न था।

एक बार लक्ष्मी प्रसाद की रसोइन ने अचानक काम पर आना बंद कर दिया। अब लक्ष्मी प्रसाद के लिए एक और रसोइन की ज़रूरत आ पड़ी।

दूसरे दिन अचानक एक अधेड़ उम्र की औरत लक्ष्मी प्रसाद के घर आ धमकी, बोली, ''मेरा नाम सावित्री है, आप के घर रसोई बनाने आई हूँ। आप की पुरानी रसोइन ने ही मुझे भेजा है।''

वह औरत साफ़-सुथरी और ईमानदार लगी। इस पर लक्ष्मी प्रसाद ने प्रसन्न होकर पूछा, ''रोज हमारे घर जो खाना बचता है, वह तुम ले जाओगी या नौकरानी को ले जाकर दोगी?''

सावित्री ने मुस्कुराकर कहा, ''मैं रसोई बनाती हूँ तो बचने की नौबत नहीं आती।''

सावित्री की किफ़ायत पर लक्ष्मी प्रसाद खुश हुआ और बोला, ''तुम इस जून का खाना बनाओ, कल से तुम काम पर लग जाओगी।'' इन शब्दों के साथ लक्ष्मी प्रसाद सावित्री को अपनी पत्नी के हाथ सौंपकर काम पर चला गया।

लक्ष्मी प्रसाद के बाहर जाते ही उसकी पत्नी ने सावित्री को समझाया, ''सुनो, नौकरी देने तक का काम मेरे पति का है। इसके बाद तुम पर मेरा अधिकार होगा। तुम अगर इस घर के भेद को खोल दोगी तो तुम्हारी नौकरी छूट जाएगी, समझी?'' सावित्री पर जल्द ही उस घर का भेद खुल गया। लक्ष्मी प्रसाद के नाम से ही सारा घर कांप उठता है। वह घर के किसी भी व्यक्ति को कोई कमी होने नहीं देता। फिर भी कोई भी उससे

२५-वर्ष पूर्व चन्दामामा में प्रकाशित कहानी

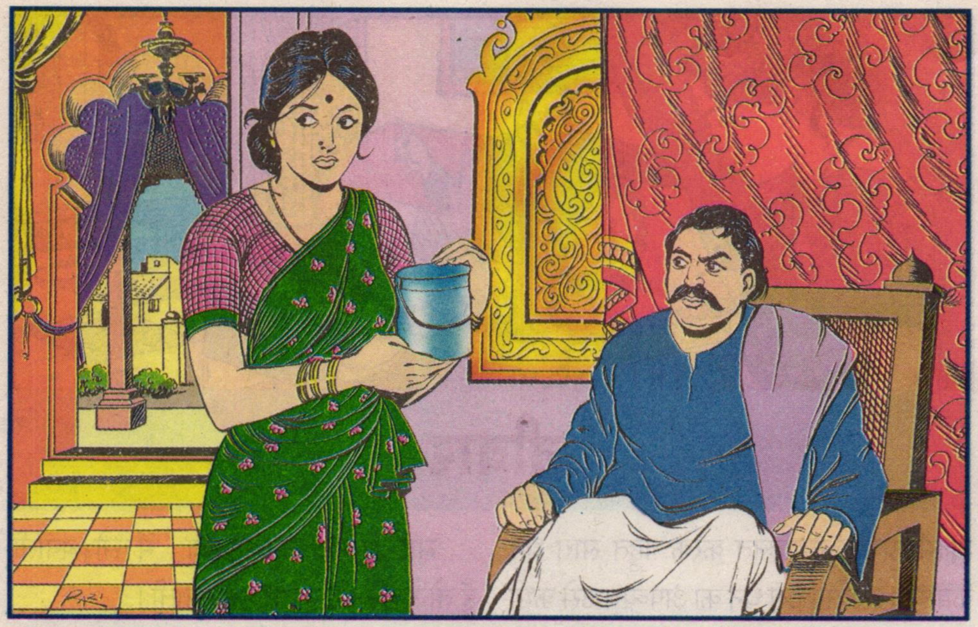

प्यार नहीं करता। इसका कारण यह है कि वह किसी पर भरोसा करके एक कौड़ी भी नहीं देता। घर के सभी लोगों का यही विचार है कि लक्ष्मी प्रसाद कंजूस है। उसके बाहर जाते ही बच्चे अट-पटी चीज़ें खरीद देने के लिए अपनी माँ को तंग करते हैं। उन बच्चों को खुश करने के लिए माँ घर के लिए मंगाई गई चीज़ें गुप्त रूप से बेचकर वे पैसे अपने पास रख लेती है। इस वास्ते वह घर की जरूरतों से बढ़कर ज़्यादा माल लक्ष्मी प्रसाद के हाथों से खरीदवा देती है। बची हुई चीज़ें नौकरानी के द्वारा दूकानों में बिकवा देती है।

यह भेद जब सावित्री पर खुला, उसने मालकिन से पूछा, "मालकिन! आप जरूरत से दुगुनी चीज़ें मालिक से ख़रीदवा देती हैं; मालिक को मालूम हो जाने पर वे यही सोचेंगे कि मैं ही इन चीज़ों को आवश्यक से ज़्यादा ख़र्च करती हूँ?"

"तुम्हें डरने की कोई ज़रूरत नहीं है। मालिक जो ख़र्च कर डालते हैं, उसके बारे में फिर कभी चिंता नहीं करते।" मालकिन ने समझाया।

मगर सावित्री को यह पसंद न आया कि परिवार के लोग मालिक को पराया समझते हैं।

लक्ष्मी प्रसाद की पत्नी ने उसी दिन खरीदे गये पाँच किलो घी में से आधा घी सावित्री के हाथ देकर बेच आने को कहा।

सावित्री ने घी बेच डाला। उसके पैसे व बर्तन लेकर वह अंदर आ गई। वह जानती थी कि मालिक लक्ष्मी प्रसाद बैठक में ही आराम करते होंगे। उसने घी के बेचे गये पैसों में से एक सिक्का लक्ष्मी प्रसाद को दिया और पूछा, "मालिक, यह खोटा सिक्का तो नहीं है न!"

लक्ष्मी प्रसाद ने सिक्के को खनखनाकर देखा, तब कहा, ''यह सिक्का तो चलता है। लेकिन यह तुम्हारे हाथ कैसे आ गया?''

''मैंने घी बेच दिया तो दूकानदार ने यह सिक्का मेरे हाथ दिया है।''

''घी क्यों बेचा?'' मालिक ने आश्चर्य से पूछा। सावित्री ने भय का अभिनय करते हुए सारा समाचार सुनाया और कहा, ''मालिक, यह कोई नई बात नहीं है। रोज ऐसा ही चलता है।''

लक्ष्मी प्रसाद क्रोध से भर उठा और अपनी पत्नी को बुलाकर उसे खूब डाँटा फटकारा। लक्ष्मी प्रसाद की पत्नी चुपचाप खड़ी रही।

''मालिक ! शांत हो जाइये। वास्तव में गलती तो आप की है। आप मलकिन के हाथ परिवार के अतिरिक्त ख़र्चं के वास्ते पैसे देते रहते तो वह ऐसा क्यों करतीं? बच्चे तो खाने व खेलने की चीज़ें खरीदने के वास्ते पैसों की माँग करते हैं। हर चीज़ के वास्ते पति से पैसे माँगना संभव नहीं हो पाता है। औरों की बात क्यों? मेरे पति अगर जब-तब मेरे हाथ थोड़े-बहुत पैसे देते होते तो मैं इस रसोइन के काम से ही छुट्टी पा जाती । मैं जानती हूँ कि मैंने आप के घर का यह भेद खोल दिया है, इससे मेरी यह नौकरी छूट जाएगी।'' यों कहकर सावित्री सारे पैसे लक्ष्मी प्रसाद के हाथ देकर अपने घर जाने लगी।

मगर सावित्री के ड्योढ़ी पार करने के पहले ही मालिक व मालकिन की पुकार एक साथ उसे सुनाई दी, ''सावित्री, कल तुम सही वक़्त पर काम पर आ जाओ।'' पति-पत्नी में यह परिवर्तन देख सावित्री ख़ुश हो गई, बीमारी की वज़ह से खाट पकड़े अपने पति के वास्ते मौसंबी ख़रीदकर घर चल पड़ी।

एक मौसंबी के छिलके निकालकर अपने पति के हाथ देते बोली, ''तुम्हारे हाथ-पैर लकवे के मारे बेकार हो गये और खाट पकड़ चुके हो, फिर भी आज तुम एक अच्छे उदाहरण बन गये हो! तुम्हारा नाम लेकर आज मैंने एक दंपति के बीच की दीवार को तोड़ डाला।''

सावित्री के मुँह से सारी कहानी सुनकर उसका पति भी खुश हो उठा।

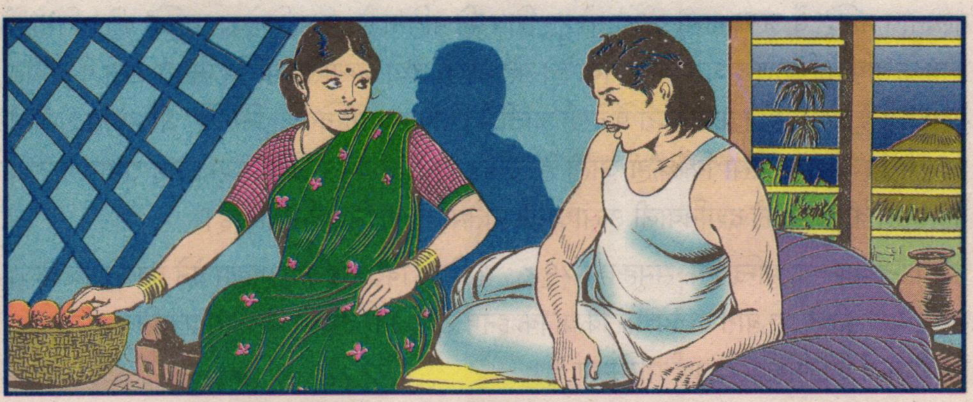

पट्टाडक्कल

कर्नाटक में बीजापुर जिला ५४३ ए.डी.से ७५७ के बीच दो शताब्दियों तक चालुक्य साम्राज्य का अंग था। वे बादामी से शासन करते थे। कुछ समय के लिए यह पल्लव वंश के अधीन था। राजा विक्रमादित्य ने उन्हें परास्त कर दिया। एक नई राजधानी स्थापित की गई। इसका नाम पट्टाडक्कल रखा गया जो पट्टाडा (नगर) तथा किसुबोलाल (माणिक्य का मुकुट) से ग्रहण किया गया।

चालुक्य राजा कला तथा शिल्प के बड़े संरक्षक थे। उनकी वास्तुकला शैल कर्तन शैली से संरचनात्मक निर्माण में परिवर्तित हो गई थी। यहाँ के निर्मित मन्दिरों में रेखा, नागरा, प्रसादा तथा विमना शैलियों का सम्मिश्रण पाया जाता है। विमना शैली शुद्ध दक्षिण शैली मानी जाती है। नागरा उत्तर की इण्डो आर्यन शैली है।

दस मन्दिरों का एक समूह, जिनमें अधिकांश के इष्ट शिव हैं, पट्टाडक्कल में है जो बादामी से २२ कि.मी. दूर है। इनमें सर्वश्रेष्ठ विरूपाक्ष मन्दिर है जो राजा विक्रमादित्य द्वितीय की रानी लोकमहादेवी द्वारा निर्मित किया गया था। यह नटराज, उग्र नरसिंह तथा लिंगोद्भव जैसी मूर्तिकलाओं से भरा पड़ा है। एलोरा में राष्ट्रकूट वंश द्वारा निर्मित कैलासनाथ मन्दिर के लिए यह नमूना बन गया। विक्रमादित्य की दूसरी रानी त्रिलोक्या महादेवी द्वारा निर्मित मल्लिकार्जुन मन्दिर विरूपाक्ष मन्दिर का छोटा रूप है। गल्गनाथ मन्दिर में अन्धकासुर को मारते हुए शिव की प्रतिमा है। कडासिद्धेश्वर मन्दिर की प्रतिमा में शिव के हाथ में त्रिशूल दर्शित किया गया है। यह मन्दिर तथा जम्बूलिंग मन्दिर नागरा शैली में निर्मित किये गये हैं जो ऐयहोल के मन्दिरों में देखी जाती है। पापनाथ मन्दिर का निर्माण, जो नागरा शैली में आरम्भ किया गया जैसा कि कहा जाता है, द्रविड़ शैली में बदल दिया गया। यह रामायण तथा महाभारत के दृश्यों को दर्शानेवाली असाधारण प्रतिमाओं के लिए विख्यात है।

पट्टाडक्कल के मन्दिरों के समूह को १९८७ में विश्व विरासत का ओहदा देने का निर्णय करते समय यूनेस्को ने इस बात पर विचार किया कि इनमें उत्तर और दक्षिण भारत में प्रचलित वास्तुकला की शैलियों का सामंजस्य पूर्ण सम्मिश्रण है।

प्रमोद-सरला

एक दिन दुपहर को एक साधु जब शहर की ओर जा रहा था तब चलते-चलते थक गया और पास ही की उजड़ी सराय में थोड़ी देर बैठकर थकावट दूर करने चला गया और वहाँ के चबूतरे पर बैठ गया। पास ही के बरगद के पेड़ से ठंडी हवा आ रही थी तो वह लेट गया। थोड़ी देर के बाद उसे लगा कि कोई उसके चेहरे पर पानी छिड़क रहा है तो वह चौंककर उठ गया।

पास ही के कुएँ से दो भूतों ने बाल्टी से पानी खींचा और साधु के मुँह पर डाल दिया। साधु के निद्रा-भंग में सफल दोनों भूत अपनी सफलता पर बहुत ही खुश होते हुए कूद रहे थे। साधु ने अपने क्रोध को काबू में रखते हुए कहा, ''मैंने तुम्हारा क्या अपकार किया? मेरे साथ क्यों यों बर्ताव कर रहे हो? क्या इतना भी नहीं जानते कि सोते हुए आदमी को जगाना पाप है?''

''पाप-पुण्य से हम बिलकुल ही अपरिचित हैं। दूसरे आदमी को सताने में हमें मज़ा आता है। हम जो चाहते हैं, करेंगे? तुम कौन होते हो, हमसे पूछनेवाले?'' भूतों ने एक साथ पूछा।

''मैं कौन हूँ? तुम लोगों ने जो अपराध किया, उसके लिए तुम्हें कड़ी सी कड़ी सज़ा दे सकता हूँ, दुखी कर सकता हूँ। चूँकि मैं एक अच्छा और उदार आदमी हूँ, इसलिए चुप रह गया। भविष्य में ही सही, अच्छा व्यवहार करना'', साधु ने गंभीर स्वर में कहा।

''वाह रे वाह! हमें ही धमकी देते हो ! अपनी अच्छाई के बारे में बढ़ा-चढ़ाकर बातें करने लग गये? तुम जैसे कितने ही आदमियों को हम देख चुके'', भूतों ने कहा। फिर भूत व्यंग्य-भरे स्वर में हँसने लगे।

''अपनी अच्छाई थोड़ी देर के लिए अलग

विश्वंभर

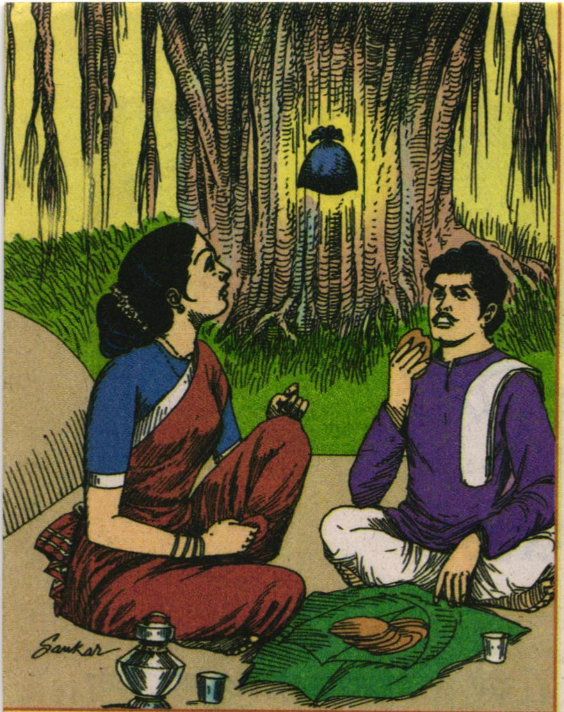

रख देना। और दिखाना कि तुमसे क्या हो सकता है, तुम कर क्या सकते हो?'' कहती हुई भूतनी सरला साधु की लंबी दाढ़ी को पकड़कर खींचने लगी और उसके चारों ओर घूमती हुई ताली बचाने लगी।

भूतों की चेष्टाओं ने साधु में हठ बढ़ा दिया। उसने सिर हिलाते हुए कहा, ''मैं एक साधु हूँ। अपनी अच्छाई को छोड़े बिना ही, तुम्हारी चेष्टाओं पर रोक लगा सकता हूँ। आज से तुम किसी को हानि पहुँचाना चाहते हो तो भी उससे उनका भला ही होगा। अच्छाई करोगे तो उनकी हानि होगी। तुम बुरा करो या अच्छा, उससे तुम्हें पुण्य मिलेगा। क्योंकि बुराई करने पर भी भलाई ही होगी, क्योंकि तुम्हारा इरादा अच्छा है, इससे तुम्हें पुण्य मिलेगा और तुम्हें इस जन्म से मुक्ति मिलेगी। उस क्षण से लोगों को तुम्हारी बाधाओं से मुक्ति मिलेगी। मैं कभी भी झूठ नहीं बोलता इसलिए मेरी ये बातें फलीभूत होकर रहेंगी। अब तुम ही निर्णय कर लो कि तुम्हें अच्छा करना है या बुरा'', साधु यों कहकर वहाँ से चला गया।

दोनों भूतों ने एक-दूसरे को देखा। जब वे जीवित थे, तब वे पति-पत्नी थे। प्रमोद और सरला का मन ईर्ष्या और द्वेष से भरा हुआ होता था। इसका कारण उनके पड़ोसियें की व्यवहार शैली थी। इस वजह से वे किसी को भी हरा-भरा देख नहीं पाते थे। सास और बहू के बीच में, दोस्तों के बीच में झगड़े पैदा किया करते थे और यह देखते हुए उन्हें अपार हर्ष होता था। उनके जीवन की इच्छाएँ अधूरी ही रह गयीं, कम उम्र में ही वे अकस्मात् मर गये और भूत बन गये। मरने के बाद अपने दुष्ट स्वभाव के कारण उनके बुरे काम, बुरी चेष्टाएँ और बढ़ गयीं। दूसरों को सताने पर ही उन्हें आनंद मिलता था।

भूत साधु की बातों की परवाह किये बिना बरगद के पेड़ पर बैठ गये और किसी आदमी के आगमन की प्रतीक्षा करने लगे।

दूसरे दिन शाम को एक किसान दंपति उस मार्ग से गुज़रते हुए थकावट दूर करने बरगद के पेड़ के नीचे बैठ गये। उनकी इकलौती बेटी की शादी पक्की हो गयी थी। वर के माता-पिता ने शर्त रखी कि शादी के पहले ही उन्हें एक हज़ार अशर्फियाँ देनी होंगी। चूँकि वर देखने में सुंदर था और बड़े घर का था, इसलिए इतनी बड़ी रक़म

देने की स्थिति में न होते हुए भी, इस बार की भी फसल बेचकर उसे देने के लिए वे वर के घर जा रहे थे। अपने साथ वे जो रोटियाँ ले आये थे, वे खाने लगे। उस समय धन से भरी थैली बग़ल में रख ली। उन्होंने देखा कि वह थैली अचानक हवा में उड़ने लगी।

वे रोते हुए चिल्ला रहे थे, फिर भी इसकी परवाह किये बिना धन की थैली को लेकर भूत थोड़ी दूर गये और थैली खोलकर पास ही के तालाब में एक-एक अशर्फी फेंकने लगे। किसान दंपति को रोते हुए देखकर भूत हँसने लगे और खुशी के मारे कूदने लगे।

प्राणों से भी अधिक मूल्यवान उस रक़म को पानी में डालते हुए देखकर उनसे रहा नहीं गया। वे तालाब में उतरे और अशर्फ़ियों को गहरे पानी में खोजने लगे। बहुत खोजने के बाद एक अशर्फी उनके हाथ लगी। पर, बाद उन्हें उस गहरे तालाब में एक बड़ी गठरी मिली, जिसमें दस हज़ार अशर्फ़ियाँ थीं।

लंबे अर्से से सिपाही जिस चोर का पीछा कर रहे थे, उसने डरकर उस गठरी को तालाब में डाल दिया था। सांप के डसने से वह चोर मर गया और अशर्फियों की गठरी पानी में ही रह गयी।

किसान दंपति को लगा कि मानों भगवान ने ही उन्हें यह धन दिया। वे बेहद खुश होते हुए वहाँ से चले गये।

यह दृश्य देखकर भूत दुखी हो गये और ज़ोर-ज़ोर से रोने लगे। वे कहने लगे, ''दाढ़ीवाले साधु

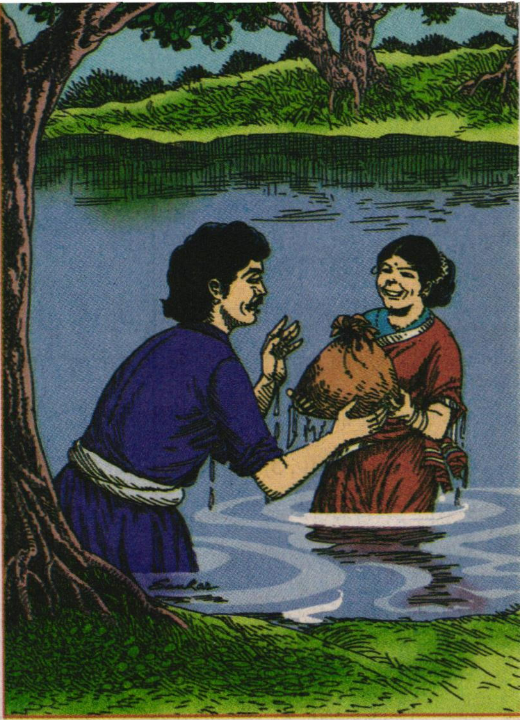

ने हम पर जीत पा ली। भूतनी सरला ने दृढ़ स्वर में कहा, ''मेरे द्वारा किसी भी स्थिति में आगे से एक की भी भलाई होनी नहीं चाहिये।''

''तो क्या विपरीत फलों के लिए अच्छे काम करें?'' उसने पति से पूछा।

''अच्छा काम करें? जब हमने मनुष्य जीवन में ही अच्छे काम नहीं किये, तब भला भूत बनकर अच्छे काम कैसे कर सकते हैं।'' प्रमोद ने पूछा।

परंतु भूतनी सरला ने साधु की बातों का प्रभाव देखने के लिए एक और बार एक नया प्रयोग करना चाहा।

उन्होंने देखा कि एक बैलगाड़ी उन्हीं की तरफ़ बढ़ी चला आ रही है। उस समय उस गाड़ी में एक गर्भिणी स्त्री थी। उसे लेकर कुछ पुरुष और स्त्रियाँ प्रसव के लिए शहर ले जा रहे थे।

सांस खींचने के लिए भी छटपटाती उस स्त्री को देखते हुए लगता था कि उसका जीवित रहना संभव नहीं है। गाड़ी में बैठे लोग गाड़ीवाले से तेज दौड़ाने के लिए कह रहे थे।

जैसे ही गाड़ी पास पहुँची, भूतनी सरला विकृत चेष्टाएँ करती हुई गाड़ी के सामने जाकर खड़ी हो गयी। भूतनी को देखते ही बैल डर गये और दोनों अपनी-अपनी तरफ़ खींचते हुए दौड़ने लगे। इससे बैल गाड़ी उलट गयी। सबने समझा कि खतरे में पड़ गये हैं। पर, ऐसा कुछ नहीं हुआ। विचित्र बात तो यह है कि वे सब बच गये और किसी को भी कोई चोट नहीं पहुँची।

गर्भिणी स्त्री दूर जा गिरी और वहीं उसने बच्चे को जन्म दिया। माँ और बच्चा बिलकुल ही सकुशल थे।

अचानक गाड़ी के सामने आनेवाली भूतनी को सबने कृतज्ञता जतायी, उसकी तारीफ़ की। उन लोगों की बातों ने उसे प्रसन्न किया। दो दिनों के बाद ऐसी और दो घटनाएँ घटीं। इससे भूतनी सरला जान गयी कि दूसरों को पीड़ा पहुँचाने के बदले उन्हें सुखी रखने में ही मन को सच्चा आनंद मिलता है।

उसने अपने पति भूत से कहा, ''जब तक ज़िन्दा था, तब तक मैंने तुम्हारी किसी बात का विरोध नहीं किया। उल्टे तुम्हारी बात मानकर मैंने कितने ही लोगों को तरह-तरह से सताया। मरने के बाद भी भूत बन जाने के बाद तुमने जो भी कहा, किया। अब तुम मेरी बात सुनो। दूसरों की जब भलाई होती है, उससे संतुष्ट रहना सीखो। अपने स्वानुभव के आधार पर यह बता रही हूँ। यह मेरे और तुम्हारे लिए ही नहीं, सब के लिए इसमें अच्छाई है।'' कहती हुई सरला ग़ायब हो गयी।

अब प्रमोद को मालूम हो गया कि हम चाहें बुराई करें, दूसरों की अगर इससे भलाई हो तो इससे मुक्ति होगी! साधु की बातें सच निकलीं। वह समझ गया कि यह जानने के कारण ही भूतनी सरला को इस जन्म से मुक्ति मिल गयी। वह भी अकेला न रह सकने के कारण रोता-बिलखता हुआ कहीं चला गया।

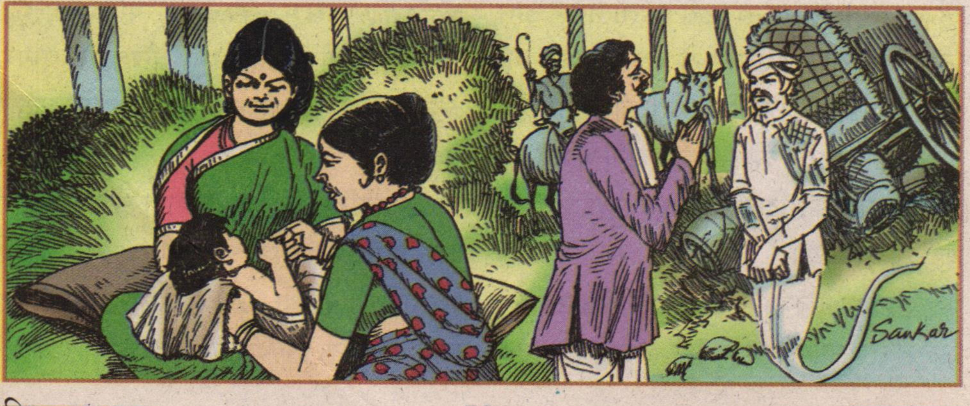

चन्दामामा प्रश्नोत्तरी-८

(१६ वर्ष से कम आयु के बच्चों के लिए)

Co-sponsored by
Infosys FOUNDATION, Bangalore

जो सही उत्तर देंगे, उनमें से एक को २५० रुपये दिये जायेंगे।*

इस महीने का विषय है- भारत की कला तथा वास्तुकला।

**यदि सर्वशुद्ध प्रविष्टि एक से अधिक हों तो सफल प्रतियोगियों में से प्रत्येक को रु.५० की राशि मिलेगी।*

तुम्हें क्या करना चाहिये: १. एक कागज पर उत्तरों को लिखो; २. अपना नाम, आयु तथा पिन कोड के साथ घर का पूरा पता लिखो; ३. लिफाफे पर लिखो '**चन्दामामा प्रश्नोत्तरी-८**'; ४. अपनी प्रविष्टि समय पर पोस्ट कर दो जो हमें ३० सितम्बर २००८ से पहले अवश्य मिल जाये। उत्तर नवम्बर २००८ के अंक में प्रकाशित होंगे।

१. पहाड़ी चित्रकला शैली का विकास कहाँ हुआ?
२. वह दक्षिण भारतीय कलाकार कौन था जिनकी पौराणिक विषयों पर चित्रकलाएँ बहुत लोकप्रिय हुईं।
३. रवीन्द्रनाथ टैगोर तथा अमृता शेरगिल में क्या समानता है?
४. नेशनल गैलरी ऑफ मॉडर्न आर्ट कहाँ स्थित है? इसकी स्थापना कब हुई?
५. प्रसिद्ध ''त्रिमूर्ति'' मूर्तिकला कहाँ है?
६. किस राजवंश ने महाबलिपुरम में तटीय मन्दिरों का निर्माण किया?
७. आधुनिक नगर चण्डीगढ़ की रूपरेखा किसने बनाई?
८. प्रसिद्ध बुलन्द दरवाजा कहाँ है? इसका निर्माण किसने किया?

बच्चे अख़बार की सुर्खियों में

एक और भारतीय सफलता

इस वर्ष का राष्ट्रीय भौगोलिक बी अवार्ड एक ११ वर्षीय बालक अक्षय राजगोपाल को मिला है जो अमरीका में नेब्रास्का स्थित एक पब्लिक स्कूल में छठी कक्षा का छात्र है। पुरस्कार के लिए प्रश्न था, ''कोचा बम्बा कहाँ है?'' और बंगलोर के भारतीय माता-पिता के बेटे अक्षय ने उत्तर दिया, ''बोलिविया।'' उसे पुरस्कार में २५,००० अमरीकी डॉलर दिये गये। यह प्रतियोगिता वाशिंगटन में २१ मई को आयोजित की गई थी। यह नेशनल ज्योगरफिक बी में उसका प्रथम प्रयास था। अक्षय की स्मरण शक्ति बचपन से ही असाधारण थी और भूगोल में उसकी रुचि अधिक होने के कारण पाँच साल की उम्र में ही वह स्मृति से विश्व के १९० देशों की राजधानी के नाम गिना सकता था। तब उसका परिवार मलयेशिया में था।

कोलम्बो से चैम्पियन बन कर लौटा

तमिलनाडु के दूरस्थतम हिस्से में स्थित बदलूर पंचायत के एक ११ वीं वर्षीय आनन्द ने श्रीलंका की राजधानी कोलम्बो में आयोजित अन्तर्राष्ट्रीय सिप (SIP) ऐबकस, ब्रेनजिम, मेंटल ऐण्ड अरिथमेटिक प्रतियोगिता में भाग लिया और प्रतियोगिता के ७ वें लेवल में उसे चैम्पियन घोषित किया गया। नेयवेली स्थित जवाहर मैट्रिकुलेशन हायर सेकेण्डरी स्कूल में ७ वीं कक्षा में पढ़नेवाले इस छात्र ने धनी परिवारों के और शहरी पृष्ठभूमि के बच्चों के साथ बुद्धि और बुद्धिमानी में बराबरी की।

चन्दामामा प्रश्नोत्तरी-६ (जूलाई २००८)

हमारे हिन्दी संस्करण के पाठकों की कोई प्रविष्टि सर्वशुद्ध नहीं पाई गई। इसलिए कोई पुरस्कार नहीं दिया जा रहा है। पाठकों के हित में प्रश्नोत्तरी के उत्तर पृष्ठ ४७ में दिये जाते हैं। चन्दामामा की सभी प्रश्नोत्तरी प्रतियोगिताओं में भाग लेते रहिये।

राजकुमार आर्य
खोये द्वीप की तलाश में

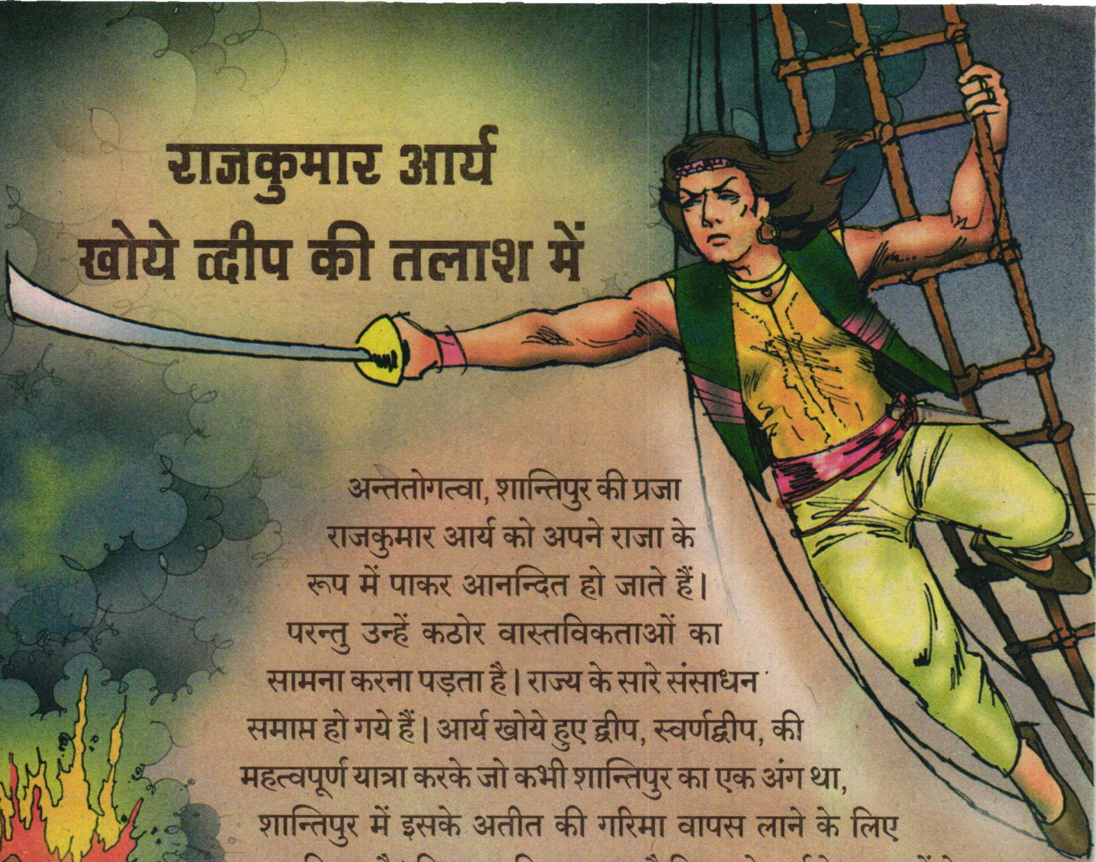

अन्ततोगत्वा, शान्तिपुर की प्रजा राजकुमार आर्य को अपने राजा के रूप में पाकर आनन्दित हो जाते हैं। परन्तु उन्हें कठोर वास्तविकताओं का सामना करना पड़ता है। राज्य के सारे संसाधन समाप्त हो गये हैं। आर्य खोये हुए द्वीप, स्वर्णद्वीप, की महत्वपूर्ण यात्रा करके जो कभी शान्तिपुर का एक अंग था, शान्तिपुर में इसके अतीत की गरिमा वापस लाने के लिए कटिबद्ध है। विश्वास किया जाता है कि इसके पूर्व के शासकों ने इस द्वीप को कोषागार के रूप में प्रयुक्त किया था और राज्य की निधि किसी सुरक्षित स्थान में छिपा कर रख दी थी। आर्य प्रजा के कल्याण के लिए उस निधि को वापस लाने का संकल्प लेता है। अपनी रोमांचक यात्रा के दौरान वह न केवल कुछ प्रकृति के खतरों का, बल्कि क्रूर आदमियों और दैत्यों का सामना करता है।

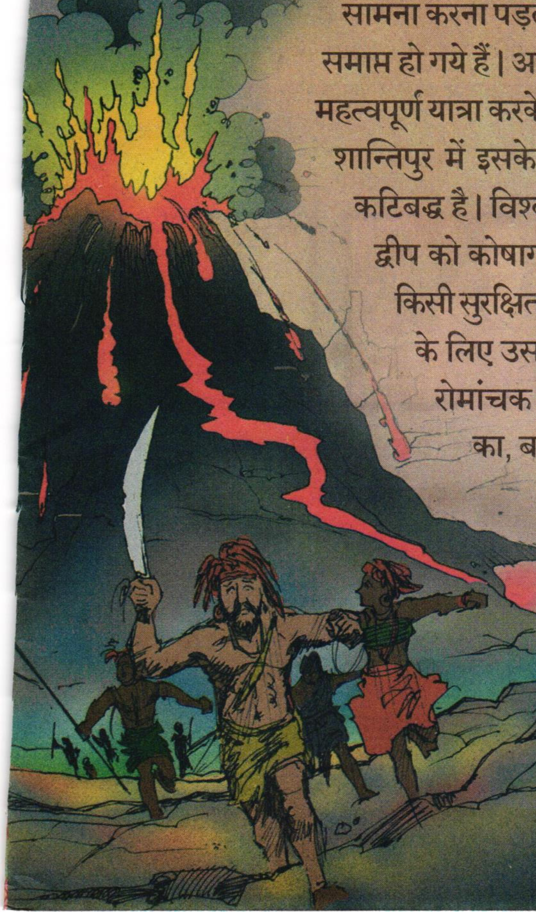

कॉमिक्स रूप में ''आर्य की उत्तेजक उत्तरकथा'' अक्तूबर अंक से आरम्भ हो रही है।

चित्र कैप्शन प्रतियोगिता

क्या तुम कुछ शब्दों में ऐसा चित्र परिचय बना सकते हो, जो एक दूसरे से संबंधित चित्रों के अनुकूल हो?

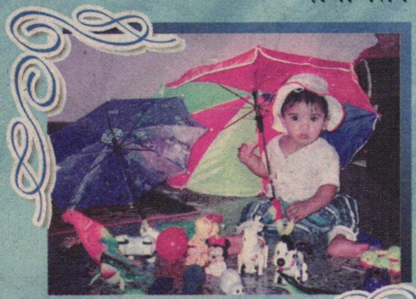

B. HARSHAVARDHANA

B. HARSHAVARDHANA

चित्र परिचय प्रतियोगिता, चन्दामामा,
जे वि एल प्लाज़ा, छठी मंजिल, नं. ६२६(पु.नं.५०१), अण्णा सालई, तेनाम्पेट, चेन्नई - ६०० ०१८.
जो हमारे पास इस माह की २० तारीख तक पहुँच जाए । सर्वश्रेष्ठ चित्र परिचय पर १००/- रुपये का पुरस्कार दिया जाएगा, जिसका प्रकाशन अगले अंक के बाद के अंक में किया जाएगा ।

बधाइयाँ

मुकेश जैन
१९, अबुल फजल रोड
बंगाली मार्केट
नई दिल्ली - ११० ००१

विजयी प्रविष्टि

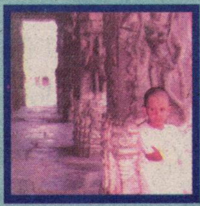

पर्यटन ही मेरा जीवन।
मुझको प्यारा मेरा वतन॥

अपने भारत को जानो प्रश्नोत्तरी के उत्तर:

१. सूर्य, २. संदीपनी मुनि, ३. शिव, ४. अहल्या, द्रौपदी, सीता, तारा, मन्धोदरी. ५. पतंजलि, ६. अश्विनी कुमार, ७. शंख, सुदर्शन चक्र, गदा, पद्म, ८. सूर्य.

Printed and Published by B. Viswanatha Reddi at B.N.K. Press Pvt. Ltd., Chennai - 26 on behalf of Chandamama India Limited, JVL Plaza, 6th Floor, 626 (Old 501), Anna Salai, Teynampet, Chennai - 600 018. **Editor : B. Viswanatha Reddi (Viswam)**

चन्दामामा कैप्शन प्रतियोगिता (८ से १६ वर्ष के बच्चों के लिए)

पुरस्कार : दशावतार की डीव्हीडीज़

१. आपके मनपसन्द पत्रिका चन्दमामा पर एक श्लोक लिखिए (दस शब्दों से ज्यादा नहीं)

२. विष्णु के नौ अवतारों ने जन्म लेकर असुरों का विनाश किया है। अब तक दसवा (कलकी) अवतार का जन्म होना बाकी है। आप के अनुसार ''कलकी अवतार दिखने में कैसा होगा और उसकी शक्तियाँ क्या होंगी?'' (जवाब चालीस शब्दों से ज़्यादा नहीं)

श्लोक ____________________

कलकी ____________________

नाम ____________ उम्र ________ लिंग ________

पता ____________________

फोन नं ____________ इमेल ____________

Cut & Post you entries to : ***CHANDAMAMA CAPTION CONTEST***

CHANDAMAMA INDIA LTD., JVL Plaza, Block-A, 6th Floor, 626, Anna Salai, Teynampet, CHENNAI-600018

*शर्ते लागू
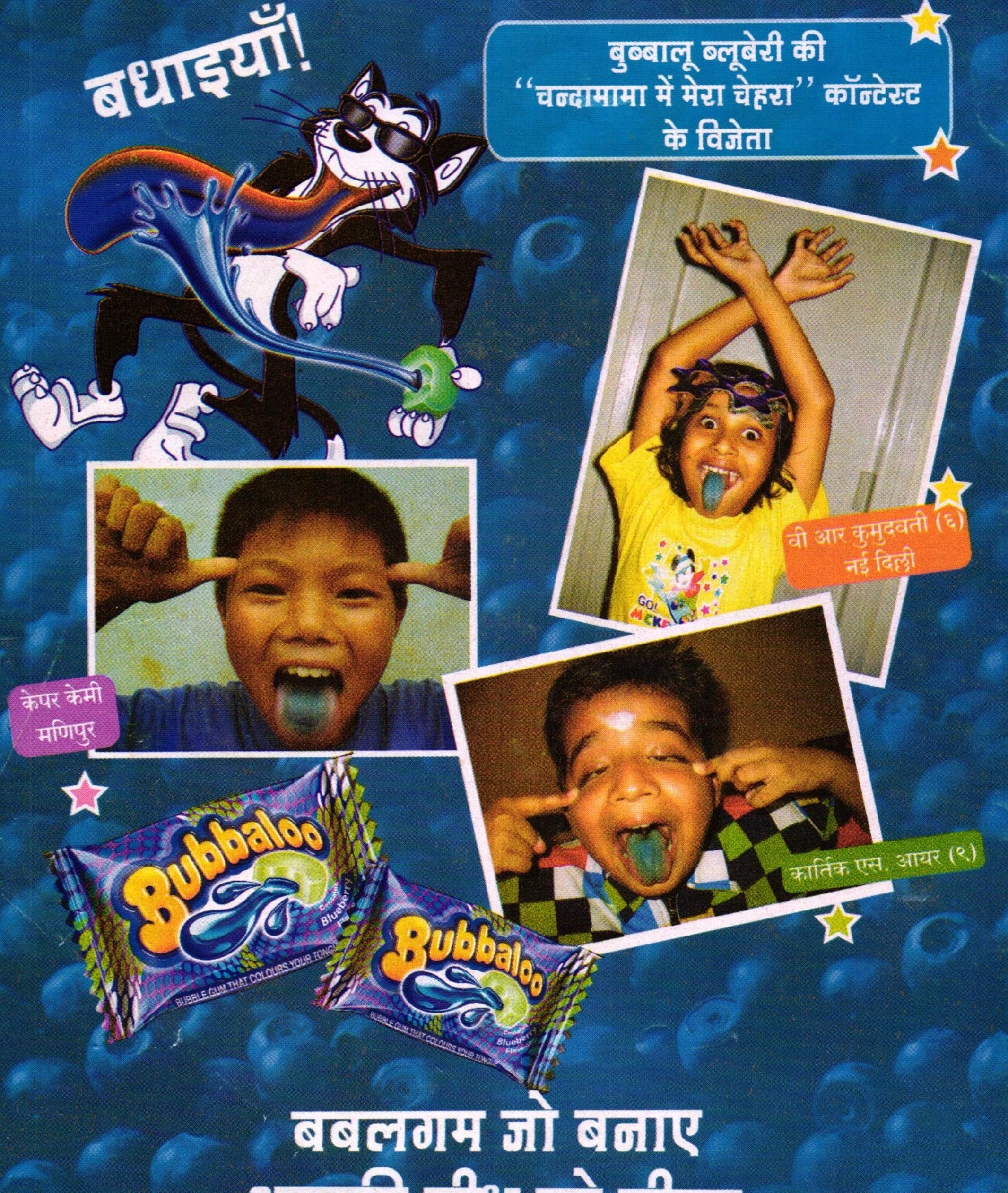
CHANDAMAMA (Hindi) September 2008 Registrar of Newspapers of India No. 1087/57. Regd No. TN/CC(S)Dn/163/06-08
Licensed to post WPP - Inland No.TN/CC(S)Dn/92/06-08, Foreign No. 93/06-08